

“The Study of Special Facilities (Incentive) and
Educational Development of Tribal Students and
Attitude of Society towards them”

“जनजाति के छात्रों को दी जाने वाली अतिरिक्त सुविधाएँ (उत्प्रेरक)
और छात्रों का शैक्षिक उन्नयन तथा समाज की इनके प्रति अभिवृत्ति”

1988-89



PROJECT INCHARGE

Dr. Ashwani Kumar Gaur

(R. L. S.),

Ph. D. in Education.

Govt. Kinwar Pada Senior Higher-
Secondary School, Udaipur (Raj.)

National Council of Educational Research & Training
(Department of Policy Research Planning and Programming)
ERIC SECTT.

अनुक्रमिका

=====

- 1१ आग्रह
- 2१ विषय वस्तु
- 3१ संदर्भ ग्रन्थ सूची
- 4१ पारिभाष्य

विषय वस्तु सूची :

=====

समस्या आकल्प :

पृष्ठ 1 से 2१ तक

परिच्छेद प्रथम :

=====

प्रस्तावना, समस्या कथन, समस्या के उद्देश्य, सरकारी सुविधाओं की वर्तमान स्थिति, समस्या का औचित्य, पारिभाषिक शब्दावली, सम्बन्धित साहित्य, विधि, यन्त्र निर्माण प्रक्रिया, न्यादर्श, दत्त संकलन, दत्त विश्लेषण, सांख्यिकीय उपयोग, सारणी-यन, रिपोर्टिंग एवं पारिभाष्य सूची ।

द्वितीय परिच्छेद :

=====

9९ पृ 73

जनजाति वर्ग का शैक्षिक विकास एवं विशेष सुविधाएं

=====

प्रस्तावना, राजस्थान में उम्र के अनुसार अध्ययनरत छात्र/छात्राएँ, जनजाति के छात्र-छात्राएँ, कक्षा स्तरानुसार छात्र/छात्राएँ, विद्यालयों की वर्तमान स्थिति, अध्यापकों की वर्तमान स्थिति, चयनित विद्यालयों में बजट एवं नामांकन की स्थिति, सुविधाओं के प्रकार, छात्रवृत्ति, छात्रावास एवं आश्रम विद्यालय, समाज कल्याण विभाग द्वारा शिक्षा पर व्यय राशि की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण, छात्रवृत्ति सम्बन्धी प्रमुख निष्कर्ष, आश्रम विद्यालयों की स्थिति, आश्रम विद्यालयों में प्रतिछात्र सामग्री क्रय करने की स्थिति, आश्रम विद्यालयों की स्थिति का विश्लेषण, प्रमुख निष्कर्ष एवं सुझाव ।

तृतीय परिच्छेद :
 =====

पृष्ठ सं. 157

अध्यापकों की अभिवृत्ति का विश्लेषण

विद्यालय की दूरी एवं शिक्षा विकास, विद्यालय प्रवेश नियम, आवासीय सुविधाएँ तथा प्रशासकों, अध्यापकों का व्यवहार एवं शिक्षा, जनजाति वर्ग के जन्मजात गुण एवं प्राप्त अवसर सुविधाएँ और शैक्षिक विकास, पारिवारिक कारण एवं शैक्षिक विकास, सरकारी सुविधाएँ एवं शैक्षिक विकास, शिक्षा सामग्री

एवं शिक्षा विकास, प्रशासनिक व्यवस्थाएं एवं शिक्षा विकास ।

चतुर्थ परिच्छेद :

अभिभावकों की अभिवृत्ति का विश्लेषण 167 पृष्ठ से 169 तक

प्रस्तावना, विद्यालय की गाँव से दूरी एवं शिक्षा विकास, प्रवेश नियम एवं शिक्षा विकास, आवासीय विद्यालयों की सुविधाएं तथा प्रशासकों एवं अध्यापकों का व्यवहार और शिक्षा विकास, जन-जाति वर्ग के जन्मजात गुण एवं प्राप्त अवसर, सुविधाएं और प्रशिक्षण तथा शैक्षिक विकास, पारिवारिक कारक एवं शैक्षिक विकास, सरकारी सुविधाएं एवं शैक्षिक विकास, शिक्षा सामग्री एवं शिक्षा विकास, प्रशासनिक व्यवस्थाएं और शिक्षा विकास

पंचम परिच्छेद :

दत्तों का सांख्यिकीय विश्लेषण 168 पृष्ठ से 172 तक

दत्तों पर सह-सम्बन्ध का विश्लेषण, दत्तों पर काइस्-क्वायर परीक्षण, दत्तों पर मूल्य परीक्षण, निष्कर्ष

सारांश, निष्कर्ष, एवं सुझाव

प्रस्तावना, जनजाति की वर्तमान स्थिति, सुविधाओं की स्थिति, आश्रम विद्यालय की स्थिति, समस्या क्षेत्र, समस्या का औचित्य, पारिभाषिक शब्द, विधि, यंत्र एवं उपकरण निर्माण न्यादर्श, यंत्र निर्माण की प्रक्रिया, मापनी की विश्वसनीयता तथा वैधता, दत्तों का संकलन, प्रमुख सांख्यिकी का वर्णन, प्रमुख निष्कर्ष सुझाव, भविष्य में शोध सम्बन्धी सुझाव

संदर्भ ग्रन्थ सूची	-	पृष्ठ	से	तक
परिशिष्ट	-	पृष्ठ	से	तक

तालिका सूची :	पृष्ठ संख्या
---------------	--------------

- 1- गाँवों से विद्यालय दूरी एवं शिक्षा विकास
- 2- विद्यालयों का गाँवों के निकटतम होना एवं शैक्षिक विकास
- 3- प्रवेश सम्बन्धी न्यूनतम शैक्षिक योग्यता एवं शैक्षिक विकास
- 4- प्रवेश नियम एवं शैक्षिक विकास

- 5- नियमों की जानकारी का अभाव एवं शिक्षा विकास
- 6- नियमों की जानकारी एवं शिक्षा विकास
- 7- विद्यालयों में पर्याप्त सामान आदि और शिक्षा विकास
- 8- अध्यापकों, प्रधानाध्यापकों का व्यवहार एवं शिक्षा विकास
- 9- बालकों की समस्याएँ और शिक्षा विकास
- 10- सुरक्षा अभाव एवं शिक्षा विकास
- 11- भोजन की मात्रा, किस्म एवं शिक्षा विकास
- 12- जन्मजात गुण एवं शिक्षा विकास
- 13- अवसर, सुविधाएँ और शिक्षा विकास
- 14- प्रशिक्षण एवं शिक्षा विकास
- 15- परिवार की आर्थिक स्थिति एवं शिक्षा विकास
- 16- पारिवारिक समस्याएँ और शिक्षा विकास
- 17- माता-पिता को शिक्षा के महत्व की जानकारी देना
तथा शिक्षा विकास
- 18- साधन जुटाना और शिक्षा का विकास
- 19- घर की सुविधाएँ और शिक्षा विकास
- 20- सुविधाओं का अभाव एवं शिक्षा विकास
- 21- शैक्षिक मार्ग-दर्शन एवं शिक्षा विकास

- 22- सरकारी सुविधाओं की जानकारी एवं शिक्षा विकास
- 23- छात्रवृत्ति राशि एवं शिक्षा विकास
- 24- भोजन व्यवस्था एवं शिक्षा विकास
- 25- छात्रावासों में प्रकाश, पानी, कमरों की व्यवस्था एवं शिक्षा विकास
- 26- खेलकूद व्यवस्था एवं शिक्षा विकास
- 27- विद्यालय समय एवं शिक्षा विकास
- 28- अवकाश समय एवं शिक्षा विकास
- 29- स्वरोजगार शिक्षा एवं शिक्षा विकास
- 30- सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं शिक्षा विकास
- 31- चिकित्सा सुविधाएँ और शिक्षा विकास
- 32- शिक्षण सामग्री का अभाव एवं शिक्षा विकास
- 33- योग्य एवं अनुभवी अध्यापक एवं शिक्षा विकास
- 34- अतिरिक्त शिक्षण भत्ता एवं शिक्षा विकास
- 35- सरकारी निरीक्षण एवं शिक्षा विकास
- 36- स्थानीय निरीक्षण एवं शिक्षा विकास

फोटोग्राफ

- 1- बारापाल विद्यालय
- 2- नृसिंहादेव विद्यालय एवं छात्रावास
- 3- खेरवाड़ा कन्या छात्रावास
- 4- सराड़ा विद्यालय
- 5- सराड़ा आश्रम विद्यालय एवं छात्रावास
- 6- चावण्ड छात्रावास
- 7- मालो का चोरा आश्रम विद्यालय एवं छात्रावास
- 8- मालो काचोरा में छात्र गतिविधियाँ

रेखाचित्र

पृष्ठ से तक

- 1- विद्यालय दूरी, प्रवेश नियम, आवासीय सुविधाएँ और प्रशासनिक व्यवहार और शिक्षा विकास
- 2- जनजाति के जन्मजात गुण, अवसर, सुविधाएँ एवं शिक्षा विकास
- 3- पारिवारिक कारण एवं शिक्षा विकास
- 4- सरकारी सुविधाएँ एवं शिक्षा विकास

5- शिक्षा सामग्री एवं शिक्षा विकास

6- प्रशासनिक व्यवस्थाएँ एवं शिक्षा विकास

मानचित्र पृष्ठ से तक
=====

1- राजस्थान में जनजाति क्षेत्र

2- उदयपुर जिले में चयनीय विद्यालयों की स्थिति

3- दत्त संकलन रूट चार्ट

परिशिष्ट सूची : पृष्ठ से तक

1- अध्यापकों की अभिवृत्ति मापनी

2- अभिभावकों की अभिवृत्ति मापनी

3- अभिभावकों, प्रशासकों, अध्यापकों की साक्षात्कार अनुसूची

4- छात्र साक्षात्कार अनुसूची

5- विद्यालय बजट प्रपत्र

6- विशेष-ज्ञों की सूची

7- प्राप्तान्क एवं प्रतिशत तहसीलवार उदयपुर जिले के

8- रूट चार्ट

9- छात्र साक्षात्कार से प्राप्त उत्तरों के कुछ नमूने

-: प्रथम अध्याय :- =====

प्रस्तावना : ==--==--==

अ ॥ जनजाति की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि एवं वर्तमान स्थिति

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :

भारत वर्ष कई जातियों का प्रदेश है । विदेशी इसे जातियों का अजायबघर कहते हैं । वैसे वेदों में तो वर्णों के आधार पर चार प्रकार की जातियाँ; ब्राम्हण, वैश्य, क्षत्री और शुद्र ही मानी गई हैं किन्तु कालान्तर में इन जातियों में इतना परिवर्तन आया कि इनका मूल स्वल्प ही समाप्त हो गया । ऐतिहासिक काल में भारत वर्ष में जिन जातियों द्वारा आक्रमण हुए उन्होंने अपना प्रभाव यहाँ की मूल जातियों पर छोड़ा । इतिहास गवाह हैं कि आर्य भी भारत के बाहर से आये थे । यहाँ के मूल निवासी शायद द्रविड़ और आदि-वासी ही थे जिन्हें आक्रमण द्वारा भारत के भीतरी भागों में छेदेड़ा जाता रहा है । ये जातियाँ अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए प्रवृत्ति के साथ समझौता करके रहने लगी ।

राजस्थान में भी ऐसी जातियाँ आज भी विद्यमान हैं । इन्हें भील, मीणा, डामोर, सहिरया, गरासीया, कन्नर, साँसी, आदि जनजातियों के नाम से जाना जाता है ।

राजस्थान के इतिहास में इन जातियों को देश भक्ति एवं आजादी पर मर मिटने वाली जाति के नाम से जाना जा सकता है । मेवाड़ का इतिहास गवाह है कि राणा प्रताप ने देश के लिए बलिदान और त्याग अकेले नहीं किया । प्रताप के साथ कन्धा से कन्धा मिलाकर "भीलुराजा" जनजातियों का सरदार अपनी सम्पूर्ण जाति के साथ था । भीलुराजा ने न केवल युद्ध में अपितु शान्ति काल में भी देश में शान्ति एवं व्यवस्था बनाए रखने में राणा का साथ हमेशा दिया है । मेवाड़ का राज चिन्ह जिसमें राणा के साथ-साथ भीलुराजा का भी चित्र है भीलुराजा एवं उसकी जाति को मेवाड़ में दिये गए सम्मान को आज भी प्रदर्शित कर रहा है ।

यही नहीं "मेवाड़ भीलकोर" के नाम से गठित सेना में हमेशा शासन में शान्ति बनाए रखने में सहयोग दिया है । यही मेवाड़ भीलकोर ब्रिटिश काल में भी और स्वतंत्रता के बाद भी अपनी पुरानी यादों को तरों ताजा करती है ।

राजस्थान की यह आदीवासी जाति स्वभाव से बहुत ही भोली एवं महनतकश हैं । गरीबी, अनपढ़ एवं प्रकृति से झुझते रहने से इनमें ओर भी साहस बढ़ा है । यह जाति एक और तो प्रकृति से झुझती रही वही समाज ने भी कालान्तर में इनका शोषण शुरू कर दिया । गरीबी के कारण इन्हें निम्न-स्तर का समझा जाने लगा । इनका प्रमुख धन्धा खेती करना एवं वनों के उत्पादन पर आधारित रहना है किन्तु यहाँ पर भी समाज के बिचौलियों ने इनका शोषण किया है ।

इतना होते हुए भी ये जातियाँ मस्त प्रकृति की हैं । चाहे दूखः हो या गम, सभी को भुलाकर अलंगोचे एवं बाँसूरी की धून पर इनके पैर ऐसे थिरकते हैं कि मानो इनको कोई कमी नहीं है । रीति-रिवाज और साँस्कृति के मानों ये धनी हैं । आज भी "गवरी नृत्य" मेवाड़ के शहरों में उसी प्रकार लोक-प्रिय है जैसा पूर्व में था । यही नहीं पश्चिमी साँस्कृतिक केन्द्र एवं भारतीय लोक कला मण्डल में विदेशी पर्यटकों को इस नृत्य को दिखाया जाता है तो वे मंत्र मुग्ध हो जाते हैं । भारत उत्सव में भी इस नृत्य ने काफी धूम मचाई थी ।

इतना सब होने पर भी ऐसा लगता है कि इनकी संस्कृति लुप्त होती जा रही है । इनके साथ शोषण के कारण इनका विकास नहीं हो रहा है । इस बात को स्वतंत्र भारत के संविधान में भी स्वीकार किया गया है । यही कारण है कि इन जातियों को संविधान द्वारा कुछ विशेष सुविधाएँ प्रदान की गईं ताकि ये मूल धारा के साथ-मिल कर अपना विकास कर सकें ।

ब॥ जनजाति की वर्तमान स्थिति -

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के राजनैतिक दायें में परिवर्तन हुआ । संचार के साधनों में प्रगति हुई । इन साधनों के परिणाम स्वल्प देश की मुख्य धारा से ये जातियाँ अधिक जुड़ने लगी । संविधान में इनके आर्थिक, राजनैतिक शोषण के विरुद्ध विशेष कानून बनाकर व्यवस्था की गई ।

संविधान की धारा 46 में लिखा है कि "The State shall promote with special care the educational and economic interests of the weaker sections of the

people, and in particular of the scheduled castes and scheduled tribes and shall protect them against injustice and all forms of exploitation."

इससे स्पष्ट होता है कि भारत सरकार इनके विकास के लिए कितना चिन्तित है। संविधान की धारा 275 में यह स्पष्ट लिखा है कि इन जातियों के लिए केन्द्र सरकार विशेष अनुदान के रूप में राज्य सरकारों को अनुदान राशि प्रदान करेगी।

विशेष सुविधाओं को राजस्थान सरकार की दृष्टि से देखें तो राजस्थान में भी कई प्रकार की सुविधाएँ इन्हें राज्य सरकार ने प्रदान कर रखी हैं। मसलन पढ़ने के लिए छात्रवृत्ति निःशुल्क छात्रावास, निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें एवं पाठ्य सामग्री का वितरण, आश्रम विद्यालय, निःशुल्क शिक्षा व्यवस्था, विशेष कौशलिंग व्यवस्था, प्रवेश हेतु सीटों का आरक्षण आदि।

स॥ सुविधाओं की स्थिति -

अ॥ छात्रवृत्ति सुविधा :

छात्रवृत्ति की राशि समय-समय पर कक्षा स्तर के अनुरूप परिवर्तित होती रही हैं । मसलन 1984 जुलाई के पूर्व यह कक्षा 6 से 8 तक प्रति छात्र 12.50 रु. तथा प्रति छात्रा 15.00 रु. प्रतिमाह थी । इसी प्रकार कक्षा 9 से 11 तक यह राशि छात्र/छात्रा दोनों को प्रतिमाह 25.00 रु. मिलती थी । इसके बाद राज्य सरकार के आदेश क्रमांक एफ-9४4४४४४४ एस.सी.एच/एस. डब्ल्यू.डी./84-85, 68071, जयपुर दिनांक 30-1-85 के अनुसार जुलाई 1984 से कक्षा 6 से 8 तक प्रति छात्रा 15.00 एवं प्रति छात्रा 20.00 रु. प्रतिमाह हो गई । यह बढ़ोतरी 20 प्रतिशत रही । इसी प्रकार कक्षा 9 से 11 तक के छात्रों को प्रतिमाह 30.00 रु. तथा छात्राओं को प्रतिमाह 40.00 रु. कर दिया गया । यह बढ़ोतरी 60 प्रतिशत रही । इससे यह स्पष्ट होता है कि छात्रों की तुलना में छात्राओं की छात्रवृत्ति की राशि में तीन गुणा अधिक वृद्धि हुई । इससे यह स्पष्ट होता है कि

सरकार छात्राओं को विशेष सुविधाएँ प्रदान करके इनकी शिक्षा को अधिक बढ़ाना चाहती हैं ।

राजस्थान सरकार द्वारा उदयपुर जिले में नगरपालिका क्षेत्र में 7 स्थानों पर अनुसूचित जाति-जनजाति, परिगणित जाति, हरिजन कल्याण के लिए छात्रावास सुविधाएँ उपलब्ध हैं । इसी प्रकार उदयपुर में अनुदानित छात्रावासों में, महिला मण्डल, उदयपुर महिला आश्रम उदयपुर, वनवासी छात्रावास, आदिवासी छात्रावास सलुम्बर, कानोड़ छात्रावास, महिला पीठ कन्या छात्रावास प्रमुख छात्रावास हैं । इनमें कुल स्थान 355 छात्रों के लिए स्वीकृत हैं ।

उदयपुर जिले के पंचायत समिति को हस्तान्तरित छात्रा-वासों में रेलमगरा, कोटड़ा, बालिका कोटड़ा बालक, आड़ोल, भवराना, फलासिया, खेरवाड़ा बालिका छात्रावासों की सुविधा उपलब्ध है ।

उदयपुर जिले में राजस्थान सरकार द्वारा अनुदानित छात्रा-वासों में आदिवासी छात्रावास, चावण्ड, आदिवासी छात्रावास कुम्भलगढ़, बापा रावल भील आश्रम बभदेव, टी.डी. आदि-वासी, छात्रावास, वनवासी कल्याण छात्रावास खेरवाड़ा, अ.ज.

जाति छात्रावास भीम §प्र.अ. द्वारा संचालित§, जवाहर छात्रावास, खेरवाड़ा §प्र.अ. द्वारा संचालित§ छात्रावासों की सुविधाएँ उपलब्ध हैं । इन सभी छात्रावासों में कुल 235 सीटें उपलब्ध हैं । इस प्रकार उदयपुर जिले में सम्पूर्ण छात्रावासों के लिए कुल स्थान 4160 छात्रों तथा 475 छात्राओं के लिए हैं जो 4635 महायोग होता है ।

इन सभी छात्रावासों में भोजन, नास्ता, पानी, बिजली, गणवेश तथा वस्त्र, साबून, तेल, स्टेशनरी की सुविधा, बाल कटिंग की सुविधा, रसोईघर, अंश कालीन अध्यापक, व्यवस्थापक तथा चिकित्सक की व्यवस्था भी है ।

उपरोक्त छात्रावासों के अलावा उदयपुर जिले में छात्रवृत्ति के आधार पर भी छात्रावासों की सुविधा राज्य सरकार द्वारा की गई है । ये छात्रावास भीण्डर तथा सवीना-खेड़ा में हैं जिनमें कुल 50 छात्रों के प्रवेश हेतु स्थान उपलब्ध हैं ।

राजस्थान सरकार ने उदयपुर जिले में तृतीय श्रेणी के छात्रावासों की सुविधाएँ भी उपलब्ध कराई हैं । इन्हें 1982 से नियमित किया गया है । इनमें डेरा छात्रावास, गोराणा, नावला, ओड़ा, जैड़, आड़ीवली, खईरा, घाटिया, बावल-वाड़ा, कल्याणपुर, टोकर, आड़ोल, बारापाल, मावली, पारसोला, कालीभीत, कुराबड़ और परसाद प्रमुख हैं । इन सभी में प्रत्येक में 25 छात्रों के लिए स्थान हैं । इस प्रकार इनमें कुल 370 छात्रों के लिए स्थान उपलब्ध हैं ।

आश्रम विद्यालय :
=====

राज्य सरकार ने उपरोक्त सुविधाओं के अलावा ग्रामीण क्षेत्रों के दूर-दराज इलाकों के शैक्षिक विकास हेतु इन क्षेत्रों में आश्रम विद्यालयों की एक योजना संवाहित की है । इस योजना के अन्तर्गत जनजाति बाहुल्य क्षेत्र के दूर दाराज इलाकों में ऐसे आवासीय विद्यालय खोले गए जिनमें निःशुल्क पढ़ाई के साथ-साथ रहने, खाने, पुस्तकों एवं स्टेशनरी, चिकित्सा, मनोरंजन, खेल आदि की सभी सुविधाएँ उपलब्ध कराई हैं । उदयपुर जिले में इन विद्यालयों की कुल संख्या 17 है।

इनमें होस्टल वार्डन, रसोईया आदि उपलब्ध होते हैं ।

उपरोक्त सभी सुविधाओं की वर्तमान विरधीत का विमले-
क्षण अधस्तात् दो में किया गया है ।

इनहीं बातों की विस्तृत जानकारी प्राप्त करने हेतु अनु-
संधानकर्ता ने निम्न समस्या का गहन विमला है :-

समस्या कथन :-

समस्या के उद्देश्य :

1. उदयपुर जिले के जनजाति वर्ग के शैक्षिक उत्थयन हेतु राज्य सरकार द्वारा दी जाने वाली विशेष सुविधाओं की वर्त-
मान विरधीत को ज्ञात करना ।
2. जनजाति वर्ग के शैक्षिक उत्थयन हेतु अध्यापकों और अधि-
वापकों की अभिवृत्ति ज्ञात करना ।
3. जनजाति वर्ग के शैक्षिक उत्थयन हेतु अवस्थापूर्ण सुलाघ प्रस्तुत
करना ।

समस्या के क्षेत्र :

प्रस्तुत अध्ययन के निम्न क्षेत्र निर्धारित विधे गए हैं -

1. राजनीतिक क्षेत्र : प्रस्तुत अध्ययन का क्षेत्र उदयपुर ही है ।

ब॥ प्रस्तुत समस्या के अध्ययन बिन्दु निम्न निर्धारित किये गए हैं -

1॥ जनजाति वर्ग के शैक्षिक उन्नयन हेतु राजस्थान सरकार द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं की वर्तमान स्थिति ज्ञात करना ।

2॥ उदयपुर जिले के जनजाति वर्ग की शैक्षिक स्थिति को ज्ञात करना ।

3॥ जनजाति वर्ग के शैक्षिक उन्नयन के क्रम में अध्यापकों एवं समाज की अभिवृत्ति ज्ञात करना ।

स॥ उदयपुर जिले के उच्च प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों एवं सम्बन्धित अभिभावकों का चयन करना ।

समस्या का औचित्य :

प्रस्तुत अनुसंधान कई दृष्टि से महत्वपूर्ण है । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के सामाजिक ढाँचे में परिवर्तन हेतु भारतीय संविधान में कई व्यवस्थाएँ की गईं । इन व्यवस्थाओं के बावजूद जनजाति वर्ग का शैक्षिक उन्नयन जो होना चाहिये था,

वह अभी तक नहीं हो पाया है । अतः यह ज्ञात करना बहुत जरूरी हो जाता है कि कमजोरी किस स्थान पर है ? क्या इन सुविधाओं का उपयोग पूर्णरूप से नहीं हो रहा है ? या इनका दुरुपयोग हो रहा है या ये उस वर्ग तक पहुँच ही नहीं पा रही हैं ? कहीं न कहीं कुछ गड़बड़ी अवश्य है अन्यथा इनका शैक्षिक उन्नयन पूरा होना चाहिए था । इस शोध के माध्यम से उपरोक्त तथ्यों को ज्ञात करने के लक्ष्य निर्धारित किये गए ताकि कमियों को दूर किया जा सके ।

जब इन कमियों, अव्यवस्थाओं अथवा व्यवस्थाओं की वस्तुस्थिति ज्ञात हो जावेगी तो निःसन्देह आयोजना करने में सरकार को और शिक्षाविदों को बहुत आसानी रहेगी । आयोजना द्वारा इन कमियों को पूरा करने का प्रयत्न किया जावेगा ।

जनजाति वर्ग एक ऐसे समाज में रह रहा है जिसने कई वर्षों तक इस वर्ग का शोषण किया है किन्तु अब वह इसका विकास चाहता है । सरकार ने भी इस वर्ग के शैक्षिक उत्थान हेतु विशेष प्रोत्साहन प्रदान किये हैं । इन प्रोत्साहनों का सही

उपयोग कहाँ तक हो रहा है और क्या इनके द्वारा जनजाति वर्ग का शैक्षिक उन्नयन पूरा हो सकेगा ? या इनको बढ़ाने की आवश्यकता है ? या इनमें कटोती होनी चाहिए ? ये सवाल कुछ ऐसे हैं जिनको इस शोध द्वारा ज्ञात किया जा रहा है ? इनके ज्ञात होने से न केवल समाज के दृष्टिकोण में परिवर्तन होगा अपितु सरकार को भी आयोजना निर्माण में बहुत सहायता मिलेगी । अतः कई दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं ।

पारिभाषिक शब्द :

अ० अनुसूचित जाति/जनजाति :

भारतीय संविधान में दशार्ई गई विभिन्न जातियाँ जो आर्थिक, सामाजिक एवं अन्य दृष्टिकोण से पिछड़ी हैं । उदयपुर जिले में प्रमुखतया भील, मीणा, गरासीया, डामोर, सहीरया, काथोड़िया, कंजर, साँसी आदि हैं ।

ब० विशेष सुविधाएँ :

राजस्थान सरकार द्वारा जनजाति वर्ग के शैक्षिक उन्नयन हेतु दी जाने वाली अतिरिक्त सुविधाएँ यथा; छात्रवृत्ति, छात्रावास

आश्रम विद्यालय, कौशिंग कक्षाएँ आदि ।

स॥ विद्यालय :

वे सभी विद्यालय जिनको राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त हैं तथा जो कक्षा 6 से 10 तक अध्यापन करवाते हैं ।

द॥ आश्रम विद्यालय :

राजस्थान सरकार ने जनजाति बाहुल्य क्षेत्रों में शिक्षा के प्रतिशत को बढ़ाने हेतु ग्रामीण अंचलों में ऐसे विद्यालय खोले हैं जिनमें रहने की, खाने की, कपड़ों की, पुस्तक एवं स्टेशनरी की निःशुल्क व्यवस्था होती है । इन विद्यालयों का सम्पूर्ण खर्चा सरकार वहन करती है ।

य॥ छात्रावास :

अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र/छात्राओं के निःशुल्क रहने की व्यवस्था ।

र॥ अभिभूति :

अभिभूति एक तत्परता की अवस्था है जो किसी वस्तु, विचार या व्यक्ति के प्रति एक निश्चित तरीके से काम करने को प्रेरित करती है। वस्तु अथवा विचार विशेष के पक्ष या विपक्ष में आग्रह पूर्व प्रतिक्रिया व्यक्त करना ही अभिभूति कहलाती है। करलींगर के अनुसार अभिभूति किसी संज्ञानात्मक वस्तु के बारे में विचार, भावानुभव, प्रत्यक्षीकरण और व्यवहार करने की एक पूर्ण स्वीकृति है। अलपोर्ट ने इसे अपने शब्दों में स्पष्ट करते हुए कहा है कि "Attitude is a mental state of readiness organised through experience, exerting a directive or dynamic influence upon the individual's response of all objective and situations with which it is related." ¹.

1. G.W. Allport; "Attitude Immacretic Son Co. (Ed.)
hand Book of social psychology
warees for clurk wis press p.p.120.

विधि :

==

प्रस्तुत अनुसंधान में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है । शैक्षिक समस्याओं के प्रति सर्वेक्षण विधि व्यापक रूप से प्रयुक्त की जाने वाली विधियों में से एक है । यह सर्वेक्षण विधि वर्तमान स्थिति का वर्णन करती है । इसके साथ ही यह किसी व्यक्ति विशेष से सम्बन्धित न होकर समूह से सम्बन्धित होती है । इसमें अधिक से अधिक लोगों को सम्मिलित किया जा सकता है जैसा कि गुड एवं स्केट ने कहा है कि "The Survey is an important type of research it must not be confused with the more clerical retire of gathering and tabulating figures. It involves clearly defined problems and difinties oblectines. 1.

प्रस्तुत अनुसंधान में शैक्षिक उन्नयन हेतु जनजाति वर्ग को दी जाने वाली सुविधाओं पर अध्यापकों एवं अभिभावकों

1. Good Bar & Scates; Methodology of educational research(New York,1954) p.p. 587.

की अभिवृत्ति ज्ञात करनी थी । अतः यह विधि ही उपयुक्त जान पड़ती हैं ।

इस प्रकार न्यादर्श का चयन पंचायत समिति को आधार मानते हुए किया गया । पंचायत समितियों के चयन में भी इस बात का ध्यान रखा गया कि वे पंचायत समितियाँ ही चयन की गई जिनकी जनसंख्या जनछाति बाहुल्य हैं ।

यंत्र एवं उपकरण :

प्रस्तुत अध्ययन में अभिवृत्ति मापनी का एवं साक्षात्कार अनुसूची का निर्माण स्वयं शोधकर्ता ने किया है । इसके अलावा रिकार्ड अवलोकन एवं शोधकर्ताओं द्वारा स्वयं जाकर वस्तु स्थिति का निरीक्षण अवलोकन सूची के अनुसार किया गया । यंत्रों का निर्माण शोध की निम्न प्रक्रिया द्वारा किया गया -

यंत्र निर्माण के पद :-

1. प्रथम पद - प्राथमिक साक्षात्कार द्वारा अनुसूची का निर्माण -

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन को ध्यान में रखते हुए एक कच्ची विषय वस्तु सूची का निर्माण किया गया । इसके बाद शिक्षाविदों, क्षेत्र में कार्य करने वाले विशेषज्ञों, प्राध्यापकों से साक्षात्कार लिया गया । साक्षात्कार द्वारा जो अध्ययन बिन्दु उभरकर सामने आये, उन्हें विषय पर बनी कच्ची सूची में सम्मिलित किया गया । इस प्रकार एक विषय सूची का निर्माण किया गया ।

2१ द्वितीय पद - अध्ययन क्षेत्रों का निर्धारण

विषय सूची के आधार पर अध्ययन क्षेत्रों का निर्धारण किया गया । अभिवृत्ति मापनी में कुल 50 अध्ययन बिन्दुओं का निर्माण किया गया । ये सभी परिवार से, समाज से, सरकारी सुविधाओं पर, प्रशासनिक व्यवस्था पर, शिक्षा सामग्री आदि पर बनाए गए ।

न्यादर्श :
=====

प्रतिदर्श जितने सुदृढ़ होंगे अनुसंधान के परिणाम उतने ही विश्वसनीय एवं परिशुद्ध होंगे । प्रतिदर्श को तभी उपयुक्त

माना जाता है जब वह सम्पूर्ण समीष्ट का प्रतिनिधित्व करता हो । प्रस्तुत अनुसंधान में वर्गीकृत यात्राधित विधि का उपयोग किया है । इस विधि का उपयोग जब किया जाता है कि न्यादर्शों में विभिन्न वर्ग हों । प्रस्तुत अनुसंधान में न्यादर्श दो भागों में विभक्त हैं । एक अध्यापक तथा दूसरा अभिभावक वर्ग दोनों वर्ग में पुनः कई उपवर्ग पाये जाते हैं, यथा; वेतन शृंखला के आधार पर तृतीय वेतन शृंखला के, द्वितीय वेतन शृंखला के, प्रथम वेतन शृंखला के अध्यापक । इसी प्रकार छात्रावास संचालक, छात्रावास कर्मचारी आदि । समाज में भी कई प्रकार के वर्ग हैं यथा जनजाति वर्ग, सवर्ण, पिछड़ा वर्ग आदि । इस प्रकार दोनों न्यादर्शों के समूहों में कई उपवर्ग हैं । अतः इस विधि द्वारा इन उपवर्गों को समान प्रतिनिधित्व देते हुए न्यादर्श का चयन किया गया है । न्यादर्शों के चयन का आधार प्रचालित समिति के आधार पर अध्यापक/अध्यापिका तथा समाज में जनजाति वर्ग, सामान्य वर्ग एवं पिछड़ा वर्ग को बराबर-बराबर स्थान देना । कुल 210 अध्यापकों एवं 210 अभिभावकों का चयन नीचे तालिका में दर्शाया गया है -

-: तालिका :-

अध्यापकों का चयन :

क्र.सं.	तहसील	अध्यापक	अध्यापिका	अभिभावक
1-	गिरवा	30	30	30
2-	झाड़ोल	30	30	30
3-	सलुम्बर	30	30	30
4-	छेरवाड़ा	30	30	30
5-	कोटड़ा	30	30	30
6-	सराड़ा	30	30	30
7-	धरियावद	30	30	30
		105	105	210

3॥ तृतीय पद - अध्ययन बिन्दुओं में सुधार

अभिवृत्ति मापनी के 70 अध्ययन बिन्दुओं को 15 विषय विशेषज्ञों 10 शिक्षाविदों को दिया गया । विशेषज्ञों के चयन का आधार 10 वर्ष तक क्षेत्र में कार्य करना रखा गया । इस प्रकार

विशेषज्ञों से कहा गया कि जो कथन सही हो उसे सही § , / § का निशान लगावे तथा जो भ्रम हो उन्हें × का निशान लगावे इसके अलावा जिन कथनों की भाषा में सुधार की आवश्यकता हो उन्हें सही कर दें । विशेषज्ञों से प्राप्त सुझावों के आधार पर कथनों में आवश्यक परिवर्तन किया गया ।

4§ चतुर्थ पद - प्रमापनी के अंक निर्धारण करना

अभिवृत्ति मापनी को पाँच बिन्दु प्रमापनी के अनुसार बनाया गया है यथा; पूर्ण सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत तथा पूर्ण असहमत । इनके क्रमशः 5, 4, 3, 2, 1 अंक निर्धारित किये गए । इनके अंक निर्धारण में विशेषज्ञों की राय ली गई ।

5§ पंचम पद - अभिवृत्ति मापनी का पूर्व परीक्षण

इस हेतु 50 छात्रों पर अभिवृत्ति मापनी का पूर्व परीक्षण किया गया । प्राप्त दत्तों पर अर्द्धछेदन विधि द्वारा विश्वसनीयता ज्ञात की गई । विश्वसनीयता के आधार पर जिन अध्ययन बिन्दुओं का मूल्य .5 से उपर या .5 पाया गया उन्हें ही अभिवृत्ति मापनी में रखा गया । इस प्रकार 50 अध्ययन

बिन्दुओं से अन्त तक 36 अध्ययन बिन्दुओं को ही रखा गया ।

इस प्रकार अभिवृत्ति मापनी को अन्तिम स्वरूप दिया गया ।

अभिवृत्ति मापनी पर ϵ टेस्ट परीक्षण :
=====

अभिवृत्ति मापनी को ϵ टेस्ट सांख्यिकी लगाकर

निम्न सूत्र द्वारा परीक्षण किया गया -

$$\epsilon = \frac{(M_2' - M_2'')^2}{N_2' - N_2''}$$

1.

उक्त सूत्र से टी के मूल्य को सारणी मूल्य से ज्ञात किया गया । इस प्रकार अभिवृत्ति मापनी की विश्वसनीयता को प्रामाणित किया गया । ϵ मूल्य 0.6280 प्राप्त हुआ ।

78 अभिवृत्ति मापनी की वैधता ज्ञात करना :
=====

अभिवृत्ति मापनी की विषय वस्तु की वैधता एवं मापन वैधता को भी ज्ञात किया जो इस प्रकार है -

अ॥ विषय वस्तु की वैद्यता ज्ञात करना :

अभिवृत्ति मापनी जब तक सही नहीं मानी जा सकती जब तक उसकी विषय वस्तु सही नहीं हों । इस हेतु अनुसंधानकर्ता ने अभिवृत्ति मापनी के विषय वस्तु की प्रामाणिकता को भी ज्ञात किया है । इस संदर्भ में अनुसंधानकर्ता ने विषय से सम्बन्धित विशेषज्ञों की राय का सहारा लिया । प्रमापनी में विषय वस्तु विशेषज्ञों की राय, शिक्षाविदों की राय से ही चयन करना प्रमापनी की विषय वस्तु सम्बन्धी प्रामाणिकता है ।

ब॥ अभिवृत्ति मापनी की मापन सम्बन्धी वैद्यता :

अभिवृत्ति मापनी की मापन सम्बन्धी वैद्यता ज्ञात करने हेतु भी विशेषज्ञों की राय ली गई थी । विशेषज्ञों के आधार पर ही अंकों का निर्धारण किया गया । इसके अलावा अभिवृत्ति का पूर्व परीक्षण किया गया है ।

८॥ दत्त संकलन एवं विश्लेषण :

दत्त संकलन हेतु अनुसंधाता ने अनुसंधान सहायकों का सहयोग लिया है । इस कार्य हेतु जिला शिक्षा अधिकारी छात्र संस्थाएँ

उदयपुर का पूरा सहयोग प्राप्त हुआ । उदयपुर जिले में उपलब्ध शोधकर्ताओं को जिला शिक्षा अधिकारी ने एक आदेश प्रसारित कर दत्त संकलन हेतु लगाया । आदेश की प्रति परिशिष्ट 3 में संलग्न हैं । इस प्रकार सम्पूर्ण जिले में दत्त संकलन का कार्य बहुत ही जल्दी एवं प्रामाणिक रूप से पूर्ण हुआ ।

दत्त विश्लेषण हेतु अनुसंधानकर्ता ने एक अनुसंधाताओं का दल गठन किया । इस दल को जिला शिक्षा अधिकारी ने आदेशित किया ताकि यह कार्य समय पर हो सका ।

दोनों ही कार्यों में संलग्न अनुसंधाता जिला शिक्षा अनुसंधाता वाक्सीठ उदयपुर [डी.ई.आर.एफ] के सक्रीय सदस्य थे । इन्हें राजकीय नियमानुसार दैनिक भत्ता एवं यात्रा व्यय प्रोजेक्ट की स्वीकृति राशि में से दिया गया ।

दत्त विश्लेषण के समय छात्रावासों एवं विद्यालयों की वस्तुस्थिति को ज्ञात करने हेतु एक विडियो फिल्म का निर्माण किया गया है । इस विडियो फिल्म में अध्यापकों,

छात्रों एवं अभिभावकों के साक्षात्कारों, उनकी राय तथा प्रशासकों से साक्षात्कार को लिया गया है । रिपोर्ट बनाते समय इसे सभी सामग्री का उपयोग भी किया गया है ।

दत्त विश्लेषण में निम्न सांख्यिकी का उपयोग किया गया -

अ० प्रतिशत :

सामान्य विश्लेषण हेतु प्रतिशत का उपयोग किया गया । सूत्र इस प्रकार है -

$$\frac{\text{प्राप्तांक}}{\text{पूर्णांक}} \times \frac{100}{1} = \text{प्रतिशत}$$

ब० मध्यांक :

इसका उपयोग ~~रैक~~ निर्धारण में किया गया ।

स० सह-सम्बन्ध :

२ विधि द्वारा सह सम्बन्ध ज्ञात किया गया ।

सूत्र इस प्रकार हैं -

$$r = \frac{\epsilon dx dy - \epsilon dx x dy}{\sqrt{\epsilon dx^2 - (\epsilon dx)^2} \times \sqrt{\epsilon dy^2 - (\epsilon dy)^2}}$$

द॥ f परीक्षण :

$$\text{सूत्र - } f = \frac{(M_1 - M_2)^2}{\sqrt{N_1^2} \sqrt{N_2^2}}$$

य॥ χ^2 का परीक्षण :

परीकल्पना की साक्षरता हेतु χ^2 का उपयोग किया

गया । सूत्र इस प्रकार हैं -

$$\chi^2 = \sum \left[\frac{(f_o - f_e)^2}{f_e} \right]$$

८. रेखाचित्रों का प्रयोग :

अनुमान को सीधे एवं सही करने हेतु रेखाचित्रों का प्रयोग अधिक उपयोगी होता है । जैसे बच्चे को पता चलाने के लिये मानचित्र का प्रयोग करते हैं ।

९. सारणीकरण :

अनुमान में सारणीयों के प्रयोग हेतु प्रयोगों, तालिकाओं को सारणी का उपयोग होता है । सारणीयों को सुव्यवस्थित किया जाता है उन्हें सामान्यीकरण करते प्रयोगों में प्रयोग होता है । प्रत्येक प्रयोग तालिका को एक-एक सारणी में व्यवस्थित करते हैं ।

१०. विवरण :

दत्त विवरणों को प्रत्येक प्रयोग तालिकाओं में व्यवस्थित करने सारणीयों के आधार पर विवरण होता है । सारणीय विवरणों को बाद में उचित से वर्गीकृत होता है तालिका रेखाचित्रों को सारणीय विवरणों के साथ ही वर्गीकृत होता है ।

परिच्छेद द्वितीय

"विशेष सुविधाएँ और शैक्षिक विकास"

पुस्तावना :

राजस्थान सरकार ने राज्य में शिक्षा के विकास हेतु कई सुविधाएँ प्रदान कर रखी हैं। छात्रवृत्ति, छात्रावास की सुविधा एवं आश्रम विद्यालय के अलावा विशेष कौशिक व्यवस्था की सुविधाएँ इन विशेष सुविधाओं में विशेष उल्लेखनीय हैं। प्रस्तुत परिच्छेद में इन्हीं सुविधाओं का शिक्षा के विकास क्रम के संदर्भ में विश्लेषण किया गया है।

राजस्थान के प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा निदेशालय बीकानेर से प्राप्त दस्तकों के आधार पर राजस्थान में जनवरी, 1989 में कुल 619366 छात्र एवं छात्राएँ विभिन्न विद्यालयों में अध्ययनरत हैं। इन छात्र एवं छात्राओं में 4573330 छात्र एवं 1620336 छात्राएँ अध्ययनरत हैं। इनका अनुपात लगभग 2/3 छात्र एवं छात्राएँ होता है। इनका उम्र के अनुसार

वितरण नीचे तालिका में दर्शाया गया है

सारणी - 3:1

राजस्थान में उम्र के अनुसार अध्ययनरत छात्र एवं
छात्राओं का विवरण

जनवरी 1989 तक

क्र.सं.	उम्र छात्र/छात्राएं	छात्र	छात्राएं	कुल
1-	6 से 11 वर्ष	3095559	1270056	4365615
2-	11 से 14 वर्ष	969093	240907	1210000
3-	14 से 17 वर्ष	508678	109373	618051
योग		4573330	1620336	6193666

उक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 61 लाख के लगभग ही अध्ययनरत छात्र एवं छात्राएं पाई गईं। इन छात्र/छात्राओं में से अनुसूचित जाति के कुल 892638 छात्र/छात्राएं अध्ययनरत हैं जबकि अनुसूचित जनजाति के कुल 605670 छात्र/छात्राएं अध्ययनरत हैं। उद्घाटनों के देखने से यह स्पष्ट होता है कि 61 लाख में से केवल 6 लाख अनुसूचित जनजाति के छात्र/छात्राएं ही अध्ययनरत हैं जो

उपरोक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि राजस्थान में अध्ययनरत कुल छात्र/छात्राओं §6193666§ में से जनजाति के छात्र/छात्राओं §44255§ 7.14 प्रतिशत हैं। अध्ययनरत हैं। बाकि अनुसूचित जाति के §872638§ 14.4 प्रतिशत छात्र अध्ययनरत हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि अनुसूचित जाति के छात्र जनजाति की तुलना में अधिक अध्ययनरत पाए गए। इन छात्र/छात्राओं का कक्षावार विवरण नीचे की सारणी में दर्शाया गया है।

सारणी = 3:3
=====

राजस्थान में कक्षा स्तरानुसार अध्ययनरत छात्र/छात्राओं के अध्ययनरत की स्थिति

§ 1 जनवरी, 1989§

क्र.सं.	कक्षा स्तर	छात्र	छात्राएँ	कुल
1-	पूर्व प्राथमिक स्तर	4990	3390	8380
2-	प्राथमिक स्तर	2106623	822624	2929247
3-	उच्च प्राथमिक स्तर	1520446	528409	2048855
4-	माध्यमिक स्तर	444447	128375	575822
5-	हायर सैकण्ड्री स्तर	496824	137538	634362
योग-		4573330	1620336	6193666

उक्त सारणी से स्पष्ट होता है कि पूर्व प्राथमिक स्तर पर 59.6% छात्र एवं 40.4% छात्राएँ, प्राथमिक स्तर पर 71.9% छात्र एवं 28.1% छात्राएँ, उच्च प्राथमिक स्तर पर 74.3% छात्र एवं 25.7% छात्राएँ, माध्यमिक स्तर में 77.8% छात्र एवं 22.2% छात्राएँ तथा हायर सैकण्ड्री स्तर पर छात्र एवं 22.2% छात्राएँ अध्ययनरत हैं ।

इसी प्रकार उक्त सारणी से यह भी स्पष्ट होता है कुल अध्ययनरत जनसंख्या में सबसे अधिक प्राथमिक स्तर पर पाई गई तथा सबसे कम पूर्व प्राथमिक स्तर पर पाई गई । इसी प्रकार छात्रों की तुलना में छात्राएँ 1/3 ही अध्ययनरत पाई गई ।

राजस्थान में ये छात्र कुल 39964 विद्यालयों में अध्ययनरत हैं इन में से 36925 विद्यालय छात्रों के तथा 3039 विद्यालय छात्राओं के पास गए । विद्यालयों का विवरण नीचे सारणी में दर्शाया गया है ।

सारणी - 3:4
=====

राजस्थान में विद्यालयों की स्थिति

१ जनवरी, 1987

क्र.सं.	विद्यालय स्तर	छात्र विद्यालय	छात्रा विद्यालय	कुल
1-	पूर्व प्राथमिक विद्यालय	14	20	34
2-	प्राथमिक विद्यालय	26990	1517	28507
3-	उच्च प्राथमिक वि.	7326	1029	8355
4-	माध्यमिक विद्यालय	1842	329	2171
5-	हायर सैकण्ड्री वि.	753	144	897
योग :-		36925	3039	39964

उक्त तालिका देखने से ज्ञात होता है कि राजस्थान में कुल 39964 विद्यालयें पाएँ गए। इनमें से 34 पूर्व प्राथमिक के, 28507 प्राथमिक के, 8355 उच्च प्राथमिक के, 2171 माध्यमिक के तथा 897 उच्च माध्यमिक के पाएँ गए। छात्र एवं छात्रा विद्यालयों की स्थिति देखने से ज्ञात होता है कि पूर्व प्राथमिक में छात्रा विद्यालय छात्र की तुलना में अधिक पाएँ गए किन्तु अन्य

सभी प्रकार के विद्यालयों में छात्र विद्यालयों की संख्या ही अधिक पाई गई ।

राजस्थान में विद्यालयों के अनुपात में अध्यापकों की संख्या देखे तो सबसे कम 320 पूर्ण प्राथमिक विद्यालयों में तथा सबसे अधिक प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापक कार्यरत है । कुल 190714 अध्यापक हैं । जनवरी, 1989 में राजस्थान में विभिन्न विद्यालयों में कार्यरत है । इनमें उच्च प्राथमिक विद्यालय 70093 माध्यमिक में 28394 तथा उच्च माध्यमिक में 26944 अध्यापक कार्यरत है ।

राजस्थान के इन विद्यालयों में पूर्व प्राथमिक में 276 महिला अध्यापिकाएँ तथा 44 पुरुष अध्यापक कार्यरत है । इसी प्रकार प्राथमिक में 49055 पुरुष एवं 15908 महिला अध्यापक, उच्च प्राथमिक में 53400 पुरुष एवं 16693 महिला, माध्यमिक में 22672 पुरुष एवं 5719 महिला और हायर सैकण्ड्री में 20910 पुरुष एवं 6034 महिला अध्यापिकाएँ कार्यरत है । इस प्रकार कुल 146084 पुरुष अध्यापक एवं 44630 महिला अध्यापिकाएँ

॥ 1 जनवरी, 1989॥ तक कार्यरत पाई गई इन्हे सारणी में
निचे दर्शाया गया है -

सारणी - 3:5
=====

राजस्थान में पुरुष एवं महिला अध्यापकों की स्थिति
विद्यालयों के अनुसार ॥ 1 जनवरी, 1989॥

क्र.सं.	विद्यालय स्तर	पुरुष अध्यापक	महिला अध्यापिका	कुल
1-	पूर्व प्राथमिक	44	276	320
2-	प्राथमिक	49055	15908	64963
3-	उच्च प्राथमिक	53400	16693	70093
4-	माध्यमिक वि.	22675	5719	28394
5-	उच्च मा. वि.	20910	6034	26944
योग		146084	44630	190714

चयनीत विद्यालयों में बजट की स्वीकृति राशि मय छात्रवृत्ति राशि

प्रस्तुत अध्ययन में से कतिपय विद्यालयों को चयन करके
उनमें राज्य सरकार द्वारा स्वीकृत राशि को नीचे विभिन्न
सारणीयों में दर्शाया गया है ।

इन सारणियों से यह स्पष्ट होता है कि छात्रवृत्ति की राशि विद्यालय में अन्य मदों की राशि की तुलना में बहुत कम है यही नहीं छात्र/छात्राओं के नामांकन से इस राशि की तुलना करें तो ज्ञात होता है कि यह राशि प्रति छात्र बहुत ही कम आती है । इस राशि का प्रतिशत अनुसूचित जनजाति के छात्रों की तुलना में तो और भी कम पाया गया । नीचे इन्हें विस्तार से दर्शाया गया है -

अ १ बजट राशि राजकिय उच्च माध्यमिक विद्यालय धरियावद -

स्वीकृत राशि व व्यय सत्र - 1987-88

संवतन	यात्रा	विविक्तता	कार्यालय व्यय	मशीनरी व साज	सामग्री प्रदाय	खेल प्रयोग	पुस्तक	अन्य
स्वीकृत	493000	5900	8900	3800	100	150	700	300
राशि								
व्यय मार्च	548246	5833	8902	3271	1000	150	700	296
88 तक								
शेष	+ 55246	67	+ 2	- 529	-	-	- 4	8
								+ 4

सत्र - 1988-89

स्वीकृत	547000	9400	3600	3800	1000	200	700	400	1200	300
राशि										
व्यय नव.	390819	7219	3688	1078	432	-	699	219	890	197
88 तक										
शेष	156181	2181	+ 88	2722	568	200	1	181	310	103

छात्रवृत्ति विवरण सत्र 1987-88

अनुसूचित जाति	विशेष	अनुसूचित जनजाति	विशेष
स्वीकृत राशि	5450	4290	
व्यय	5450	4290	
शेष	-	-	

छात्रवृत्ति विवरण सत्र 1988-89

स्वीकृत राशि	5510	4370	
व्यय	5510	4370	
शेष	-	-	

राजकीय माध्यमिक विद्यालय
मुगाणा, उदयपुर
=====

छात्रवृत्ति 1987-88

अनुसूचित जनजाति नवीनीकरण 87-88

कक्षानुसार छात्र संख्या मार्च-अप्रैल, 88 दो माह की राशि

6 से 8 + 1 छात्र 30/-

9 से 11 1 छात्र 60/-

नवीन

6 से 8 जूलाई से फरवरी आठ माह की राशि
1988

9 से 11 5 छात्र 300/-

अनुसूचित जाति 88-89 नवीन

6 से 8 1 छात्र जूलाई से फरवरी
1989 120/- आठ माह की राशि

9 से 11 2 छात्र 480/-

नवीनीकरण

6 से 8 1 छात्र जूलाई से फरवरी
120/-

9 से 11 1 छात्र 240/-

राजकीय माध्यमिक विद्यालय
मुंगाना, उदयपुर
=====

अनुसूचित जाति		नवीनीकरण		
क्र.सं.	कक्षा	छात्र	राशि	
1-	6 से 8	5	150/-	मार्च-अप्रैल, 88
2-	9 से 11	3	180/-	---" ---</td

नवीन छात्र

1-	6 से 8	1	30/-	मार्च-अप्रैल, 88
2-	9 से 11	1	60/-	---" ---</td

अनुसूचित जनजाति	88-89	नवीनीकरण		
॥ 6 से 8	1	120/-	जुलाईसे फरवरी, 89	
9 से 11	2	480/-		

राजकीय माध्यमिक विद्यालय, सुंगाना जि. उदयपुर

वर्ष ८८-८९

सवेतन	यात्रा	चिकित्सा	कार्यालय	पुस्तकालय	खेल	मशीनरी	प्रयोग	अन्य
स्वीकृत	2900	1800	2800	2000	600	2000	300	110
बजट								
व्यय	205464	2880	1798	-	282	245	-	296
शेष माह १०१३६	20	2	2800	1718	355	200	4	110
नवम्बर								
८८ तक								

* अतिरिक्त बजट

राजकीय माध्यमिक विद्यालय, मुंगाणा जि. उदयपुर

स्वीकृत बजट एवं व्यय विवरण 1987-88

सेवेतन	यात्रा	चिकित्सा कार्यालय	पुस्तकालय	खेल	मशीनरी एवं प्रयोग शाला	अन्य प्रभार
स्वीकृत	265000	8072	6400	6760	2000	300
बजट						
व्यय	308513	6434.80	6143.90	5468.75	1744.65	-
87-88						
शेष	43513	1637.40	256.10	1291.25	255.35	380.00
अधिक खर्च						

माह दिसम्बर में अतिरिक्त बजट प्राप्त होने से तथा दिसम्बर के बाद बजट प्राप्त होने से नवीन क्रय पर प्रति बन्ध होने के कारण कार्यालय व्यय की राशि बचत रही । कोष कार्यालय से बीलों के आब्जेक्शन में आ जाने से टी.ए. व चिकित्सा, पुस्तकालय व प्रयोग शाला की राशि बचत रही ।

राजकीय माध्यमिक विद्यालय, भबराणा

बजट एवं व्यय विवरण

सत्र- 1987-88

समेतन	चिकित्सा यात्रा	कार्यालय	अन्य प्रभार	मशीनरी	पुस्तकालय	छेलकूद	योग		
स्वीकृत	416000	7500	4100	4100	1500	700	435200		
व्यय	225257	7482	4099	4093	300	999	1497	673	244400
शेष	190743	18	1	7	-	1	3	27	190800

सत्र- 1988-89

समेतन	चिकित्सा यात्रा	कार्यालय	अन्य प्रभार	मशीनरी	पुस्तकालय	छेलकूद	प्रयोगशाला	योग		
स्वीकृत	484000	3300	8300	4100	300	1000	1200	700	400	503300
व्यय	309214	327	6939	1927	-	-	720	-	-	319127
शेष	174786	2973	1361	2173	300	1000	480	700	400	184173

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, भुवनेश्वर

छात्रवृत्ति विवरण सत्र 1987-88

	अनुसूचित जाति	विशेष	अनुसूचित जनजाति	विशेष
स्वीकृत	3160		240	
व्यय	2800		240	
शेष	360		-	

छात्रवृत्ति विवरण सत्र 1988-89

	अनुसूचित जाति	विशेष	अनुसूचित जनजाति	विशेष
स्वीकृत	2360		360	
व्यय	-		"	
शेष	2360		360	

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सल्लुम्बर जि. उदयपुर

व्यय विवरण माह नवम्बर, ८८ तक

संवतन	यात्रा चिकित्सा कार्यालय मशीनरी सामग्री अन्य प्रभार पुस्तकालय प्रयोग खेल और सा. प्रदाय	शाला
स्वीकृत	1086000 7100 8000 4700 100 200 300 1200 2000 700	
	+9000	
व्यय नव	780916 3214 14967 1520 - - - 1198 36 -	
88 तक		
क्षेप	305084 3886 2033 3180 1000 2002 300 002 1964 700	

व्यय विवरण माह मार्च, ८८

स्वीकृत	941030 12900 15700 4780 8800 150 300 1500 3000 700	
व्यय	1044417 12910 16699 4580 862 150 296 1431 2997 696	
क्षेप	- 103417 -10 1 20 138 - 4 69 3 2	

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, सलुम्बर

छात्रवृत्ति विवरण सत्र - 1987-88

अनुसूचित जाति		अनुसूचित जनजाति		
छात्र संख्या	राशि	विशेष	छात्र संख्या	राशि
स्वीकृत	54	-	43	10320
व्यय	-	-	35	8400
शेष	-	-	8	1920

छात्रवृत्ति विवरण सत्र - 1988-89

स्वीकृत	32	7680	-	25	6000
व्यय					
शेष					

राजकीय मध्यमिक विद्यालय, बारापल
त. गिरवा जिला- उदयपुर
=====

- 1- विद्यालय में छात्र संख्या पक्षा 6-24, 7-7, 8-13, कुल=71
9-21, 10-6,
- 2- विद्यालय में अध्यापकों की संख्या 12 मध्य प्रधानाध्यापक
- 3- विद्यालय में आय-व्यय राजकीय बजट 88-89

नवम्बर 88 तक
=====

1-	वेतन	3,38,000/-	2,45,628.00
2-	टी.ए.	29,000/-	1,609.00
3-	चिकित्सा	5,400/-	4,300.00
4-	कार्यालय	2,300/-	327.00
5-	मशीनरी	600/-	-
	साज सामान		
6-	अन्य प्रभार	200/-	-
7-	खेल	500/-	-
8-	पुस्तके	1,000/-	85.00
9-	प्रयोग शाला	400/-	-
		3,51,300/-	2,51,949.00
		=====	=====

छात्र कोष आय-व्यय
=====

1-	1587.50	1050.00
2-	192.00 विज्ञान	143.00
3-	540.00 एस.यू.पी. डब्ल्यू	241.00
	2319.50	1434.00
	=====	=====

राजकीय माध्यमिक विद्यालय

टीही उदयपुर

1- विद्यालय में कुल छात्र संख्या :-

कक्षा -	6	7	8	9	10	11	12	योग
छात्र -	68	53	33	54	20	17	1	246

2- विद्यालय में अध्यापकों की संख्या - कुल स्वीकृत पद

प्र.अ.	व्याख्याता	व.अ.	अध्यापक	पुस्तकालय अध्यक्ष
1	11	5	3	1

शा.	शिक्षक	उद्योग शिक्षक	व.लि.	क.लि.	प्रयोग-सहायक
1	1	1	1	1	2
प्रयोग-सैवक	च.क.	कुल योग			
2	4	33			

3- विद्यालय में आय-व्यय राजकीय बजट में 1988-89 में

नवम्बर, 88 तक

मद	स्वीकृत राशि	व्यय
वेतन	6,79,600/-	3,78,262/-
यात्रा	5,600/-	3,942/-
चिकित्सा	3,700/-	3,700/-
कार्यालय	4,500/-	2,155/-
पुस्तकालय	2,800/-	682/-
खेलकूद	1,200/-	296/-
प्रयोगशाला	4,000/-	-
साज सामान	2,000/-	-
अन्य	110/-	-
	7,03,510/-	3,89,037/-
	=====	=====

छात्र कोष मद - आय - 8248.00 व्यय - 2237.00

राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यालय, धरियावद

स्वीकृत बजट एवं व्यय सत्र - 1987-88

क्र.सं.	नाम मद	स्वीकृत बजट	अर्थ	शेष	विशेष
1-	संवैतन	241000/-	193279/-	47721.00	
2-	यात्रा	2600/- 1000/-	3546/-	54.00	
3-	विविक्तता	1800/-	1796/-	4.00	
4-	कार्यालय व्यय	3500/-	3500/-	-	
5-	मशीनरी साज सामान	2800/-	2793/-	7.00	
6-	अन्य प्रभार	600/-	600/-	-	
7-	प्रयोगशाला	400/-	400/-	-	
8-	पुस्तकालय	2000/-	200/-	-	
9-	खेलकूद	1000/-	1000/-	-	

राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यालय, धरियावद

स्वीकृत बजट एवं व्यय सत्र 1988-89

क्र.सं.	नाम मद	स्वीकृत बजट	खर्च बजट	शेष राशि
1-	सवेतन	222000/-	132254/-	89746/-
2-	यात्रा	2600/-	1036/-	1564/-
3-	शिक्षिका	1950/-	1153/-	797/-
4-	कार्यालय	3800/-	1065/-	2735/-
5-	मशीनरी साज सामान	2800/-	541/-	2259/-
6-	अन्य प्रभार	600/-	-	600/-
7-	प्रयोगशाला	400/-	-	400/-
8-	पुस्तकालय	2000/-	1567/-	1473/-
9-	खेलकूद	1000/-	-	1000/-

राजकीय बालिका माध्यमिक विद्यालय, धीरयावद

1- विद्यालय भवन :- कमरे - कक्षा कक्षा 4

कार्यालय 2

स्टोर 1 = 7

शौचालय 1

मूत्रालय 1

पानी टंकी 1

खेल का मैदान नहीं है । सभी पक्के ।

2- छात्रा संख्या -

क्र.सं.	कक्षा	कुल छात्राएँ	अनु.जाति	अनु.ज.जाति
1-	6	63	2	8
2-	7	65	1	3
3-	8	55	4	2
4-	9	61	2	12
5-	10	18	-	3
		262	9	28

3- अध्यापिका/कर्मचारी विवरण -
=====

क्र.सं.	पद	स्वीकृत पद	उपलब्ध	रिक्त	वेतन शृंखला
1-	प्रधानाध्यापक	1	1	-	1550-3250
2-	वरिष्ठ अध्यापक	6	6	-	1140-2250
3-	अध्यापक	4	4	-	880-1680
4-	वरिष्ठ लिपिक	1	1	-	1120-2050
5-	कनिष्ठ लिपिक	1	-	1	880-1680
6-	पुस्तकालयध्यक्ष	1	-	1	880-1680
7-	प्र.शा.स.	1	-	1	880-1680
8-	प्रशा.से.	1	1	-	710-910
9-	च.पृ.क.	3	2	1	700-865

विशेष सुविधाओं के प्रकार :

राज्य सरकार द्वारा उदयपुर जिले में जनजाति वर्ग के शैक्षिक उन्नयन हेतु निम्न विशेष सुविधाएँ प्रदान की जा रही हैं

- 1॥ छात्रवृत्ति राशि
- 2॥ छात्रावास राजकीय एवं अनुदानित
- 3॥ आश्रम विद्यालय
- 4॥ कौचिंग व्यवस्था

प्रत्येक व्यवस्था की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण किया गया है । इस राशि को समाज कल्याण विभाग तथा शिक्षा विभाग द्वारा खर्च किया जा रहा है । इनका विश्लेषण इस प्रकार है -

समाज कल्याण विभाग, उदयपुर द्वारा शिक्षा पर व्यय राशि का विश्लेषण :

उदयपुर जिले में छात्रवृत्ति एवं समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित छात्रावासों हेतु प्रतिवर्ष बजट का प्रावधान है । दिनांक 10-2-88 को कार्यालय से प्राप्त दत्तों के आधार पर नीचे राशि

का ब्यौरा दिया गया है । विभाग में छात्रावास एवं छात्रवृत्ति हेतु तीमाही किस्तों का भुगतान किया जाता है । अनुसंधाता द्वारा यहाँ पर 1-1-1989 को चुकाई गई तीमाही किस्तों का ब्यौरा दिया गया है -

रिकार्ड अवलोकन करने पर ज्ञात हुआ कि प्रति छात्र प्रति-माह पूर्व में 140रु. खर्च होता था किन्तु बाद में इस राशि को 145.00 बढ़ाया गया । इस राशि के अलावा पूर्व में रसौई बनाने वाले को रसौई भत्ता प्रतिमाह 350.00 मिलता था किन्तु बाद में 100.00 और बढ़ाया गया जो अब 450.00 हो गया है । रसौइये के अलावा एक चौकीदार को भी 350.00 पूर्व में तथा बाद में इस राशि को बढ़ाकर 450.00 प्रतिमाह किया गया । प्रत्येक छात्रावास में खर्च राशि को नीचे सारणी में दर्शाया गया है - §1-1-1989 के अनुसार§

सारणी -
=====

समान कल्याण विभाग द्वारा जनजाति वर्ग के छात्रों पर खर्च की जाने वाली राशि का विवरण :-

क्र.सं.	तहसील एवं ग्राम	छात्र संख्या	प्रति छात्र दर छात्र-वृत्ति	छात्रवृत्ति की कुल राशि	रसौइये पर खर्च राशि	वौकीदार पर खर्च राशि	कुल खर्च
1-	गिरवा						
	अ० छात्रावास टीडी	50	140.00	21285.00	2500/-	-	23785/-
	ब० " बारापाल	25	140.00	10710.00	1250/-	1250/-	13210/-
	स० " मादही	34	140.00	67550.00	1500/-	1500/-	18875/-
2-	झाड़ोल						
	अ० झाड़ोल छात्रावा	80	140.00	33885.00	5000/-	-	38885/-
3-	सं.सं.-सुम्बर						
	अ० रा. छात्रावास सुम्बर	21	140.00	8655.00	1250/-	1250/-	11155/-

ब०समुम्बर जनजाति	30	140/-	14310/-	2500/-	-	16705/-
अनुदानित छात्रावास		तथा	145/- अति + 7/-			
			कमीसे 855/-			
4- मं.सं.खेरावाडा						
अ०खेरावाडा कन्या छा.वा79		140/-	14280/-	5000/-	-	18920/-
		तथा	145/- + 12575/-	-1500/-		
			= 33855/-	+2000/-		
				+ 975/-		
ब०वनवासी खेरावाडा	25		10665/₹	1250/-		12200/-
छात्रावास				पुस्तके 560/-		
				+ 20/-		
				स्टेशनरी 660		
स०बभदेव छात्रावास	39	140	16755/-	2500		19615/-
		तथा	145	- 390/-	+ 750	

				16365/-		

5- कोटडा पं.स.						
अ कोटडा छात्रावास	123	140/-	52740/-	5000/-		56740/-
कन्या		तथा 145/-	-	1000/-		
ब मालवी का चौरा	30	140	12600/-	1250/-	1250/-	15100/-
छात्रावास						
6- सुराहा पं.स.						
अ सुराहा सराहा	25	140/-	10230/-	1250/-	2000/-	13190
छात्रावास	रिक्त 1_तथा 24	145/-			-290/-	
ब चावण्ड छात्रावास	30	140/-	12960/-	2500/-	-	16210/-
अनुदानित		तथा 145/-		- 750/-		
स चावण्ड छात्रावास	25	140/-	10213/-	1250	1250	12755/-
रिक्त 1_तथा 24		145/-	- 400/-	स्टे. 450		
			9805/-			

6- धरियावद-पं.स.

अधरियावद छात्रावास	115	140/-	45690/-	5000/-	-	50690/-
- 4 तथा 145/-						
111						
बभ्रराणा छात्रावास	12	140/-	25920/-	3750/-	29678/-	29670/-
+ 48 तथा 145/-						
--						
60						
योग -	785					367705/-

समाज कल्याण विभाग, उदयपुर में दिनांक 1-1-1989 तक छर्च राशि के अनुसार:-

उपरोक्त सारणी देखने से ज्ञात होता है कि समाज कल्याण विभाग द्वारा 785 छात्रों पर कुल राशि रु. 367705/- तीनों माह की किस्त के हिसाब से प्रतिमाह औसत छर्च 156.13 रु. प्रति छात्र होता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि रसोइये, चौकीदार एवं स्टेशनरी पर प्रति छात्र 145 - 156.13 = 11.13 छर्च किया जाता है यह राशि प्रतिमाह के प्रति छात्र के हिसाब से बहुत कम जान पड़ती है।

साक्षात्कार के समय छात्रावास के वार्डन महोदयों से हुए साक्षात्कार में ज्ञात हुआ कि छात्रवृत्ति की राशि भी छात्र के छर्च के अनुपात में कम पड़ती है और चौकीदार, रसोइया तथा स्टेशनरी का खर्चा भी कम पड़ता है। इसी प्रकार छात्र एवं छात्राओं की भी यही राय थी।

जिला शिक्षा अधिकारी, उप-निदेशक, जिला प्रधान, ग्राम के सरप्रंच एवं अभिभावकों की यह राय थी कि इस राशि में मेंहगाई संचकाक के आधार पर वृद्धि होती रहनी चाहिए।

वर्तमान की निर्धारित राशि को इस वर्ग ने आवश्यकता से कम बताया ।

सुविधाओं के उपयोग की वर्तमान स्थिति के अवलोकन का विश्लेषण

चयनीत छात्रावासों, आश्रम विद्यालयों एवं विद्यालयों की भौतिक साधन सुविधाओं, छात्रों की पढ़ाई, छात्रों की प्रवृत्तियों, साधनों, शैक्षिक सुविधाओं प्रशासनिक व्यवस्थाओं को देखने पर निम्न निष्कर्ष निकलते हैं :-

- 1१ सामान्यतया छात्रवृत्ति की राशि प्रति छात्र कम जमा पड़ती है ।
- 2१ छात्रवृत्ति की राशि का कहीं-कहीं अभिभावक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु एवं सामाजिक कार्यों में तथा बुरी आदमों में खर्च कर देते हैं ।
- 3१ छात्रवृत्ति की राशि को वर्ष के प्रारम्भ में नहीं दी जाती है जिससे पुस्तकें एवं स्टेशनरी खरीदने में छात्रों को कठिनाई होती है ।
- 4१ छात्रवृत्ति के लिए छात्रों का चयन वर्ष प्रारम्भ से पूर्व ही हो जाना चाहिए ।
- 5१ कुछ स्थानों पर छात्रावासों में सीटे खाली पड़ी हुई थी । पूछने पर ज्ञात हुआ कि छात्र पढ़ाई छोड़कर चले गए ।

- 6४ समाज के कल्याण विभाग द्वारा संचालित छात्रावासों के भवन चाहे वे किसी भी संस्था द्वारा ही क्यों न चलाये जा रहे हों, अधिकांशतः खराब हालत में पाए गए ।
- 7४ छात्रावासों में शौचालय, पानी की व्यवस्था, बीजली की व्यवस्था आवश्यकता के अनुकूल नहीं पाई गई ।
- 8४ रहने के भवन में बिस्तर तो है किन्तु सर्दी से बचाव की दृष्टि से अपर्याप्त जान पड़ते हैं ।
- 9४ छात्रावासों में दैनिक कार्यक्रम संतोष जनक पाया गया ।
- 10४ छात्रावासों में अध्ययनरत छात्रों की उत्तरपुष्टिकाएँ देखने से ज्ञात हुआ है कि छात्र अध्ययन करते हैं किन्तु इनकी कीठनाई दूर करने हेतु कौचिंग कक्षाओं का अभाव पाया गया ।
- 11४ समाज कल्याण विभाग द्वारा स्वीकृत एवं शिक्षा विभाग द्वारा निर्देशित एवं निरीक्षित ये छात्रावास कई समस्याओं से घिरे हैं । हाँस्टल वार्डन शिक्षा विभाग का अध्यापक होता है जो पूरा समय नहीं दे पाता है । अलग से वार्डन की व्यवस्था बहुत कम स्थानों पर है ।
- 12४ चिकित्सा सुविधा का पूर्णतया अभाव पाया गया ।
- 13४ मनोरंजन का अभाव पाया गया ।

14॥ पाठ्य सहगामी प्रवृत्तियाँ कम पाई गई ।

छात्रवृत्ति सम्बन्धी निष्कर्ष :

- 1॥ छात्रवृत्ति की राशि छात्र/छात्राओं को समय पर उपलब्ध नहीं होती है ।
- 2॥ छात्रवृत्ति की राशि को अभिभावक घर छुर्ब में तथा अन्य काम जैसे सामाजिक रीति रिवाज में छुर्ब कर देते हैं ।
- 3॥ छात्रवृत्ति की राशि महंगाई के कारण बहुत कम है ।
- 4॥ छात्रवृत्ति की राशि छात्र/छात्राओं को आवश्यकता के समय उपलब्ध नहीं होती है ।
- 5॥ अधिकांश विद्यालयों में यह राशि मार्च महीने में उपलब्ध होती है ।
- 6॥ छात्रवृत्ति की राशि में पुस्तकों एवं स्टेशनरी की राशि अलग नहीं पाई गई ।

छात्रवृत्ति सम्बन्धी सुझाव :

अध्यापको, अभिभावकों एवं छात्रों से साक्षात्कार लेने पर जो सुझाव प्राप्त हुए हैं उनको श्रेणीवार नीचे दर्शाया गया है । परिरीक्षाष्ट में छात्रों द्वारा सुझाए गए कुछ नमूने दर्शाए गए हैं -

- 1४ छात्रवृत्ति की राशि प्रति छात्र मैहगाई के बढ़ने के अनुपात में बढ़नी चाहिए ।
- 2४ छात्रवृत्ति की राशि छात्र/छात्राओं की समय एवं आवश्यकतानुसार उपलब्ध कराई जावे ।
- 3४ छात्रवृत्ति की राशि हेतु राज्य सरकार माह मई एवं जून में ही निर्णय कर, राशि आवंटन कर दे ।
- 4४ छात्रवृत्ति की राशि का अभिभावकों एवं छात्रों द्वारा किया जाने वाला दुरुपयोग रोका जावे । खास कर जो अभिभावक इस राशि को अपने घर छर्च में खत्म करते है, उस पर पाबन्दी होनी चाहिए ।
- 5४ पुस्तकों, स्टेशनरी एवं अन्य पढ़ाई के सामान हेतु अलग राशि निर्धारित की जावे ।
- 6४ प्रतिभावान जनजाति के छात्र/छात्राओं को अतिरिक्त राशि उपलब्ध कराई जावे ।
- 7४ छात्रवृत्ति प्राप्त करने सम्बन्धी जानकारी ग्राम स्तर पर उपलब्ध कराई जावे ।
- 8४ गरीब जनजाति के परिवार उन छात्र/छात्राओं को जिनका चयन छात्रवृत्ति के लिए हुआ है, के परिवार के सदस्यों को भरण-पोषण हेतु रोजगार या आर्थिक सुविधा जो भी सम्भव हो उसे उपलब्ध कराया जावे ।
- 9४ छात्रवृत्ति की राशि से पुस्तकें, स्टेशनरी आदि चुलाई ~~मह~~ माह में ही खरीद कर उपलब्ध कराई जावे ।

आश्रम विद्यालयों की स्थिति :
 =====

उदयपुर जिले में कुल 17 आश्रम विद्यालय राजस्थान सरकार ने खोले हैं । प्रस्तुत अध्ययन में 7 आश्रम विद्यालयों को अध्ययन के लिये चुना गया । चयन में यह ध्यान रखा गया कि प्रत्येक पंचायत समिति का एक विद्यालय चयन हो सके । इस दृष्टि से गिरवा पंचायत समिति का झाड़ोल पंचायत समिति का झाड़ोल, सराड़ा पंचायत समिति का सराड़ा, खेरवाड़ा पंचायत समिति का खेरवाड़ा, धीरयावद पंचायत समिति का भबराना, कोटड़ा पंचायत समिति का मालवा का चौरा तथा सलुम्बर पंचायत समिति का सलुम्बर विद्यालयों का चयन किया गया ।

आश्रम विद्यालयों में प्रत्येक छात्र के लिए प्रतिमाह 100.00 राज्य सरकार के द्वारा स्वीकृत है । इस राशि को खर्च करने हेतु राज्य सरकार ने कुछ आधार बिन्दु तय किये हैं जिन्हें नीचे सारणी में दर्शाया गया है -

सारणी - 4 :
 =====

आश्रम विद्यालयों में प्रति छात्र सामग्री को कृय करने की स्थिति

क्र.सं. नाम सामग्री प्रतिदिन प्रति सप्ताह प्रतिमाह प्रतिवर्ष

1-	आटा गेहूँ	600 ग्राम	-	-	-
2-	नाश्ता	50 पैसा	-	-	-
3-	दाल बिना धूली/ धूली	50 ग्राम	-	-	-
4-	हरी सब्जी	40 पैसा	-	-	-
5-	मूँगफली तेल	20 ग्राम	-	-	-
6-	मसाले/मिर्च, धनिया 15 ग्राम हल्दी, जीरा आदि		-	-	-
7-	जलाऊ लकड़ी	1 1/4 किग्रा	-	-	-
8-	चावल	-	200 ग्राम	-	-
9-	सिर का तैल	-	30 ग्राम	-	-
10-	शक्कर	-	-	200 ग्राम	-
11-	गुड	-	-	200 ग्राम	-
12-	साबून नहाने का/धोने-	-	-	4.70 पैसा	-
13-	कमीज सफेद छादी	-	-	-	वर्ष में दो
14-	पैट छादी का	-	-	-	वर्ष में एक
15-	नेकर छादी का	-	-	-	वर्ष में दो
16-	चड़्डी छादी की	-	-	-	वर्ष में 3
17-	ऊनी जर्सी	-	-	-	वर्ष में 1
18-	जूते, मौजे	-	-	-	30/- के
19-	विशेष भोजन माह में दो बार	-	-	1/-	
20-	बनियान	-	-	-	वर्ष में 3

उपरोक्त सामग्री के अतिरिक्त आवासियों को अन्य सुविधाएँ तथा सामग्री उपलब्ध करानी होती है जो निम्न है:

1. छात्रावास में जब तक बिजली की व्यवस्था नहीं हो तब तक के लिए दो टिन केरोसीन प्रति 2 माह प्रति आवासीय व्यय होगा । इस प्रकार 50 छात्र हेतु 100 बोतल प्रतिमाह ।
2. बिमार आवासियों के लिए भोजन व्यवस्था एवं दवाईयाँ चिकित्सा अधिकारी की राय के अनुसार दी जावेगी ।
3. पुस्तकें एवं स्टेशनरी तथा फीस इत्यादी के 55.00 रु. प्रतिवर्ष देये होंगे ।
4. माचिस एवं नमक पर होने वाला छर्च आवश्यकतानुसार किया जावेगा ।

उपरोक्त सम्पूर्ण छर्चा राज्य सरकार जनजाति के आवासीय विद्यालयों पर छर्च करती है जिसकी एक सत्यापित प्रतिलिपि नीचे दी जा रही है :-

कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी, शिक्षा विभाग, उदयपुर जिला

क्रमांक:- जि शिक्षा/उदय/सोट-37/ज.जा./84-85/ दि. 14-5-84

शिक्षा उपनिदेशक,
जनजाति क्षेत्रीय विकास विभाग,
उदयपुर

विषय:- संचालित आश्रम विद्यालयों की चाही गई
सूचना प्रस्तुत करने के क्रम में ।

महोदय जी,

आप द्वारा दूरभाष पर आश्रम विद्यालयों के सम्बन्ध में जो
सूचना चाही गई है वह निम्नानुसार प्रस्तुत है :-

विभाग द्वारा जो आश्रम विद्यालय चलाये जा रहे हैं ।
समान कल्याण विभाग के द्वारा निर्धारित माप दण्ड के अनुसार
प्रत्येक आवासिय हेतु निम्नानुसार चलाये जा रहे हैं । इस हेतु
प्रत्येक छात्र के लिये प्रतिमाह राज्य सरकार द्वारा 100/-
रुपय सौ रुपया स्वीकृत है ।

क्र.सं.	नाम सामग्री	प्रतिदिन	प्रति सप्ताह	प्रतिमाह	प्रतिवर्ष
1-	आटा गेहूँ	600 ग्राम	-	-	-
2-	नाश्ता	50 पैसा	-	-	-

3-	दाल बिना धुली/धुली	50 ग्राम	-	-	-
4-	हरी सब्जी	40 पैसा	-	-	-
5-	मूँगफली तैल	20 ग्राम	-	-	-
6-	मसाले/मिर्च, धनिया हल्दी, जीरा आदि	15 ग्राम	-	-	-
7-	जलाऊ लकड़ी	1 $\frac{1}{4}$ किग्रा	-	-	-
8-	चावल	-	200 ग्राम	-	-
9-	सिर का तैल	-	30 ग्राम	-	-
10-	शक्कर	-	-	200 ग्राम	-
11-	गुह	-	-	200 ग्राम	-
12-	साबुन नहाने का धोने का	-	-	4.70 पैसा	-
13-	कमीज सफेद खादी	-	-	-	वर्ष में 2
14-	पैट खादी का	-	-	-	वर्ष में 1
15-	नेकर खादी का	-	-	-	वर्ष में 2
16-	चद्दरी खादी	-	-	-	वर्ष में 3
17-	ऊनी जर्सी	-	-	-	वर्ष में 1
18-	टाँवल	-	-	-	वर्ष में 1
19-	जूते, मोजे	-	-	-	वर्ष में 30/-
20-	विशेष भोजन माह में दो बार	-	-	1.00	-
21-	बनियान	-	-	-	वर्ष में 3

इसके अतिरिक्त आवासियों को अन्य सुविधाएँ तथा सामग्री उपलब्ध करानी होती है जो निम्न है -

1. छात्रावास में जब तक बिजली की व्यवस्था नहीं हो तब के लिये दो टिन केरोसिन प्रति 2 माह प्रति आवासिय व्यय होगा । इस प्रकार 50 छात्र हेतु 100 बोटल प्रति-माह ।
2. बिमार आवासियों के लिये भोजन व्यवस्था एवं दवाईयाँ चिकित्सा अधिकारी की राय के अनुसार दी जाती है ।
3. पुस्त के एवं स्टेशनरी तथा फिस इत्यादि 55/- प्रतिवर्ष देय है ।
4. माचिस एवं नमक पर होने वाला छर्च आवश्यकता अनुसार किया जावेगा ।

जिला शिक्षा अधिकारी
शिक्षा विभाग
उदयपुर

आश्रम विद्यालयों की वर्तमान स्थिति का अवलोकन करने पर
विश्लेषण :
=====

आश्रम विद्यालयों की स्थिति अपेक्षाकृत अच्छी पाई गई इनके भवन नये एवं साधन सुविधाओं से पूर्ण पाएँ गए । प्रशासकों, वार्डन, छात्रों, अध्यापकों, सरपंच, प्रधान जिला शिक्षा अधिकारी एवं उपनिदेशक से साक्षात्कार से ज्ञात हुआ कि छात्रावासों के अंतर्गत निश्चित मानदण्डों को पुनः निर्धारित किया जावे । इस हेतु मंडगाई के सूचनांक को आधार माना जावे ।

अवलोकन करने पर ग्रामीण दूर दराज के कुछ आश्रम विद्यालयों में छात्र अनुपस्थिति पाएँ गए । ज्ञात हुआ कि वे बीमारी से प्रतीत पीडित हैं । आश्रम विद्यालयों में बीमार छात्रों के लिए विशेष सुविधाएँ उपलब्ध नहीं पाई गई । अवलोकन के समय कई छात्रावासों, आश्रम विद्यालयों में छात्र बीमार पड़े मिले । इनको दवाईयाँ स्थानीय सुविधानुसार ही मिल रही थी जो अपर्याप्त पाई गई ।

आश्रम विद्यालयों में शिक्षण कार्य बहुत अच्छा पाया गया किन्तु पाठ्यसहगामी पुस्तकें एवं मनोरंजन के साधनों

का अभाव पाया गया । सांस्कृतिक कार्यक्रम बहुत ही कम आयोजित किये जाते हैं जिससे छात्र "होम सिक" घर का बीमार पाया गया ।

आश्रम विद्यालयों हेतु जिला शिक्षा अधिकारी, प्रधान, सरमंच, अभिभावक, अध्यापक एवं छात्रों के सुझावों के प्रमुख निष्कर्ष :
 =====

अवलोकन के समय तथा उसके पश्चात् उक्त सभी वर्ग से साक्षात्कार करने पर कई सुझाव प्राप्त हुए । इन सुझावों को बिन्दुवार दर्शाया जा रहा है :-

- 1॥ आश्रम विद्यालयों का प्रशासन शिक्षा विभाग के पास ही रहना चाहिए । वर्तमान में आयुक्त जनजाति उदयपुर परिक्षेत्र ने इनको अपने पास रखलिया है । पूर्व में इनका संचालन शिक्षा विभाग ही करता था ।
- 2॥ आश्रम विद्यालयों में अलग से वार्डन, चौकीदार तथा रसोइयाँ स्थाई रूप से नियुक्त हो जिसको वेतन के साथ-साथ भत्ता भी दिया जावे । वार्डन हेतु सेवा निवृत्त व्यक्ति को लिया जावे । चौकीदार हेतु सेना से निवृत्त व्यक्ति तथा रसोइयाँ जहाँ तक हो स्थानीय हो ।

- 3४ आश्रम विद्यालयों हेतु स्वीकृत राशि में मूल्य सूचकांक के आधार पर मानदण्डों में परिवर्तन किया जावे । साथ ही कई वस्तुओं को मानदण्डों में नहीं दर्शाया गया है अतः उन्हें मानदण्डों में लिया जावे ।
- 4४ आश्रम विद्यालय में मनोरंजन हेतु रेडियो अथवा सम्भव हो तो टि.वी. की व्यवस्था होनी चाहिए । ताकि राष्ट्रीय धारा से छात्र जुड़ सकें और विद्यालयों में आकर्षण बना रहे ।
- 5४ स्थानीय त्योहारों एवं उत्सवों को मनाया जावे । इस हेतु एक राशि तय की जाए ।
- 6४ चिकित्सा हेतु एक कम्पाउण्डर का पद स्वीकृत किया जावे । जीवन रक्षक दवाईयाँ उपलब्ध हो ।
- 7४ स्टेशनरी एवं पुस्तकों की राशि में बढ़ोतरी हो ।
- 8४ खेल के सामान उपलब्ध करवाए जावे ।
- 9४ शिक्षण में मार्ग दर्शन हेतु कौचिंग कक्षाओं की सुविधाएँ वर्ष भर हो ।

10४ वर्ष के प्रमुख त्योहार मनाने हेतु घर जाने व आने का किराया दिया जावे ।

11४ छात्रों के परिवार वालों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ करना तथा उनमें शिक्षा के प्रति चेतना जागृत करना जरूरी है ।

तृतीय परिच्छेद =====

जनजाति वर्ग को दो जाने वाली सुविधाओं एवं उनके
शैक्षिक विकास पर अध्यापक वर्ग की अभिरूति -

प्रस्तावना :
=====

राजस्थान सरकार ने जनजाति वर्ग के शैक्षिक विकास हेतु कई सुविधाएँ प्रदान कर रखी हैं । इन सुविधाओं का शैक्षिक विकास में कितना योगदान हो रहा है । इस बिन्दु पर अनुसंधानकर्ता ने अध्यापकों की अभिरूति जाच की है । अभिरूति ज्ञात करने हेतु अनुसंधाता ने एक अभिरूति मापनी का निर्माण किया है । अभिरूति मापनी के निर्माण को सम्पूर्ण प्रक्रिया को प्रथम परिच्छेद में वर्णित किया गया है । अभिरूति मापनी की एक प्रति परिच्छेद एक में संलग्न है ।

अभिरूति मापनी में कुल 36 अध्ययन बिन्दुओं का निर्माण किया गया है । इन 36 अध्ययन बिन्दुओं को 8

अध्ययन द्वारों में बाँटा गया है ये अध्ययन क्षेत्र इस प्रकार हैं :-

- 1। विद्यालय की दूरी एवं शिक्षा का विकास ।
- 2। प्रवेश सम्बन्धी नियमों की जानकारी एवं शिक्षा का विकास ।
- 3। आवासीय विद्यालयों की विभिन्न सुविधाएँ तथा प्रशासनिक अधिकारियों का व्यवहार एवं शिक्षा विकास ।
- 4। जनजाति वर्ग में जन्मजात गुण प्राप्त अवसर एवं प्राप्त सुविधाएँ और शिक्षा विकास ।
- 5। पारिवारिक परिस्थितियाँ एवं शिक्षा का विकास ।
- 6। सरकारी सुविधाएँ और शिक्षा का विकास ।
- 7। शिक्षा सामग्री की मात्रा एवं शिक्षा विकास ।
- 8। प्रशासनिक व्यवस्थाएँ और शिक्षा विकास ।

इस प्रकार कुल 36 अध्ययन बिन्दुओं का विश्लेषण इस परिच्छेद में किया गया है ।

विश्लेषण हेतु अभिवृत्ति मापनी से प्राप्त दत्तों का उपयोग किया गया है । इन दत्तों पर प्रतिशत, मध्यांक निकाला गया है । तथा इन्हीं को पुनः श्रेणीवार विभाजन किया गया है । विभाजन के आधार का वर्णन प्रथम अध्याय में किया गया है तथा इस कार्य में विशेषज्ञों की राय को लिया गया है । तीन श्रेणियाँ निर्धारित की गई हैं, यथा; उच्च स्तर श्रेणी, सामान्य स्तर श्रेणी एवं निम्न स्तर श्रेणी अध्ययन बिन्दुओं के निष्कर्ष को इन्हीं श्रेणियों से ज्ञात किया गया है । प्रत्येक अध्ययन बिन्दु का विश्लेषण सारणी बनाकर किया गया है । सारणी विशेषज्ञों की राय के अनुसार बनाई गई हैं । प्रत्येक सारणी में उदयपुर जिले की सातों तहसीलों को, पूर्णांक को, प्राप्तांको, प्रतिशत को, मध्यांक को एवं श्रेणियों में प्राप्तांकों की आवृत्ति को दर्शाया गया है । अध्ययन बिन्दुओं का विश्लेषण इस प्रकार है :-

११ विद्यालय की दूरी एवं शिक्षा का विकास :

इस अध्ययन क्षेत्र में दो अध्ययन बिन्दु सम्मिलित हैं । एक में विद्यालय की गाँव से अधिकतम दूरी का शिक्षा पर प्रभाव तथा दूसरे में विद्यालय की अधिकतम निष्ठता का शिक्षा पर प्रभाव को लिया गया है ।

अ १ विद्यालय की गाँव से अधिकतम दूरी एवं शिक्षा का विकास -

इस अध्ययन बिन्दु पर अध्यापकों की अभिरूति को ज्ञात करने के लिए उनसे पूछा गया कि क्या "गाँव से विद्यालय की दूरी ने जनजाति के छात्रों में पढ़ने के प्रति अरुचि पैदा करदी है" । इस बिन्दु पर अध्यापकों ने जो राय व्यक्त की हैं उसे सारणी संख्या ३:१ में दर्शाया गया है ।

सारणी संख्या 3:1

=====

गाँवों से विद्यालय की दूरी एवं शिक्षा का विकास सम्बन्धी
प्राप्तांकों का विश्लेषण

तहसील पूर्णांक प्राप्तांक प्रतिशत मध्यांक प्राप्तांकों का औसत							
विभाजन							
निम्नस्तर सामान्य उच्च							
स्तर स्तर							
0 -1.60 1.61- 3.21-							
3.20 50							
गिरवा	150	110	73.30	3.14	-	3.14	-
बाहोत	150	106	70.6	3.53	-	-	3.53
सलुम्बर	150	109	72.6	3.36	-	-	3.36
छेरवाड़ा	150	90	60.00	3.00	-	3.00	-
कोटड़ा	150	77	51.30	2.56	-	2.56	-
सराड़ा	150	92	61.30	3.06	-	3.06	-
धरियावद	150	110	73.30	3.66	-	-	3.66

सारणी संख्या 3:2 के अनुसार पंचायत समिति धीरवावद, सलुम्बर, सराडा के अध्यापकों की अधिकतम औभूति प्रमथा: 84,84, व 80.6% प्राप्त हुई जहाँ सबसे न्यून औभूति 51.3% कोटडा के अध्यापकों की प्राप्त हुई ।

सारणी देखे से यह भी ज्ञात होता है कि कोटडा पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांकों सामान्य ंणो में तथा गिरवा, काझोल, सलुम्बर, अरवाडा, सराडा और धीरवावद पंचायत समिति के अध्यापकों की प्राप्तांक उच्च स्तर की ंणो में पाएँ गए ।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सभी पंचायत समितियों के अध्यापकों को राय के अनुसार गाँव से विद्यालय की निकटतम दूरी जनजाति के छात्रों के शैक्षिक विकास को प्रभावित करती है ।

उपरोक्त सारणी के अनुसार पंचायत समिति गिरवा और धारवाह के अध्यापकों की अधिकतम अभिरूति 73.3% प्राप्त हुई जबकि सबसे न्यून अभिरूति 51.30% कोटड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों को प्राप्त हुई । सारणी देखने से यह भी ज्ञात हुआ कि कोटड़ा, खेरवाड़ा, और गिरवा पंचायत समिति-याँ सामान्य श्रेणी में तथा काड़ोल, सलुम्बर और धारवाह पंचायत समितियाँ उच्च श्रेणी में हैं । इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अध्यापकों के अनुसार गाँव से विद्यालय की दूरी जनजाति के छात्रों के शैक्षिक विकास में बाधा उत्पन्न करती है ।

ब॥ गाँव से विद्यालय की अधिकतम निकटता एवं शिक्षा का विकास -

उक्त अध्ययन बिन्दु पर अध्यापकों की अभिरूति के प्राप्तांकों को सारणी संख्या 3:2 में दर्शाया गया है ।

सारणी संख्या 3:2

गाँवों से विद्यालय की निकटता एवं शिक्षा विकास सम्बन्धी
प्राप्तांकों का विश्लेषण -

तहसील पूर्णांक प्राप्तांक प्रतिशत मध्यांक प्राप्तांकों का औसत
विभाजन

	निम्न स्तर	सामान्य स्तर	उच्च स्तर
	0 -	1.61 -	3.21 -
	1.60	3.20	50

गिरवा	150	116	73.3	3.86	-	-	3.86
काहोली	150	117	78	3.90	-	-	3.90
सलुम्बर	150	126	84	4.20	-	-	4.20
छेरवाड़ा	150	107	71.3	3.56	-	-	3.56
कोटड़ा	150	77	51.3	2.56	-	2.56	-
सरवाड़ा	150	121	80.6	4.03	-	-	4.03
धीरयावद	150	126	84	4.20	-	-	4.20

2। अध्ययन क्षेत्र :

प्रवेश सम्बन्धी नियमों की जानकारी एवं शिक्षा का विकास -

इस अध्ययन क्षेत्र में निम्न उप बिन्दुओं का निर्माण करके विश्लेषण किया गया है :-

- अ। प्रवेश सम्बन्धी न्यूनतम योग्यता एवं शिक्षा का विकास
- ब। प्रवेश नियम एवं शिक्षा का विकास
- स। विद्यालयों की जानकारी एवं शिक्षा का विकास
- द। विद्यालय एवं प्रवेश सम्बन्धी सामान्य जानकारी एवं शिक्षा विकास

प्रवेश सम्बन्धी न्यूनतम योग्यता की सारणी संख्या

3:3 में, प्रवेश नियम सम्बन्धी को 3:4 में, विद्यालयों की जानकारी को 3:5 में तथा विद्यालय एवं प्रवेश सम्बन्धी सामान्य जानकारी को 3:6 सारणी में विश्लेषण हेतु दर्शाया गया है ।

अ। प्रवेश सम्बन्धी न्यूनतम योग्यता एवं शिक्षा विकास -

उक्त अध्ययन बिन्दु को शारणी संख्या 3:3 में दर्शाया गया है -

शारणी संख्या :3:3
=====

प्रवेश सम्बन्धी न्यूनतम योग्यता एवं शिक्षा विकास

तहसील	पूर्णांक प्राप्तांक प्रतिशत मध्यांक प्राप्तांकों का औसत				विभाजन		
					निम्न स्तर	सामान्य स्तर	उच्च स्तर
					0 - 1.60	1.61 3.20	3.21 - 5.00
गिरवा	150	76	50.6	2.53	-	2.53	-
काड़ोल	150	70	46.6	2.33	-	2.33	-
समुम्बर	150	95	63.3	3.61	-	3.16	-
खेरवाड़ा	150	70	46.6	2.33	-	2.33	-
कोटड़ा	150	77	51.3	2.56	-	2.56	-
सराड़ा	150	62	41.3	2.06	-	2.06	-
धरियावद	150	60	40.0	1.98	-	1.98	-

सारणी संख्या 3:3 के माध्यमिक कक्षाओं में प्रवेश सम्बन्धि न्यूनतम शैक्षिक योग्यता का प्रतिशत इतना अधिक होता है कि जनजाति के छात्रों को प्रवेश नहीं मिल पाता है इसके प्राप्तियों को दर्शाया गया है ।

उपरोक्त सारणी के अनुसार प्रंयायत समिति सलुम्बर के अध्यापकों की अभिरूति 63.3% प्राप्त हुई जबकि सबसे न्यून अभिरूति 40.0% धीरयावद प्रंयायत समिति के अध्यापकों की प्राप्त हुई ।

प्राप्तियों को आरूति सारणी देखने से यह भी ज्ञात होता है कि सभी चयनित प्रंयायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तियों को सामान्य क्षेत्र में पाया है ।

इससे निष्कर्ष निकलता है कि सभी प्रंयायत समिति के अध्यापकों की राय के अनुसार माध्यमिक कक्षाओं में प्रवेश सम्बन्धी न्यूनतम शैक्षिक योग्यता का प्रतिशत इतना अधिक होता है कि जनजाति के छात्र प्रवेश नहीं ले सकते हैं ।

क। प्रवेश नियम एवं शिक्षा विकास -

इस अध्ययन बिन्दु के प्राप्तांको को सारणी संख्या 3:4

में दर्शाया गया है ।

प्रवेश के नियमों को जानकारी एवं शिक्षा विकास

सारणी संख्या 3:4

तहसील	पूर्णांक प्राप्तांक प्रतिशत मध्यांक				प्राप्तांको का श्रेणीवार विभाजन		
					निम्न स्तर	सामान्य स्तर	उच्च स्तर
					0 - 1.60	1.61 - 3.20	3.21 - 5.00
गिरवा	150	94	62.6	3.13	-	1.13	-
डाहोल	150	62	41.3	2.06	-	2.06	-
सहम्बर	150	54	36	1.80	-	1.80	-
खेरवाड़ा	150	54	36	1.80	-	1.80	-
कोटड़ा	150	72	48	2.40	-	2.40	-
तराड़ा	150	45	30	1.05	1.85	-	-
धीरवावद	150	54	36	1.80	-	1.80	-

सारणी संख्या 3:4 में विद्यालय में प्रवेश सम्बन्धी नियम को कठोरता के कारण छात्र प्रवेश से वंचित रहते हैं इसके प्राप्तियों को दर्शाया गया है ।

उपरोक्त सारणी के अनुसार पंचायत समिति गिरवा के अध्यापकों की अधिक अभिवृत्ति 62.6 प्राप्त हुई है जबकि सबसे न्यून अभिवृत्ति 30% सराहा पंचायत समिति से प्राप्त हुई है ।

अतः प्राप्तियों की आवृत्ति सारणी देखने से ज्ञात होता है कि सराहा पंचायत समिति के अध्यापकों के प्रशिक्षण प्राप्तिक निम्न स्तर में तथा अन्य वर्गीकृत पंचायत समिति में प्राप्तिक सामान्य श्रेणी में प्राप्त हुए ।

इससे निष्कर्ष निकलता है कि सभी पंचायत समिति के अध्यापकों की राय के अनुसार विद्यालय में प्रवेश सम्बन्धी नियम इतने कठोर हैं कि जनजाति छात्र प्रवेश से वंचित रह जाते हैं ।

त॥ विद्यालयों की जानकारी एवं शिक्षा विकास -

उक्त अध्ययन बिन्दु की संख्या सारणी 3:5 में दर्शाया गया है ।

सारणी संख्या 3:5
=====

विद्यालय प्रवेश की जानकारी एवं शिक्षा का विकास
=====

तहसील	पूर्णांक	प्राप्तांक	प्रतिशत	मध्यांक	प्राप्तांकी का औसत		
					विभाजन		
					निम्न स्तर	सामान्य स्तर	उच्च स्तर
					0 - 1.60	1.61 - 3.20	3.21 - 5.00
गिरवा	150	100	66.6	3.30	-	-	3.36
शहोल	150	72	48.00	2.40	-	2.40	-
सलुम्बर	150	101	67.30	3.36	-	-	3.36
खेरवाड़ा	150	85	56.6	2.83	-	2.83	-
कोटड़ा	150	94	62.6	3.13	-	3.13	-
सरवाड़ा	150	105	70.00	3.50	-	-	3.50
थीरवावद	150	98	65.3	3.26	-	-	3.26

सारणी संख्या 3:5 में जनजाति के छात्रों को यह जानकारी भी नहीं होती है कि किस विद्यालय में प्रवेश लिया जाय । के प्राप्तांकों को दर्शाया गया है ।

उपरोक्त सारणी के अनुसार पंचायत समिति सराड़ा के अध्यापकों की अधिकतम अभिरूति 70% प्राप्त हुई सबसे न्यून अभिरूति 48.00 बाहोल पंचायत समिति के अध्यापकों की प्राप्त हुई ।

इससे निष्कर्ष निकलता है कि सभी पंचायत समिति के अध्यापकों की राय के अनुसार जनजाति के छात्रों को यह भी जानकारी नहीं होती है कि वे किस विद्यालय में प्रवेश लें ।

द॥ विद्यालय में प्रवेश सम्बन्धी सामान्य जानकारी एवं शिक्षा विकास -

उक्त अध्ययन बिन्दु को सारणी 3:6 में दर्शाया गया

है -

सारणी संख्या 3:6

विद्यालय प्रवेश सम्बन्धी जानकारी एवं शिक्षा विकास

तहसील	पूर्णांक प्राप्तार्थक प्रतिशत मध्यांक प्राप्तार्थक का सेणोवार				विभाजन		
					निम्न	सामान्य	उच्च
					स्तर	स्तर	स्तर
					0 - 1.60	1.61 - 3.20	3.21 - 5.00
गिरवा	150	132	88	4.50	-	-	4.50
वाहोल	150	121	80.60	4.03	-	-	4.03
सहम्बर	150	120	85.3	4.26	-	-	4.26
खेरवाड़ा	150	98	65.3	3.26	-	-	3.26
कोटड़ा	150	94	62.6	3.13	-	3.13	-
सराड़ा	150	114	76.00	3.80	-	-	3.80
धीरबावद	150	66	44.00	2.20	-	2.20	-

सारणी संख्या 3:6 में जनजाति छात्रों को प्रवेश सम्बन्धी जानकारी मिलती रहे । इसके प्राप्तियों को दर्शाया गया है ।

उपरोक्त सारणी के अनुसार पंचायत समिति गिरवा के अध्यापकों की अधिकतम अभ्युक्ति 88% प्राप्त हुई जबकि सबसे न्यून अभ्युक्ति 49% धीरबावद पंचायत समिति के अध्यापकों की प्राप्त हुई ।

प्राप्तियों की आवृत्ति सारणी देखने से यह ज्ञात होता है कि कोटड़ा व धीरबावद क्षेत्रों में तथा गिरवा, बाड़ोत, सलुम्बर, अरवाड़ा, सराड़ा पंचायत समिति के प्राप्तांक उच्च स्तर की श्रेणी में प्राप्त हुए ।

इससे निष्कर्ष निकलता है कि जनजाति के छात्रों को समय-समय पर प्रवेश सम्बन्धी जानकारी मिलती रहे । ताकि वह प्रवेश का लाभ उठा सकें ।

3६ अध्ययन हेतु :
=====

आवासीय विद्यालय, सुविधाएँ प्रशासन एवं अध्यापक
व्यवहार :-

आवासीय विद्यालय के लाभ के सम्बन्ध में पाँच अध्य-
यन बिन्दुओं का निर्माण किया गया है यथा;

- अ॥ आवासीय विद्यालय एवं साज सामान
- ब॥ आवासीय विद्यालयों के, प्रधानाध्यापकों तथा अध्या-
पकों का व्यवहार
- स॥ छात्र समस्याएँ और शिक्षा
- द॥ छात्रावास एवं सुरक्षा व्यवस्था
- घ॥ छात्रावास एवं भोजन व्यवस्था

उक्त सभी अध्ययन बिन्दुओं को अलग-अलग तारणियों
में विश्लेषण किया गया है ।

अ॥ आवासीय विद्यालय एवं साज सामान :-

आवासीय विद्यालयों का लाभ जनजाति को अधिकतम
मिले, इस हेतु आवश्यक है कि इनमें आवश्यक साज सामान इनकी

मात्रा तथा किस्म के आधार पर उपलब्ध हो । इस हेतु
अध्यापकों की अभिरूति के प्राप्तांकों को सारणी संख्या
3:7 में दर्शाया गया है -

सारणी संख्या 3:7
=====

आवासीय विद्यालय एवं राज सामान तथा शिक्षा
विकास

तहसील	पूर्णांक प्राप्तांक प्रतिशत मध्यांक				प्राप्तांकों का त्रैजोवार विभाजन		
					निम्न स्तर	सामान्य स्तर	उच्च स्तर
					0 - 1.60	1.61 3.20	3.21 5.00
गिरवा	150	124	82.6	4.13	-	-	4.13
काहोल	150	123	82	4.10	-	-	4.10
सलुम्बर	150	128	85.3	4.26	-	-	4.26
खरवाड़ा	150	102	68	3.40	-	-	3.40
कोटड़ा	150	92	61.3	3.06	-	3.06	-
सराड़ा	150	119	79.3	3.96	-	-	3.96
धीरवावद	150	127	84.6	4.23	-	-	4.23

सारणी संख्या 3:7 के अनुसार पंचायत समिति स्तर के अध्यापकों की अधिकतम अभ्युक्ति 85.3% प्राप्त हुई जबकि सबसे न्यून अभ्युक्ति 61.3 कोटड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों की प्राप्त हुई ।

प्राप्तांको की आवृत्ति सारणी देखने से यह भी ज्ञात होता है कि पंचायत समिति कोटड़ा के अध्यापकों का प्राप्तांक सामान्य श्रेणी में तथा अन्य वर्गीकृत पंचायत समिति में प्राप्तांक उच्च स्तर की श्रेणी में प्राप्त हुए ।

इससे निष्कर्ष निकलता है कि सभी पंचायत समितियों के अध्यापकों की राय अनुसार जनजाति के छात्रों को आवश्यक सामान पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध रह कराने पर नामांकन में वृद्धि होगी ।

क) प्रधानाध्यापकों एवं अध्यापकों का व्यवहार और शिक्षा विकास -

सारणी संख्या 3:B
=====

प्रधानाध्यापक एवं अध्यापकों का व्यवहार एवं
शिक्षा विकास

तहसील	पूर्णांक प्राप्तांक प्रतिशत मध्यांक प्राप्तांको का श्रेणीवार विभाजन						
					निम्न स्तर	सामान्य स्तर	उच्च स्तर
					0 - 1.60	1.61 3.20	3.21 5.00
गिरवा	150	110	73.3	3.66	-	-	3.66
आड़ोल	150	61	40.6	2.00	-	2.00	-
सतुम्बर	150	83	55.3	2.70	-	2.70	-
खेरवाड़ा	150	54	36	1.80	-	1.80	-
कोटड़ा	150	88	58.6	2.93	-	2.93	-
तराड़ा	150	48	32	1.60	-	1.60	-
धीरयावद	150	54	36	1.80	-	1.80	-

सारणी संख्या 3:8 में अध्यापकों तथा प्रधानाध्यापकों का व्यवहार उपेक्षित होने से छात्र विद्यालयों में नहीं आते हैं ।
प्राप्तांकों को दर्शाया गया है ।

उपरोक्त सारणी के अनुसार पंचायत समिति गिरवा के अध्यापकों की अधिकतम अभिरूति 73:3% प्राप्त हुई जबकि सबसे न्यून अभिरूति 32% सराड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों को प्राप्त हुई ।

प्राप्तांकों की आवृति सारणी से यह भी ज्ञात होता है कि बाहोल, सलुम्बर, खेरवाड़ा, कोटड़ा, सराड़ा, धीरयावद के अध्यापकों के प्राप्तांक सामान्य श्रेणी में तथा गिरवा पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक उच्च स्तर की श्रेणी में प्राप्त हुए ।

अतः निम्नकर्ष निकलता है कि सभी पंचायत समितियों के अध्यापकों की राय अनुसार कम सेमा तक अध्यापकों व प्रधानाध्यापकों का व्यवहार उपेक्षित होने से छात्र विद्यालय में नहीं आते हैं ।

सं छात्र समस्याएं एवं शिक्षा विकास -

सारणी संख्या 3:9

==--==--==--==--==--

छात्र समस्याएं एवं शिक्षा विकास

==--==--==--==--==--

तहसील	पूर्णांक प्राप्तान्क प्रतिशत मध्यांक				प्राप्तान्को का श्रेणीवार विभाजन		
					निम्न स्तर	शामान्य स्तर	उच्च स्तर
					0 - 1.60	1.61 3.20	3.21 5.00

गिरवा	150	116	77.3	3.86	-	-	3.86
काहोल	150	92	61.3	3.06	-	3.06	-
सलुम्बर	150	95	63.3	3.16	-	3.16	-
खेरवाड़ा	150	69	46	2.30	-	2.30	-
कोटड़ा	150	92	61.3	3.06	-	3.06	-
सरवाड़ा	150	71	47.3	2.36	-	2.36	-
धीरियावद	150	78	52	2.60	-	2.60	-

सारणी संख्या 3:9 में जनजाति के बालकों के समस्याओं के प्राप्तांकों को दर्शाया गया है ।

उपरोक्त सारणी के अनुसार पंचायत समिति गिरवा के अध्यापकों की अधिकतम अभिवृत्ति 77.3% प्राप्त हुई जबकि सबसे कम अभिवृत्ति 46% खेरवाड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों की प्राप्त हुई ।

प्राप्तांकों की आवृत्ति सारणी देखने से ज्ञात होता है कि ाड़ोल, सलुम्बर, खेरवाड़ा, कोटड़ा, सराड़ा, धीरवावद पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक सामान्य श्रेणी में तथा गिरवा पंचायत समिति के अध्यापकों का प्राप्तांक उच्च स्तर की श्रेणी में प्राप्त हुए ।

इससे निष्कर्ष निकलता है कि सभी पंचायत समिति के अध्यापकों की राय अनुसार बालकों की समस्याओं के प्रति ध्यान नहीं दिया जाता है, जिससे बालकों में असंतोष रहता है ।

द। छात्रावासों की सुरक्षा व्यवस्था -

सारणी संख्या 3:10
=====

छात्रावासों की सुरक्षा व्यवस्था एवं शिक्षा विकास =====

तहसील	पूर्णांक प्राप्तांक प्रतिशत मध्यांक प्राप्तांक का औसत				विभाजन		
					निम्न	सामान्य	उच्च
					स्तर	स्तर	स्तर
					0 -	1.61	3.21
					1.60	3.23	5.00

गिरवा	150	110	78.3	3.66	-	-	3.66
झाड़ोल	150	99	66	3.30	-	-	3.30
सतुम्बर	150	96	64	3.20	-	3.20	-
खेरवाड़ा	150	85	56.6	2.83	-	2.83	-
कोटड़ा	150	95	63.3	3.16	-	3.16	-
सराड़ा	150	90	60	3.00	-	3.00	-
धीरयावद	150	85	56.6	2.83	-	2.83	-

सारणी संख्या 3:10 में जनजाति छात्रों के छात्रावासों में छात्र/छात्राओं की सुरक्षा के अभाव के कारण छात्रों में पढ़ने में रुचि नहीं रहती है । प्राप्तियों को दर्शाया गया है ।

उपरोक्त सारणी अनुसार पंचायत समिति गिरवा के अध्यापकों की अधिकतम अभिवृत्ति 73.3% प्राप्त हुई जबकि सबसे कम अभिवृत्ति 56.6 व 56.6 खेरवाड़ा व धीरवावद पंचायत समिति के अध्यापकों की प्राप्त हुई ।

प्राप्तियों की आवृत्ति सारणी देखने से ज्ञात होता है कि सलुम्बर, खेरवाड़ा, कोटड़ा, सराड़ा, धीरवावद पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक सामान्य श्रेणी में तथा गिरवा व काङ्गोल पंचायत समिति के अध्यापकों का प्राप्तांक उच्च स्तर की श्रेणी में प्राप्त हुए ।

इससे निष्कर्ष निकलता है कि सभी पंचायत समिति के अध्यापकों की राय अनुसार जनजाति के छात्रावासों में छात्र/छात्राओं की सुरक्षा अभाव है जिससे छात्र पढ़ने में रुचि नहीं लेते हैं ।

स। छात्रावास एवं भोजन व्यवस्था

सारणी संख्या 3:11

छात्रावास की भोजन व्यवस्था एवं शिक्षा विकास

तहसील	पूर्णक प्राप्तिक प्रतिशत मध्यांक				प्राप्तिको का श्रेणीवार विभाजन		
					निम्न स्तर	सामान्य स्तर	उच्च स्तर
					0 - 1.60	1.61 3.20	3.21 5.00
गिरवा	150	114	76.00	3.80	-	-	3.80
भाड़ोल	150	98	78.00	3.90	-	-	3.23
सलुम्बर	150	117	78.00	3.90	-	-	3.90
खेरवाड़ा	150	98	65.3	3.26	-	-	3.26
कोटड़ा	150	92	61.3	3.06	-	3.06	-
सराड़ा	150	108	72.00	3.60	-	-	3.60
धीरियावद	150	115	76.60	3.83	-	-	3.83

सारणी संख्या 3:11 में जनजाति के छात्रों को दिया जाने वाला भोजन व अन्य खाद्य सामग्री घोटिया किस्म का व पर्याप्त नहीं देने के प्राप्तांकों को दर्शाया गया है ।

उपरोक्त सारणी के अनुसार प्रंघायत समिति धरियावद के अध्यापकों की अधिकतम अभिवृत्ति 76.6 प्रतिशत प्राप्त हुई जबकि सबसे न्यून अध्यापकों की अभिवृत्ति 61.3 प्रतिशत कोटडा प्रंघायत के अध्यापकों की प्राप्त हुई ।

प्राप्तांकों की आवृत्ति सारणी देखने से यह भी ज्ञात होता है कि कोटडा प्रंघायत समिति के अध्यापकों का प्राप्तांक सामान्य श्रेणी में रूधा गिरवा, आहोल, सलुम्बर, खेरवाड़ा, तराड़ा व धरियावद प्रंघायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक उच्च श्रेणी में प्राप्त हुए ।

इससे निष्कर्ष निकलता है कि सभी प्रंघायत समिति के अध्यापकों की राय के अनुसार जनजाति के छात्रों को दिया जाने वाला भोजन व अन्य खाद्य सामग्री घोटिया किस्म का व पर्याप्त नहीं होने से छात्र में असंतोष पाया गया ।

4। अध्ययन क्षेत्र : =====

जनजाति वर्ग में जन्म जात गुण, प्राप्त अवसर एवं सुविधाएँ और शिक्षा विकास -

जनजाति वर्ग, सामान्य वर्ग से कई दृष्टि से भिन्न हैं । इनमें सामाजिक, आर्थिक, मनोवैज्ञानिक और यहाँ तक कि जननीक विभिन्नताएँ पाई जाती हैं । इस अध्ययन बिन्दु में इनके जन्मजाति गुणों के आधार पर शिक्षा विकास की गति, प्राप्त अवसर एवं सुविधाएँ और इनका उपयोग करके शिक्षा विकास करना आदि पर अध्ययन बिन्दुओं का निर्माण किया गया है जो इस प्रकार हैं -

- अ। जनजाति वर्ग में जन्मजात गुण एवं शिक्षा विकास ।
- ब। उचित अवसर एवं सुविधाएँ तथा शिक्षा विकास ।
- स। छात्रावासों में रोजगार सम्बन्धी प्रशिक्षण एवं शिक्षा विकास
- द। उपरोक्त तीनों अध्ययन बिन्दुओं के लिए अलग-अलग तारीफियों का निर्माण करके विश्लेषण किया गया है ।

अ॥ जनजाति वर्ग में जन्मजात गुण एवं शिक्षा विकास -

अध्यापकों की अभिवृत्ति के इस बिन्दु से सम्बन्धित
प्राप्तांको को सारणी संख्या 3:12 में दर्शाया गया है ।

सारणी संख्या 3:12

जनजाति वर्ग में जन्मजात गुण एवं शिक्षा विकास

तद्वर्तीत पूर्णांक प्राप्तांक प्रतिशत मध्यांक प्राप्तांको का भेगीवार
विभाजन

निम्न स्तर	सामान्य स्तर	उच्च स्तर
0 - 1.60	1.61 3.20	3.21 5.00

गिरवा	150	124	92.6	4.13	-	-	4.13
बाहोत	150	98	65.3	3.23	-	-	3.22
सहम्बर	150	126	84.00	4.20	-	-	4.20
छेरवाहा	150	91	60.6	3.03	-	3.03	-
कोटहा	150	94	62.6	3.13	-	3.13	-
सराहा	150	118	78.6	3.93	-	-	3.93
धीरयावद	150	111	74.00	3.70	-	-	3.70

सारणी संख्या 3:12 के अनुसार पंचायत समिति गिरवा के अध्यापकों की अधिकतम अभ्युक्ति 92.6 प्रतिशत प्राप्त हुई जबकि सबसे न्यून 60.6 प्रतिशत खेरवाड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों की प्राप्त हुई ।

प्राप्तांको की आवृत्ति देखने से ज्ञात होता है कि खेर-वाड़ा व कोटड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों को प्राप्तांक सामान्य श्रेणी में तथा गिरवा, आड़ोल, सवुम्बर, सराड़ा, व धरियावद पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक उच्चस्तर श्रेणी में प्राप्त हुए ।

उक्त प्राप्तांको से यह निष्कर्ष निकलता है कि सभी पंचायत समिति के अध्यापकों की राय के अनुसार जनजाति के छात्रों में जन्मजात गुण शिक्षा के विकास में किसी सीमा तक बाधक तत्व के रूप में विद्यमान हैं ।

८१ जनजाति वर्ग को उचित अवसर एवं सुविधाएँ तथा

शिक्षा विकास -

सारणी संख्या 3:13

जनजाति वर्ग को उचित अवसर एवं सुविधाएँ तथा

शिक्षा विकास -

तहसील पूर्णांक प्राप्तोंक प्रतिशत मध्यांक प्राप्तोंक का श्रेणीवार विभाजन							
					निम्न स्तर	सामान्य स्तर	उच्च स्तर
					0 - 1.60	1.61 3.20	3.21 5.00
मिरवा	150	112	74.6	3.73	-	-	3.73
बाहोल	150	117	78.6	3.90	-	-	3.90
सलुम्बर	150	131	87.3	4.36	-	-	4.36
खेरवाडा	150	106	70.6	3.53	-	-	3.53
कोटडा	150	95	63.3	3.16	-	3.16	-
सराडा	150	103	68.6	3.43	-	-	3.43
धीरयावद	150	110	73.3	3.66	-	-	3.66

सारणी संख्या 3:13 उचित अवसर एवं सुविधार्थ मिले तो जनजाति के छात्र अन्य छात्रों में आगे निकल सकते हैं ।
प्राप्तांकों को दर्शाया गया है ।

उपरोक्त सारणी के अनुसार पंचायत समिति सलुम्बर के अध्यापकों की अधिकतम अभिवृत्ति 87.3 प्रतिशत प्राप्त हुई जबकि सबसे कम अभिवृत्ति 63.3 प्रतिशत कोटडा पंचायत समिति के अध्यापकों की प्राप्त हुई ।

प्राप्तांकों की आवृत्ति सारणी देखने से ज्ञात होता है कि कोटडा पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक समान्य श्रेणी में तथा गिरवा, आड़ोल, सलुम्बर, खेरवाडा, सराडा, धीरयावद पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक उच्च स्तर की श्रेणी में प्राप्त हुए ।

इससे निष्कर्ष निकलता है कि सभी पंचायत समिति के अध्यापकों की राय अनुसार भी उचित अवसर व सुविधार्थ मिले तो जनजाति के छात्र अन्य छात्रों से आगे निकल सकते हैं ।

सं छात्रावासों में रोजगार प्रशिक्षण एवं शिक्षा विकास -

सारणी संख्या 3:14
=====

छात्रावासों में रोजगार प्रशिक्षण एवं शिक्षा विकास
=====

तहसील	पूर्णांक प्राप्तार्थक प्रतिशत मध्यार्थक प्राप्तार्थको का क्षेत्रीयार				विभाजन		
					निम्न स्तर	सामान्य स्तर	उच्च स्तर
					0 - 1.50	1.61 3.20	3.21 5.00

गिरवा	150	122	81.3	4.06	-	-	4.06
जाहोल	150	128	85.3	4.26	-	-	4.26
तलुम्बर	150	131	77.3	4.36	-	-	4.36
बेरवाडा	150	112	74.6	3.73	-	-	3.73
कोटडा	150	92	61.3	3.03	-	3.03	-
सराडा	150	100	86.6	4.33	-	-	4.33
धीरयावद	150	141	94	4.93	-	-	4.93

सारणी संख्या 3:14 में जनजाति के छात्रों को कुर्टर उद्योगों व परम्परागत उद्योगों का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए के प्राप्तांकों को दर्शाया गया है ।

उपरोक्त सारणी के अनुसार पंचायत समिति धीरवावद के अध्यापकों की अधिकतम अभिरूति 94 प्रतिशत प्राप्त हुई जबकि सबसे न्यून अभिरूति 61.3 प्रतिशत कोटडा पंचायत समिति के अध्यापकों की प्राप्त हुई ।

प्राप्तांकों की आसृति सारणी देखने से ज्ञात होता है कि जाड़ोल सलुम्बर, गिरवा, खेरवाड़ा, सराड़ा, धीरवावद पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक उच्च स्तर की श्रेणी में तथा कोटडा पंचायत समिति के अध्यापकों का प्राप्तांक सामान्य श्रेणी में प्राप्त हुई ।

इससे निष्कर्ष निकलता है कि सभी पंचायत समिति के अध्यापकों की राय अनुसार छात्रावासों में कुर्टर उद्योगों व परम्परागत उद्योगों का प्रशिक्षण देना चाहिए ।

5॥ अध्ययन क्षेत्र :

जनजाति वर्ग की पारिवारिक स्थिति एवं
शिक्षा विकास -

इस अध्ययन क्षेत्र को 7 भागों में बाँटा गया है ।

प्रत्येक अध्ययन बिन्दु पर अलग-अलग सारणीयों को बनाकर
दरतों का विश्लेषण किया गया है । इन बिन्दुओं को नीचे
दर्शाया गया है -

- अ॥ परिवार की आर्थिक स्थिति एवं शिक्षा विकास
- ब॥ पारिवारिक समस्याएँ एवं शिक्षा विकास
- स॥ अभिभावकों में शिक्षा सम्बन्धी बेतना एवं शिक्षा विकास
- द॥ पारिवारिक उन्नति एवं शिक्षा विकास
- प॥ परिवार में पढ़ने की साधा सुविधाएँ एवं शिक्षा विकास
- र॥ परिवार में वैश्विक मार्ग दर्शन एवं शिक्षा विकास

अ॥ जनजाति परिवार की आर्थिक स्थिति एवं
शिक्षा विकास -

सारणी संख्या 3:15
=====

जनजाति वर्ग के परिवार की आर्थिक स्थिति एवं
शिक्षा विकास -

तहसील	पूर्णक प्राप्तिक प्रतिशत मध्यमक				प्राप्तांक का श्रेणीवार विभाजन		
					निम्न स्तर	सामान्य स्तर	उच्च स्तर
					0 - 1.60	1.61 3.20	3.21 5.00
मिरवा	150	120	80.00	4.00	-	-	4.00
आड़ोल	150	118	78.6	3.93	-	-	3.93
समुच्चर	150	121	80.6	4.03	-	-	4.03
खेखाड़ा	150	83	55.3	2.76	-	2.76	-
कोटड़ा	150	95	63.3	3.16	-	3.16	-
सराड़ा	150	107	71.3	3.56	-	-	3.56
धीरथावद	150	100	72.00	3.60	-	-	3.60

सारणी संख्या 3:15 में जनजाति के छात्रों के परिवार की आर्थिक स्थिति के सुधारने की सरकार जब तक व्यवस्था नहीं करेगी तब तक वे छात्र विद्यालय में नहीं आयेगें के प्राप्तांकों को दर्शाया गया है ।

उपरोक्त सारणी के अनुसार पंचायत समिति तल्लुम्बर के अध्यापकों की अधिकतम अभिरूति 80.6 प्रतिशत प्राप्त हुई जबकि सबसे कम अभिरूति 55.3 प्रतिशत खेरवाड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों की प्राप्त हुई ।

प्राप्तांकों की अपरति सारणी देखने से ज्ञात होता है कि खेरवाड़ा, कोटड़ा, पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक सामान्य श्रेणी में तथा गिरवा, हाड़ोल, तल्लुम्बर, सराड़ा, परियावद पंचायत समिति के अध्यापकों का प्राप्तांक उच्च स्तर की श्रेणी में प्राप्त हुए ।

इससे निष्कर्ष निकलता है कि सभी पंचायत समिति के अध्यापकों की राय अनुसार जनजाति के छात्रों के परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने पर ही यह अधिक संख्या में विद्यालय आयेगें ।

क॥ पारिवारिक समस्याएँ एवं शिक्षा विकास -

सारणी संख्या 3:16

जनजाति की पारिवारिक समस्याएँ एवं शिक्षा विकास

तहसील	पूर्णांक	प्राप्तांक	प्रतिशत मध्यांक	प्राप्तांको का औसत	विभाजन		
					निम्न स्तर	सामान्य स्तर	उच्च स्तर
					0 - 1.60	1.61 3.20	3.21 5.00
गिरवा	150	120	80.0	4.0	-	-	4.00
भाड़ोल	150	107	71.3	3.56	-	-	3.56
समुन्दर	150	121	80.6	4.03	-	-	4.03
खेरवाड़ा	150	90	60.0	3.00	-	-	3.00
कोटड़ा	150	95	63.3	3.16	-	3.16	-
सरठाड़ा	150	102	68.0	3.40	-	-	3.40
धीरयावद	150	108	72.0	3.60	-	-	3.60

सारणी संख्या 3:16 में परिवारिक समस्याओं का निदान होने पर ही विद्यालय में पढ़ाई कर सकेंगे के प्राप्तांकों को दर्शाया गया है ।

उपरोक्त सारणी के अनुसार पंचायत समिति सलुम्बर के अध्यापकों की अधिकतम औसति 80.6 प्राप्त हुई जबकि सबसे कम औसति 60 प्रतिशत जेरवाड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों की प्राप्त हुई । प्राप्तांकों की आवृत्ति सारणी देखने से ज्ञात होता है कि जेरवाड़ा व कोटड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक सामान्य श्रेणी में तथा गिरवा, झाड़ोल सलुम्बर, सराड़ा, घोरणापद के अध्यापकों का प्राप्तांक उच्च स्तर की श्रेणी में प्राप्त हुई ।

इससे निष्कर्ष निकलता है कि सभी पंचायत समिति के अध्यापकों की राय अनुसार जनजाति छात्रों के परिवारिक समस्याओं का निदान होने पर ही विद्यालय में पढ़ाई कर सकेंगे ।

सं॥ अधिभावकों में शिक्षा सम्बन्धी वेतना एवं शिक्षा विकास-

सारणी संख्या 3:17

शिक्षा सम्बन्धी वेतना एवं शिक्षा विकास

तहसील	पूर्णांक	प्राप्तांक	प्रतिशत मध्यमंक	प्राप्तांको का श्रेणीवार विभाजन			
				निम्न स्तर	सामान्य स्तर	उच्च स्तर	
				0 - 1.60	1.61 3.20	3.21 5.00	
गिरवा	150	134	86.6	4.56	-	-	4.56
शहोल	150	112	74.6	3.73	-	-	3.73
सलुम्बर	150	133	88.6	4.53	-	-	4.53
खेरवाड़ा	150	101	67.3	3.36	-	-	3.36
कोटड़ा	150	95	63.3	3.16	-	3.16	-
सरवाड़ा	150	132	88.0	4.50	-	-	4.50
धीरयावद	150	138	92.0	4.83	-	-	4.83

सारणी संख्या 3:17 में जनजाति छात्रों के माता-पिता को शिक्षा के महत्व से जब तक अवगत नहीं कराया जावेगा तक तक वे बच्चों को पढ़ने नहीं भेजेंगे । के प्राप्तांकों को दर्शाया गया है ।

उपरोक्त सारणी के अनुसार पंचायत समिति धरियावद के अध्यापकों की अधिकतम अभ्युक्ति 92 प्रतिशत प्राप्त हुई जबकि सबसे कम अभ्युक्ति 63.3 प्रतिशत खेरवाडा कोटडा पंचायत समिति के अध्यापकों की प्राप्त हुई ।

प्राप्तांकों की आवृत्ति सारणी देखने से ज्ञात होता है कि कोटडा पंचायत समिति के अध्यापकों का प्राप्तांक सामान्य श्रेणी में तथा गिरया, जाहोत, सलुम्बर, खेरवाडा, सराडा, धरियावद पंचायत समिति के अध्यापकों का प्राप्तांक उच्च स्तर की श्रेणी में प्राप्त हुए ।

इससे निष्कर्ष निकलता है कि सभी पंचायत समिति के अध्यापकों की राय अनुसार जनजाति छात्रों के माता-पिता को शिक्षा के महत्व को बताना आवश्यक है तभी नामांकन में वृद्धि हो सकती है ।

द॥ पारिवारिक उन्नति एवं शिक्षा विकास -

सारणी संख्या 3:18

=====

पारिवारिक उन्नति एवं शिक्षा विकास

=====

तहसील	पूर्णांक	प्राप्तांक	प्रतिशत	मध्यांक	प्राप्तांको का औषीवार विभाजन		
					निम्न स्तर	सामान्य स्तर	उच्च स्तर
					0 - 1.60	1.61 3.20	3.21 5.00
गिरवा	150	126	84.1	4.20	-	-	4.20
झाड़ोल	150	122	81.3	4.06	-	-	4.06
सलुम्बर	150	125	83.3	4.16	-	-	4.16
छेरवाड़ा	150	99	66.0	3.30	-	-	3.30
कोटड़ा	150	94	62.6	3.13	-	3.13	-
सराड़ा	150	131	87.3	4.43	-	-	4.43
धीरवागढ़	150	115	76.6	3.83	-	-	3.83

सारणी संख्या 3:18 में जनजाति के छात्रों की आर्थिक स्थिति सुधारने हेतु अधिक से अधिक साधन जुटाना चाहिए के प्राप्तांको को दर्शाया गया है ।

उपरोक्त सारणी के अनुसार प्रंयायत समिति सराड़ा के अध्यापकों की अधिकतम अभिवृत्ति 87.3 प्रतिशत प्राप्त हुई जबकि सबसे कम अभिवृत्ति 62.6 प्रतिशत कोटड़ा प्रंयायत समिति के अध्यापकों की प्राप्त हुई । प्राप्तांको की आवृत्ति सारणी देखने से ज्ञात होता है कि कोटड़ा प्रंयायत समिति के अध्यापकों का प्राप्तांक सामान्य श्रेणी में तथा गिरवा, झाड़ोल, सतुम्बर, छेरवाड़ा, सराड़ा, धीरपावद प्रंयायत समिति के अध्यापकों का प्राप्तांक उच्च स्तर की श्रेणी में प्राप्त हुए ।

अससे निष्कर्ष निकलता है कि सभी प्रंयायत समिति के अध्यापकों की राय अनुसार जनजाति के छात्रों की आर्थिक स्थिति सुधारने हेतु अधिक से अधिक साधन जुटाना आवश्यक है ।

प। परिवार में पढ़ने की साधन सुविधाएँ एवं शिक्षा विकास -

सारणी संख्या 3:19

=====

परिवार में पढ़ने की साधन सुविधाएँ एवं शिक्षा विकास

=====

तहसील	वृषिक प्राप्तिक प्रतिवस्त मध्यांक				प्राप्तियों का त्रेणीवार विभाजन		
					निम्न स्तर	सामान्य स्तर	उच्च स्तर
					0 - 1.60	1.61 3.20	3.21 5.00
गिरवा	150	124	82	4.13	-	-	4.13
झाड़ोल	150	108	72	3.60	-	-	3.60
समुम्बर	150	124	82.6	4.13	-	-	4.13
खेरवाड़ा	150	91	60.6	3.03	-	3.03	-
कोटड़ा	150	93	62.0	3.10	-	3.10	-
सराड़ा	150	95	63.3	3.16	-	3.16	-
धीरयावद	150	113	75.3	3.76	-	-	3.76

सारणी संख्या 3:19 में जनजाति के बालको को घर पर पढ़ने की सुविधाएँ उपलब्ध कराई जानी चाहिए के प्राप्तांको को दर्शाया गया है ।

उपरोक्त सारणी के अनुसार प्रंयायत समिति सलुम्बर के अध्यापकों की अधिकतम अभिवृति 82.6 प्राप्त हुई जबकि सबसे न्यून अभिवृति 60.6 प्रतिशत छेरवाड़ा प्रंयायत समिति के अध्यापकों की प्राप्त हुई ।

प्राप्तांको की आवृति सारणी देखने से ज्ञात होता है कि छेरवाड़ा, कोटड़ा, सराड़ा प्रंयायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक सामान्य श्रेणी में तथा गिरवा, जाड़ोल, सलुम्बर, धीरयादद प्रंयायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक उच्च स्तर की श्रेणी में प्राप्त हुए ।

इससे निष्कर्ष निकलता है कि अधिकतम प्रंयायत समिति के अध्यापकों की राय अनुसार यदि जनजाति के बालको को घर पर पढ़ने की सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाये तो बालको का शैक्षिक विकास अधिक हो सकता है ।

र॥ परिवार में शैक्षिक सुविधाएँ एवं शिक्षा विकास -

सारणी संख्या ३:२०

परिवार सुविधाएँ एवं शिक्षा विकास

तहसील पूर्णक प्राप्तांक प्रतिशत मध्यांक प्राप्तांको का श्रेणीवार विभाजन

निम्न स्तर सामान्य स्तर उच्च स्तर

0 - 1.60 1.61 3.20 3.21 5.00

गिरवा	150	136	90.6	4.73	-	-	4.73
आड़ोल	150	111	74.0	3.70	-	-	3.70
सलुम्बर	150	120	80.3	4.26	-	-	4.26
खेरवाड़ा	150	106	70.6	3.53	-	-	3.53
कोटड़ा	150	95	63.3	3.16	-	3.16	-
सराड़ा	150	111	74.0	3.70	-	-	3.70
धीरयावद	150	119	79.3	3.96	-	-	3.96

सारणी संख्या 3:20 में जनजाति छात्रों के घर पर पढ़ने की सुविधाएं न होने से इनका शैक्षिक विकास नहीं हो पा रहा है । प्राप्तियों को दर्शाया गया है ।

उपरोक्त सारणी के अनुसार प्रवायत समिति गिरवा के अध्यापकों की अधिकतम अभिवृत्ति 90.6 प्राप्त हुई जबकि सबसे न्यून अभिवृत्ति 63.3 कोटड़ा प्रवायत समिति के अध्यापकों की प्राप्त हुई ।

प्राप्तियों की आवृत्ति सारणी देखने से ज्ञात होता है कि कोटड़ा प्रवायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तार्थ सामान्य श्रेणी में तथा गिरवा, काहोल, सलुम्बर, सराहा, धीरयावद, प्रवायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तार्थ उच्च स्तर की श्रेणी में प्राप्त हुए ।

इससे निष्कर्ष निकलता है कि सभी प्रवायत समिति के अध्यापकों अनुसार यदि जनजाति छात्रों के घर पर पढ़ने की सुविधाएं न होने में इनका शैक्षिक विकास नहीं हो पा रहा है ।

ल॥ शैक्षिक मार्ग दर्शन एवं शिक्षा विकास -

सारणी संख्या 3:21

शैक्षिक मार्ग दर्शन एवं शिक्षा विकास

तहसील	पूर्णक प्राप्तार्क प्रतिशत मध्यांक				प्राप्तार्क का श्रेणीवार विभाजन		
					निम्न स्तर	सामान्य स्तर	उच्च स्तर
					0 - 1.60	1.61 - 3.20	3.21 - 5.00
गिरवा	150	124	82	4.13	-	-	4.13
बाहोल	150	111	74	3.70	-	-	3.70
सलुम्बर	150	134	90	4.56	-	-	4.56
छेरवाहा	150	101	77.3	3.36	-	-	3.36
कोटडा	150	95	63.3	3.16	-	3.16	-
सराडा	150	113	75.3	3.76	-	-	3.76
धीरयावद	150	128	85.3	4.26	-	-	4.26

7 सारणी संख्या 3:2। में जनजाति छात्रों को शैक्षिक मार्ग दर्शन न मिलने से उनका शैक्षिक विकास नहीं हो रहा है । प्राप्तांकों को दर्शाया गया है ।

उपरोक्त सारणी के अनुसार प्रंचायत समिति सलुम्बर के अध्यापकों की अधिकतम अभिवृत्ति 90 प्रतिशत प्राप्त हुई जबकि सबसे कम अभिवृत्ति 63.3 कोटड़ा प्रंचायत समिति के अध्यापकों की प्राप्त हुई ।

प्राप्तांकों की आवृत्ति सारणी देखने से ज्ञात होता है कि कोटड़ा प्रंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक सामान्य श्रेणी में तथा गिरवा, आड़ोल, सलुम्बर, खेरवाड़ा, सराड़ा व धीरयावद प्रंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक उच्च स्तर की श्रेणी में प्राप्त हुए ।

इससे निष्कर्ष निकलता है कि सभी प्रंचायत समिति के अध्यापकों की राय अनुसार यदि जनजाति छात्रों को उचित शैक्षिक मार्ग दर्शन मिले तो उनका शैक्षिक विकास हो सकता है ।

6॥ अध्ययन क्षेत्र :

सरकारी सुविधाएँ और शैक्षिक विकास -

सरकारी सुविधाएँ की जानकारी, छात्रवृत्ति के प्रकार एवं मात्रा, छात्रावास भोजन, छात्रावास की विभिन्न सुविधाएँ पाठ्य सहगामी प्रवृत्तियाँ, विद्यालय समय, स्वरोजगार शिक्षा का पाठ्यक्रम, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक प्रवृत्तियाँ, और विकित्सा सुविधाएँ आदि सभी को सरकारी सुविधाओं की श्रेणी में लिया गया है । इन्हें 9 अध्ययन बिन्दुओं में बाँटा गया है जो इस प्रकार हैं :-

- अ॥ सुविधाओं की जानकारी एवं शिक्षा विकास
- ब॥ छात्रवृत्ति एवं शिक्षा विकास
- स॥ छात्रावासों का भोजन एवं शिक्षा विकास
- द॥ छात्रावासों की विभिन्न आवश्यक सुविधाएँ एवं शिक्षा विकास
- य॥ छात्रावासों में पाठ्य सहगामी प्रवृत्तियाँ एवं शिक्षा विकास
- श्री॥ विद्यालय समय एवं शिक्षा विकास

- ल॥ विद्यालय अवकाश समय एवं शिक्षा विकास
व॥ विद्यालयों में स्वरोजगार शिक्षा एवं शिक्षा विकास
अ॥ विद्यालयों में सांस्कृतिक एवं साहित्यिक प्रवृत्तियाँ
एवं शिक्षा विकास
स॥ छात्रावासों में विकित्सा सुविधा और शिक्षा विकास
अ॥ सुविधाओं की जानकारी एवं शिक्षा विकास

सारणी संख्या ३:२२

सरकारी सुविधाओं की जानकारी एवं शैक्षिक विकास

तहसील	पूर्णक प्राप्तक प्रतिशत मध्यांक				प्राप्तकों का श्रेणोवार विभाजन		
					निम्न स्तर	सामान्य स्तर	उच्च स्तर
					0 - 1.60	1.61 3.20	3.21 5.00

गिरवा	150	126	84.0	4.20	-	-	4.20
झाड़ोल	150	96	64.0	3.20	-	3.20	-
सलुम्बर	150	112	74.6	3.73	-	-	3.73
खेरवाड़ा	150	99	60.8	3.30	-	-	3.30
कोटड़ा	150	91	60.6	3.03	-	3.03	-
सराड़ा	150	97	64.6	3.23	-	-	3.23
धीरयावद	150	110	73.3	3.66	-	-	3.66

सारणी संख्या 3:22 में जनजाति के छात्रों को सरकारी सुविधाओं की जानकारी के सम्बन्ध में प्राप्त दत्तों को दर्शाया गया है ।

उक्त सारणी के अनुसार पंचायत समिति गिरवा के अध्यापकों की अधिकतम अभिवृत्ति 84 प्रतिशत प्राप्त हुई जबकि सबसे न्यून अभिवृत्ति 60.6 प्रतिशत कोटड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों को प्राप्त हुई ।

प्राप्ताकों की आवृत्ति से ज्ञात होता है कि कोटड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक सामान्य श्रेणों में तथा गिरवा, साइत, सलुम्बर, खेरवाड़ा, सराड़ा, व धीर-याचद पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक उच्च स्तर की श्रेणों में प्राप्त हुए । इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सभी पंचायत समितियों के अध्यापकों की राय में जनजाति के छात्रों के शैक्षिक विकास न होने का एक कारण इन्हें सरकारी सुविधाओं की जानकारी नहीं होना है ।

ब। छात्रपूति एवं शैक्षिक विकास

सारणी संख्या 3:23

=====

छात्रपूति एवं शैक्षिक विकास

=====

तहसील	पूर्णांक प्राप्तार्क प्रतिशत मध्यांक प्राप्तार्क का श्रेणीवार विभाजन						
					निम्न स्तर	सामान्य स्तर	उच्च स्तर
					0 - 1.60	1.61 3.20	3.21 5.00
गिरवा	150	118	78.6	3.93	-	-	3.93
काङ्गोत	150	93	62.0	3.10	-	3.10	-
सहम्बर	150	93	62.0	3.10	-	3.10	-
छेरवाडा	150	106	70.6	3.53	-	-	3.53
कोटडा	150	84	56.0	2.80	-	2.80	-
तराडा	150	104	69.3	3.46	-	-	3.46
धीरयावद	150	111	74.0	3.70	-	-	3.70

सारणी संख्या 3:23 में सरकार द्वारा दी जाने वाली छात्रवृत्ति इतनी कम है कि पढ़ाई का खर्च पूरा नहीं होता है ।
के प्राप्तांको को दर्शाया गया है ।

उपरोक्त सारणी के अनुसार पंचायत समिति गिरवा के ४ अध्यापकों की अधिकतम अभिवृत्ति 78.6 प्रतिशत प्राप्त हुई जबकि सबसे कम अभिवृत्ति 56 प्रतिशत कोटड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों की प्राप्त हुई ।

प्राप्तांको को आवृत्ति सारणी देखने से ज्ञात होता है कि आड़ोल, सलुम्बर, कोटड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक सामान्य श्रेणी में तथा गिरवा, छेरवाड़ा, सराड़ा, धीरबावद पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक उच्च स्तर की श्रेणी में प्राप्त हुए ।

इससे निष्कर्ष निकलता है कि सभी पंचायत समिति के अध्यापकों की राय अनुसार यदि सरकार द्वारा दी जाने वाली छात्रवृत्ति कम है जिससे पढ़ाई का खर्च पूरा नहीं होता है ।

सं छात्रावासों का भोजन एवं शिक्षा विकास -

सारणी संख्या 3:24

=====

छात्रावासों का भोजन एवं शिक्षा विकास

=====

सहस्री	पूर्णांक प्राप्तांक प्रतिशत मध्यांक				प्राप्तांकों का त्रैणीवार विभाजन		
					निम्न स्तर	सामान्य स्तर	उच्च स्तर
					0 - 1.60	1.61 3.20	3.21 5.00

गिरवा	150	112	74.6	3.73	-	-	3.73
झाड़ोत	150	89	59.3	2.96	-	2.96	-
सहम्बर	150	117	78.0	3.90	-	-	3.90
खेरवाड़ा	150	81	54.0	2.70	-	2.70	-
कोटड़ा	150	88	58.6	2.93	-	2.93	-
सराड़ा	150	89	59.3	2.96	-	2.96	-
धीरयावद	150	106	70.6	3.53	-	-	3.53

सारणी संख्या 3:24 में छात्रावासों में भोजन घंटियाँ हैं । के प्राप्तांको को दर्शाया गया है ।

उपरोक्त सारणी के अनुसार पंचायत समिति गिरवा के अध्यापकों की अधिकतम अभिवृत्ति 74.6 प्रतिशत प्राप्त हुई जबकि सबसे न्यून अभिवृत्ति 54 प्रतिशत छेरवाड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों की प्राप्त हुई ।

प्राप्तांको की आधुनिक सारणी देखने से ज्ञात होता है कि छेरवाड़ा, काझोल, कोटड़ा, सराड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक सामान्य श्रेणी, में तथा गिरवा, सलुम्बर धरियावद पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक उच्च स्तर की श्रेणी में प्राप्त हुए ।

इससे निष्कर्ष निकलता है कि अधिकतर पंचायत समिति के अध्यापकों की राय अनुसार जनजाति के छात्रावासों में भोजन घंटियाँ किस्म का हैं ।

द। छात्रावासों की विभिन्न आवश्यक सुविधाएँ एवं

शिक्षा विकास

सारणी संख्या 3:25

=====

छात्रावासों की विभिन्न आवश्यक सुविधाएँ एवं

=====

शिक्षा विकास

=====

तहसील	पूणिक प्राप्तिक प्रतिशत मध्यांक				प्राप्तांको का श्रेणीवार विभाजन		
					निम्न स्तर	सामान्य स्तर	उच्च स्तर
					0 - 1.60	1.61 3.20	3.21 5.00
गिरवा	150	122	81.3	4.06	-	-	4.06
झाड़ोल	150	101	67.3	3.36	-	-	3.36
सबुम्बर	150	121	80.6	4.03	-	-	4.03
खेरवाड़ा	150	96	64.0	3.20	-	3.20	-
कोटड़ा	150	94	62.6	3.13	-	3.13	-
तराड़ा	150	106	70.6	3.53	-	-	3.53
धीरवावद	150	116	77.3	3.86	-	-	3.86

सारणी संख्या 3:25 में छात्रावासों में जब तक प्रकाश, पानी, तथा पक्के कमरों की व्यवस्था नहीं होगी, इनका शैक्षिक विकास सम्भव नहीं है के प्राप्तांको को दर्शाया गया है ।

उपरोक्त सारणी के अनुसार पंचायत समिति गिरवा के अध्यापकों की अधिकतम अभिवृत्ति 81.3 प्राप्त हुई जबकि सबसे न्यून अभिवृत्ति 62.6 कोटड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों की प्राप्त हुई ।

प्राप्तांको की आवृत्ति सारणी देखने से ज्ञात होता है कि खेरवाड़ा, कोटड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक सामान्य श्रेणी में तथा गिरवा, झाड़ोल, सलुम्बर, सराड़ा व धीरयावद पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक उच्च स्तर की श्रेणी में प्राप्त हुई ।

इसके निष्कर्ष रूप में सभी पंचायत समिति के अध्यापकों की राय अनुसार जनजातिके छात्रों के छात्रावासों में जब तक प्रकाश, पानी तथा पक्के कमरों की व्यवस्था नहीं होगी तब तक इनका शैक्षिक विकास नहीं होगा ।

य॥ पाठ्य सङ्ग्रामी प्रवृत्तियाँ एवं शिक्षा विकास

सारणी संख्या 3:26
=====

पाठ्य सङ्ग्रामी प्रवृत्तियाँ एवं शिक्षा विकास

तद्वर्गीकृत पूर्णांक प्राप्तांक प्रतिशत मध्यांक प्राप्तांक का श्रेणीवार
विभाजन

निम्न स्तर	सामान्य स्तर	उच्च स्तर
0 -	1.61	3.21
1.60	3.20	5.00

गिरवा	150	118	78.6	3.93	-	-	3.93
शहोत	150	99	66.0	3.30	-	-	3.30
सहम्बर	150	120	80.0	4.0	-	-	4.0
छेरवाडा	150	89	59.3	2.96	-	2.96	-
कोटडा	150	89	59.3	2.96	-	2.96	-
सराहा	150	106	70.6	3.53	-	-	3.53
धीरयावद	150	102	68.0	3.40	-	-	3.40

सारणी संख्या 3:26 में जनजाति के छात्रों की खेलकूद की व्यवस्था इतनी अस्तव्यस्थ है कि ये छात्रावासों से हट जाते हैं, के प्राप्तांकों को दर्शाया गया है ।

उपरोक्त सारणी के अनुसार पंचायत समिति सलुम्बर के अध्यापकों की अधिकतम अभिवृत्ति 80 प्रतिशत प्राप्त हुई है । जबकि न्यून अभिवृत्ति 59.3 प्रतिशत खेरवाड़ा, कोटड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों की प्राप्त हुई है ।

प्राप्तांकों की आवृत्ति सारणी देखने से ज्ञात होता है कि खेरवाड़ा व कोटड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक सामान्य श्रेणी में तथा गिरवा, बाड़ोत, सलुम्बर, सराड़ा व धीरयावद पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक उच्च स्तर की श्रेणी में प्राप्त हुए ।

इससे निष्कर्ष निकलता है कि सभी पंचायत समिति के अध्यापकों की राय अनुसार जनजाति के छात्रों के लिए खेलकूद की व्यवस्था अस्तव्यस्थ है । जिससे छात्र हट जाते हैं ।

र॥ विद्यालय समय एवं शिक्षा विकास -

सारणी संख्या 3:27

=====

विद्यालय समय एवं शिक्षा विकास

=====

तहसील	पूर्णांक प्राप्तार्क प्रतिशत मध्यांक				प्राप्तार्को का क्रोडवार विभाजन		
					निम्न स्तर	सामान्य स्तर	उच्च स्तर
					0 - 1.60	1.61 - 3.20	3.21 - 5.00
गिरवा	150	108	72.0	3.60	-	-	3.60
भाड़ोल	150	95	63.3	3.13	-	3.13	-
सलम्बर	150	125	83.3	4.16	-	-	4.16
खेरवाड़ा	150	95	63.3	3.16	-	3.16	-
कोटड़ा	150	95	63.3	3.16	-	3.16	-
तराड़ा	150	96	64.0	3.20	-	3.20	-
धीरयावद	150	125	83.3	4.16	-	-	4.16

सारणी संख्या 3:27 में फसल कटाई के समय छात्र विद्यालय से भाग जाते हैं क्योंकि इनमें छुट्टियां नहीं होती हैं के प्राप्तांकों को दर्शाया गया है ।

उपरोक्त सारणी के अनुसार पंचायत समिति सलुम्बर, धीरयावद, के अध्यापकों की अधिकतम अभिवृत्ति क्रमशः 63.3, 63.3 प्राप्त हुई जबकि सबसे न्यून अभिवृत्ति क्रमशः 63.3 , 63.3 व 63.3 लाडोल, खेरवाड़ा व धीरयावद पंचायत समिति के अध्यापकों को प्राप्त हुई ।

प्राप्तांकों की आवृत्ति सारणी देखने से शत होता है कि लाडोल, खेरवाड़ा, कोटड़ा, सराड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक सामान्य श्रेणी में तथा गिरवा, सलुम्बर धीरयावद पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक उच्च स्तर की श्रेणी में प्राप्त हुए ।

इसके निष्कर्ष निकलता है कि अधिकतर पंचायत समिति के अध्यापकों की राय अनुसार जनजाति के छात्र फसल कटाई के समय छात्र विद्यालय से भाग जाते हैं ।

सं. विद्यालय अवकाश समय एवं शिक्षा विकास

सारणी संख्या 3:2E

विद्यालय अवकाश समय एवं शिक्षा विकास

तहसील	पूर्णांक प्राप्तिक प्रतिशत मर्त्यक				प्राप्तिको का जेगीवार विभाजन		
					निम्न स्तर	सामान्य स्तर	उच्च स्तर
					0 - 1.60	1.61 3.20	3.21 5.00
गिरवा	150	124	82.0	4.13	-	-	4.13
काङ्गोल	150	87	58.0	2.90	-	2.90	-
सह्याय	150	125	83.3	4.16	-	-	4.16
जेरवाडा	150	105	70.0	3.50	-	-	3.50
कोटडा	150	94	62.6	3.15	-	3.13	-
सरडाडा	150	103	68.6	3.43	-	-	3.34
धीर्यावद	150	128	85.3	4.26	-	-	4.26

सारणी संख्या 3:20 में छेत्तों में काम करते समय अगर इन विद्यालयों में अवकाश रहे तो ये छात्र विद्यालय छोड़कर नहीं जावेगें के प्राप्तांकों को दर्शाया गया है ।

उपरोक्त सारणी के अनुसार पंचायत समिति धरियावद के अध्यापकों की अधिकतम अभिवृत्ति 85.3 प्राप्त हुई जबकि सबसे न्यून अभिवृत्ति 58 प्रतिशत आड़ोल पंचायत समिति के अध्यापकों की प्राप्त हुई ।

प्राप्तांकों की आवृत्ति सारणी देखने के बाद होता है कि आड़ोल, कोटड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक सामान्य श्रेणी में तथा गिरवा, सलुम्बर, खेरवाड़ा, सराड़ा, धरियावद पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक उच्च स्तर की श्रेणी में प्राप्त हुए ।

इससे निष्कर्ष निकलता है कि अधिकतर पंचायत समिति के अध्यापकों की राय अनुसार छेत्तों में काम करते समय अगर इन विद्यालयों में अवकाश रहे तो छात्र स्कूल छोड़कर नहीं जावेगें ।

व॥ स्वरोजगार शिक्षा एवं शिक्षा विकास -

सारणी संख्या 3:29

स्वरोजगार शिक्षा एवं शिक्षा विकास

तहसील	पूर्णांक प्राप्तार्क प्रतिशत मध्यांक				प्राप्तार्को का अणीवार विभाजन		
					निम्न स्तर	सामान्य स्तर	उच्च स्तर
					0 - 1.60	1.61 3.20	3.21 5.00
गिरवा	150	136	90.6	4.73	-	-	4.73
बाहोली	150	123	82.0	4.10	-	-	4.10
सबुम्बर	150	124	82.6	4.13	-	-	4.13
छेरवाहा	150	101	77.3	3.36	-	-	3.36
कोटडा	150	95	63.3	3.16	-	3.16	-
तराहा	150	111	74.0	3.70	-	-	3.70
धीरयावद	150	136	90.6	4.73	-	-	4.73

सारणी संख्या 3:29 में जनजाति के छात्रों को स्व-रोजगार की शिक्षा दी जावे तो ये विद्यालय छोड़कर नहीं जावेगें, के प्राप्तांकों को दर्शाया गया है ।

उपरोक्त सारणी के अनुसार प्रंचायत समिति गिरवा व सलुम्बर के अध्यापकों की अधिकतम अभिवृत्ति क्रमशः 90.6 प्रतिशत, 90.6 प्रतिशत प्राप्त हुई तथा सबसे न्यून अभिवृत्ति 63.32/कोटहा प्रंचायत समिति के अध्यापकों की प्राप्त हुई ।

प्राप्तांकों की आवृत्ति सारणी देखने से ज्ञात होता है कि कोटहा प्रंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक सामान्य श्रेणी में तथा गिरवा, सलुम्बर, खेरवाहा, सराहा व धीरवावद प्रंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक उच्च स्तर की श्रेणी में प्राप्त हुए ।

इससे निष्कर्ष निकलता है कि सभी प्रंचायत समिति के अध्यापकों की राय अनुसार अगर छेतों में काम करते समय अगर इन विद्यालयों में अवकाश रहे तो ये छात्र विद्यालय छोड़कर नहीं जावेगें

७१ विद्यालयों में सांस्कृतिक एवं साहित्यिक प्रवृत्तियाँ

एवं शिक्षा विकास -

सारणी संख्या 3:30

=====

विद्यालयों में सांस्कृतिक एवं साहित्यिक प्रवृत्तियाँ

एवं शिक्षा विकास

तहसील	पूर्णांक प्राप्तोंक प्रतिशत मध्यांक				प्राप्तोंक का श्रेणीवार विभाजन		
					निम्न श्रेणी	सामान्य स्तर	उच्च स्तर
					0 - 1.60	1.61 3.20	3.21 5.00

संक्षेप

गिरवा	150	124	82.0	4.13	-	-	4.13
नाडोल	150	127	84.6	4.23	-	-	4.23
सलुम्बर	150	111	74.0	3.70	-	-	3.70
खेरवाड़ा	150	103	68.6	3.43	-	-	3.43
कोटड़ा	150	95	63.3	3.16	-	3.16	-
सराड़ा	150	108	72.0	3.60	-	-	3.60
धीरयावद	150	125	83.3	4.16	-	-	4.16

सारणी संख्या 3:30 में जनजाति के छात्रों को विद्यालय में सांस्कृतिक कार्यक्रमों में इनको कार्य करने की छुट दी जाय तो वे विद्यालय के वातावरण में रम जायें, प्राप्तियों को दर्शाया गया है ।

उपरोक्त सारणी अनुसार प्रंचायत समिति शाहोल के अध्यापकों की अधिकतम अभिवृत्ति 84.6 प्रतिशत प्राप्त हुई जबकि सबसे न्यून 63.3 प्रतिशत कोटड़ा प्रंचायत समिति से प्राप्त हुई ।

प्राप्तियों की आवृत्ति सारणी देखने से ज्ञात होता है कि कोटड़ा प्रंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तिक सामान्य श्रेणी में तथा गिरवा, शाहोल, सलुम्बर, खेरवाड़ा, सराड़ा व धीरवावद प्रंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तिक उच्च स्तर की श्रेणी में प्राप्त हुई ।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सभी प्रंचायत समिति के अध्यापकों की राय अनुसार जनजाति के छात्रों को विद्यालय में सांस्कृतिक कार्यक्रमों में इनको कार्य करने की छुट दी जाये तो वे विद्यालय के वातावरण में रम जायें ।

सं॥ छात्रावासीयों में व्यक्तिगत सुविधाएँ और शिक्षा विकास -

सारणी संख्या 3:31

छात्रावासीयों में व्यक्तिगत सुविधाएँ और शिक्षा विकास

तहसील	पूर्णक प्राप्तिक प्रतिशत मध्यांक				प्राप्तिको का श्रेणीवार विभाजन		
					निम्न स्तर	सामान्य स्तर	उच्च स्तर
					0 - 1.60	1.61 3.20	3.20 3.00
गिरवा	150	124	82.0	4.13	-	-	4.13
भाड़ोल	150	95	63.3	3.13	-	3.13	-
समुम्बर	150	121	80.6	4.03	-	-	4.03
खरवाड़ा	150	134	89.3	4.56	-	-	4.56
कोटड़ा	150	93	62.0	3.10	-	3.10	-
तराड़ा	150	83	55.0	3.76	-	-	3.76
धीरयावद	150	123	82.0	4.10	-	-	4.10

सारणी संख्या 3:3। में जनजाति के छात्र/छात्राओं छात्रावासों में अक्सर बीमार हो जाते हैं और पढ़ाई छोड़कर माता-पिता के पास चले जाते हैं, के प्राप्तियों को दर्शाया गया है ।

उपरोक्त सारणी अनुसार पंचायत समिति खेरवाड़ा के अध्यापकों की अधिकतम अभिवृत्ति 89.3 प्रतिशत प्राप्त हुई जबकि सबसे न्यून 55.0 सराड़ा पंचायत समिति से प्राप्त हुई ।

प्राप्तियों की आवृत्ति सारणी देखने से ज्ञात होता है कि सराड़ा व झड़ोल पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तियों सामान्य श्रेणी में तथा गिरवा, झड़ोल, सलुम्बर, खेरवाड़ा, सराड़ा व धरियावद पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तियों उच्च स्तर की श्रेणी में प्राप्त हुई ।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सभी पंचायत समिति के अध्यापकों की राय अनुसार जनजाति छात्र अक्सर बीमारों के कारण माता-पिता के पास चले जाते हैं ।

7। अध्ययन क्षेत्र :

शिक्षा सामग्री एवं योग्य अध्यापक और शिक्षा विकास

विद्यालयों में शिक्षा सम्बन्धी पर्याप्त मात्रा में आवश्यक-
कतानुसार सामग्री का उपलब्ध होना शिक्षा के विकास में सहायक
होता है । अतः इसी दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए उक्त
अध्ययन क्षेत्र में निम्न अध्ययन बिन्दुओं को लिया गया है :-

- अ। विद्यालयों में शिक्षण सामग्री एवं शिक्षा विकास
- ब। योग्य अनुभवी अध्यापक एवं शिक्षा विकास
- स। प्रशासन में जनजाति को उचित स्थान ।

प्रत्येक अध्ययन बिन्दुओं पर अलग-अलग सारिणीयों
को बनाकर दत्त विश्लेषण किया गया है -

अ॥ विद्यालयों में शिक्षण सामग्री की पर्याप्तता एवं
शिक्षा विकास

सारणी संख्या 3:32
=====

तहसील	पूर्णक प्राप्तांक प्रतिशत मध्यांक			प्राप्तांको का त्रैणीवार विभाजन		
				निम्न स्तर	सामान्य स्तर	उच्च स्तर
				0 - 1.60	1.61 3.20	3.21 5.00
गिरवा	150	126	84.0	4.20	-	- 4.20
झाड़ोत	150	102	68.0	3.40	-	- 3.40
सहम्बर	150	96	64.0	3.20	- 3.20	-
खेरवाड़ा	150	95	63.3	3.16	- 3.16	-
कोटड़ा	150	92	61.3	3.06	- 3.06	-
सराड़ा	150	105	70.0	3.50	-	- 3.50
धरियावद	150	116	77.3	3.86	-	- 3.86

सारणी संख्या 3:32 में शिक्षण सामग्री के अभाव होने से शिक्षण प्रभावों नहीं होता है तथा छात्र निरस हो जाते हैं के प्राप्तांकों को दर्शाया गया है ।

उपरोक्त सारणी अनुसार प्रंवायत समिति गिरवा के अध्यापकों की अधिकतम अभिरूति 84 प्रतिशत प्राप्त हुई जबकि सबसे न्यून 61.3 प्रतिशत सराहा प्रंवायत समिति से प्राप्त हुई ।

प्राप्तांकों की आवृति सारणी देखने से ज्ञात होता है कि सलुम्बर, खेरवाहा, कोटड़ा प्रंवायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक सामान्य श्रेणी में तथा गिरवा, आहोत, सराहा व धीरयाचद प्रंवायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक उच्च स्तर की श्रेणी में प्राप्त हुए ।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सभी प्रंवायत समिति के अध्यापकों की राय अनुसार जनजाति छात्रों के लिए शिक्षण सामग्री के अभाव होने से छात्र निरस होते हैं ।

ब॥ योग्य और अनुभवी अध्यापक तथा शिक्षा विकास -

सारणी संख्या 3:33
=====

योग्य और अनुभव अध्यापक तथा शिक्षा विकास
=====

तहसील	पूर्णांक प्राप्तार्क प्रतिशत मध्यार्क				प्राप्तार्को का त्रेणीवार विभाजन		
					निम्न स्तर	सामान्य स्तर	उच्च स्तर
					0 - 1.60	1.61 - 3.20	3.21 - 5.00
गिरवा	150	110	73.3	3.66	-	-	3.66
जाड़ोल	150	71	47.3	2.36	-	2.86	-
सहम्बर	150	89	59.3	2.96	-	2.93	-
छेरवाड़ा	150	73	48.6	2.43	-	2.43	-
कोटड़ा	150	84	56.0	2.80	-	2.80	-
सराड़ा	150	74	49.0	2.46	-	2.46	-
धीरयावद	150	85	56.6	2.83	-	2.83	-

सारणी संख्या 3:33 में योग्य व अनुभवी अध्यापकों के अभाव में छात्र पढ़ाई में रुचि नहीं लेते हैं के प्राप्तियों को दर्शाया गया ।

उपरोक्त सारणी के अनुसार पंचायत समिति गिरवा के अध्यापकों की अधिकतम अभिवृत्ति 73.3 प्राप्त हुई जबकि सबसे न्यून अभिवृत्ति 47.3 झाड़ोल पंचायत समिति के अध्यापकों की प्राप्त हुई ।

प्राप्तियों की आवृत्ति सारणी देखने से ज्ञात होता है कि झाड़ोल, सलुम्बर, खेरवाड़ा, कोटड़ा, सराड़ा व धीर-वापद पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तियों सामान्य श्रेणी में तथा गिरवा पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तियों उच्च स्तर की श्रेणी में प्राप्त हुई ।

इससे निष्कर्ष निकलता है कि सभी पंचायत समिति के अध्यापकों की राय अनुसार सामान्यतः योग्य व अनुभवी अध्यापकों के अभाव के कारण छात्र पढ़ाई में रुचि नहीं लेते हैं ।

सं० अध्ययन क्षेत्र :

=====

प्रशासनिक सुविधाएँ -

प्रशासनिक सुविधाओं में अध्यापकों को जनजाति वर्ग के अध्यापक हेतु अतिरिक्त शिक्षण भत्ता, विद्यालयों में स्थानीय समुदाय से निरीक्षण व्यवस्था, प्रशासनिक दायें में जनजाति वर्ग के लोगों को उचित स्थान देना आदि अध्ययन बिन्दुओं को रखा गया है जो इस प्रकार हैं -

अ० जनजाति क्षेत्र विद्यालयों में अध्यापकों को शिक्षण भत्ता

ब० विद्यालयों का स्थानीय निरीक्षण

स० प्रशासनिक दायें में जनजाति समुदाय को उचित स्थान

उक्त अध्ययन बिन्दुओं पर अलग-अलग सारणीयत्र

बनाकर दत्त विश्लेषण किया गया है ।

अ॥ जनजाति क्षेत्र के विद्यालयों में अध्यापकों को शिक्षण

भत्ता :-

सारणी संख्या 3:34

अध्यापकों को शिक्षण भत्ता एवं शिक्षा विकास

तहसील	पूर्णांक प्राप्तार्थक प्रतिवर्ष मध्यांक प्राप्तार्थक का श्रेणीवार विभाजन						
					निम्न स्तर	सामान्य स्तर	उच्च स्तर
					0 - 1.60	1.61 3.20	3.21 5.00
गिरवा	150	100	66.3	3.30	-	-	3.30
साहोत	150	76	50.3	2.53	-	2.53	-
सलुम्बर	150	103	68.6	3.43	-	-	3.43
छेरवाड़ा	150	51	34.0	1.70	-	1.70	-
कोटड़ा	150	83	55.3	2.76	-	2.76	-
सराड़ा	150	80	53.3	2.66	-	2.66	-
धरियावद	150	87	51.3	2.56	-	2.56	-

सारणी संख्या 3:34 में अध्यापकों को जनजाति वर्ग को पढ़ाने पर अतिरिक्त शिक्षण भत्ता मिले, इसके प्राप्तियों का विश्लेषण दर्शाया गया है ।

उक्त सारणी के अनुसार पंचायत समिति के अध्यापकों की अधिकतम आयुति 68.6 प्रतिशत प्राप्त हुई जबकि सबसे न्यून अभियुति 34 प्रतिशत खेरवाड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों की प्राप्त हुई ।

प्राप्तियों की आयुति देखने से ज्ञात होता है कि पंचायत समिति साइल, खेरवाड़ा, कोटड़ा, सराड़ा, धीर-वावद के अध्यापकों की सामान्य श्रेणी पाई गई जबकि गिरवा व सलुम्बर पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक उच्च स्तर की श्रेणी में प्राप्त हुए ।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सभी पंचायत समिति-के अध्यापकों की राय के अनुसार उन्हें शिक्षण भत्ता मिलना चाहिए, ताकि वे विद्यालयों में स्थाई रूप से रहकर अध्ययन करवा सकें ।

ब॥ विद्यालयों में स्थानीय निरीक्षण व्यवस्था -

सारणी संख्या 3:35

विद्यालयों में स्थानीय निरीक्षण व्यवस्था

तहसील	पूर्णांक	प्राप्तांक	प्रतिशत	मध्यांक	प्राप्तांको का श्रेणीवार विभाजन		
					निम्न स्तर	सामान्य स्तर	उच्च स्तर
					0 - 1.60	1.61 3.20	3.21 5.00
गिरवा	150	122	81.3	4.06	-	-	4.06
काङ्गोल	150	103	68.6	3.43	-	-	3.43
सहम्बर	150	102	68.0	3.40	-	-	3.40
खेरवाड़ा	150	76	50.6	2.53	-	2.53	-
कोटड़ा	150	85	56.6	2.83	-	2.83	-
सराड़ा	150	86	57.3	2.86	-	2.86	-
धीरवावद	150	114	76.0	3.80	-	-	3.80

सारणी संख्या 3:35 में सरकारी निरीक्षण के स्थान पर स्थानीय निरीक्षण की व्यवस्था हो तो विद्यालय समय पर छात्रों के प्राप्तांकों को दर्शाया गया है ।

उपरोक्त सारणी के अनुसार पंचायत समिति गिरवा के अध्यापकों की अधिकतम अभिवृत्ति 81.3 प्रतिशत प्राप्त हुई जबकि सबसे कम अभिवृत्ति 50.6 प्रतिशत खेरवाड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों की प्राप्त हुई ।

प्राप्तांकों की आवृत्ति सारणी देखने से ज्ञात होता है कि खेरवाड़ा, कोटड़ा, सराड़ा, पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक सामान्य श्रेणी में तथा गिरवा पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक उच्च स्तर की श्रेणी में प्राप्त हुए ।

इससे निष्कर्ष निकलता है कि सभी पंचायत समिति के अध्यापकों की राय अनुसार सरकारी निरीक्षण के स्थान पर स्थानीय निरीक्षण की व्यवस्था हो तो विद्यालय समय पर छात्रों व अध्यापकों की उपस्थिति भी बराबर रहेगी ।

सं प्रशासन में जनजाति को उचित स्थान और
शिक्षा विकास -

सारणी संख्या 3:36
=====

प्रशासन में जनजाति को उचित स्थान एवं शिक्षा विकास
=====

तहसील	पूर्णांक प्राप्तार्क प्रतिशत मध्यांक प्राप्तार्को का श्रेणीवार विभाजन						
					निम्न स्तर	सामान्य स्तर	उच्च स्तर
					0 - 1.60	1.61 3.20	3.21 5.00
गिरवा	150	112	74.6	3.73	-	-	3.73
बाहोल	150	92	61.3	3.06	-	3.06	-
सहम्बर	150	102	68.0	3.40	-	-	3.40
छेरवाडा	150	79	52.6	2.63	-	2.63	-
कोटडा	150	94	62.6	3.13	-	3.13	-
सरडा	150	84	56.0	2.80	-	2.80	-
धरियावद	150	82	54.6	2.73	-	2.73	-

सारणी संख्या 3:36 में अध्यापन तथा प्रशासन में जनजाति के लोगों को पर्याप्त स्थान मिलता रहे तो ये विद्यालय अच्छी प्रकार से चला सकेंगे । के प्राप्तांको को दर्शाया गया है ।

उपरोक्त सारणी के अनुसार प्रंचायत समिति गिरवा के अध्यापकों की अधिकतम अभिवृत्ति 74.6 प्राप्त हुई जबकि सबसे कम 52.6 खेरवाड़ा प्रंचायत समिति के अध्यापकों को प्राप्त हुई ।

प्राप्तांको की आवृत्ति सारणी देखने से ज्ञात होता है कि साइल, खेरवाड़ा, कोटड़ा, सराड़ा, धीरयावद प्रंचायत समिति अध्यापकों के प्राप्तांक सामान्य श्रेणी में तथा गिरवा व लक्ष्म्वर प्रंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांक उच्च स्तर की श्रेणी में प्राप्त हुई ।

इससे निष्कर्ष निकलता है कि सभी प्रंचायत समिति के अध्यापकों की राय अनुसार सामान्यतः अध्यापन तथा प्रशासन में जनजाति के लोगों को पर्याप्त स्थान मिलता रहे तो विद्यालय अच्छी प्रकार से चल सकेगा ।

चतुर्थ परिच्छेद

—-—-—-—-—-—-—

“अभिमायकों द्वारा जनजाति वर्ग के वैश्विक विकास हेतु दो जाने वाली विविध सुविधाओं पर अभिवृत्ति की राय का विवरण” :-

पूरतापना :

—-—-—-—-—-—-—

जनजाति वर्ग के वैश्विक विकास हेतु राज्य सरकार द्वारा दो जाने वाली अतिरिक्त सुविधाओं पर अभिवृत्ति का विवरण इस अध्याय में किया गया है । अभिवृत्ति प्राप्त करने हेतु एक अभिवृत्ति मापनी का निर्माण किया गया । इसे दो बिन्दु रेटिंग की बनाई गई । वह तथा विपक्ष दोनों बिन्दुओं की प्रमिताः । तथा मुख्य अंक प्रदान किये गए ।

अभिमायकों के शिक्षित कम होने से इन्हे अनुसंधाताओं ने स्वयं अभिमायकों को पुष्ट-पुष्ट कर अभिवृत्ति मापनी को प्रस्तावित किया है । इस प्रकार वह अभिवृत्ति मापनी तात्कातकार अनुसंधाता के अनुसंधान बनाई गई है किन्तु तात्कातकार अनुसंधाता से भिन्न हैं ।

अभिप्राय मापनी पर वारों पर प्रतिष्ठा प्राप्त करके
इसका निरन्तर प्रचार किया गया है ।

३। अभिव्यक्ति

३। विवाह की गति से दूरी और निम्न विचार

तब विचार की गति से निम्नता और निम्न विचार

विचार की गति से दूरी और निम्न विचार :-

अभिप्रायों से पूछा गया कि विवाह गति से अधिक
दूरी पर हो तो निम्न के विचार पर क्या प्रभाव होगा ? जो
पर १० प्रतिशत अभिप्रायों ने कहा कि गति से दूरी के कारण
प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर तक के वास्तविक विचारों में बढ़ने
नहीं आयाते है ।

इसी प्रकार अभिप्रायों ने यह भी स्पष्ट किया कि
विवाह गति से जितनी दूरी पर होमें ताबों में बढ़ाई के प्रति
अन्य वैदा हो जाती है ।

२१. विचारक प्रवेश सम्बन्धी :

अभिभावकों से विचारक में प्रवेश के सम्बन्ध में न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता पर, प्रवेश सम्बन्धी नियमों की कठोरता पर, विचारकों में प्रवेश सम्बन्धी जानकारी पर तथा समय-समय पर प्रवेश की जानकारी प्राप्त होने के सम्बन्ध में अभिप्रेरित बात की ।

अभिभावकों की प्रवेश सम्बन्धी न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता पर प्राप्तांक 40 प्रतिशत, नियमों की कठोरता पर 35 प्रतिशत नियमों की जानकारी नहीं होने पर 80 प्रतिशत तथा जानकारी समय पर मिलती रहे पर 75 प्रतिशत सहभागी प्राप्त हुई ।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अभिभावकों की साथ प्रवेश सम्बन्धी जानकारी समय-समय पर मिलने के तथा प्रवेश सम्बन्धी जानकारी नहीं होने से छात्र प्रवेश से वंचित रहते हैं के पक्ष में अधिक बाई नई । प्रवेश सम्बन्धी न्यूनतम शैक्षणिक योग्यता और नियमों की कठोरता शिक्षा को प्रभावित करती है, ये इसके पक्ष में बहुत कम पाये गये ।

2) आवासीय विचार्यों की क्षमताएँ तथा प्रभावों एवं
अवधारणों का व्यवहार और शिक्षा विचार :-

आवासीय विचार्यों के सम्बन्ध में अभिभावकों को राय
80 प्रतिशत पक्ष में प्राप्त हुई इन विचार्यों में पर्याप्त सामान की
उपलब्धता की उपलब्धता शिक्षा के विकास में सहायक है । इसी
प्रकार प्रभावों एवं अवधारणों के उपयोग व्यवहार के पक्ष में
95 प्रतिशत, भावों की समस्याओं पर ध्यान नहीं देने के पक्ष
में 80 प्रतिशत, भावावाहों में सुरक्षा के अभाव के पर 95 प्रति-
शत पक्ष में राय प्राप्त हुई । भावावाहों में निर्मित भोजन एवं
आवश्यकताओं को धीरे धीरे हटाने के पक्ष में 75 प्रतिशत राय
प्राप्त हुई ।

इससे यह स्पष्ट होता है कि अभिभावक जब अनजाने
के शैक्षणिक विकास के प्रश्न में विचार्यों में पर्याप्त सामान उप-
लब्ध होना, समस्याओं पर ध्यान देना, ~~अवधारणों~~, उचित
भोजन एवं सुरक्षा व्यवस्था के उपलब्ध होने के पक्ष में है ।

4) जनजाति वर्ग के सम्मिलित हुए एवं प्रगत अवसर,
हुविषार और प्रीतिम तथा वीर्य विचार :-

अभिभावकों से जनजाति के सम्मिलित हुए, इन्हें
अवसर प्राप्त प्रगत अवसर तथा हुविषार और प्रीतिम
और वीर्य विचार पर अभिवृत्ति प्राप्त की गई ।

50 प्रीतिम अभिभावकों की राय के अनुसार जनजाति
वर्ग सम्मिलित हुए के कारण विचार में वृद्धि नहीं दिखती है ।
इसी प्रकार 90 प्रीतिम अभिभावकों की राय की वृद्धि इन्हें
अवसर अवसर एवं हुविषार विचारों से इनका वीर्य विचार संभव
है । इसी प्रकार 90 प्रीतिम अभिभावकों की राय की वृद्धि
अभिभावकों में परम्परागत अवसरों एवं अन्य प्रकार का प्रीति-
म विचार से वीर्य विचार उत्पन्न होता है ।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अभिभावकों की
जनजाति के वीर्य विचार में सम्मिलित हुए को वीर्य विचार मानते
हैं । इसी प्रकार से इन्हें अवसर अवसर एवं हुविषार प्रदान करने
के योग्य हैं ।

50. **पारिवारिक कारण एवं शैक्षिक विचार :-**

जनजाति वर्ग के शैक्षिक विचार में पारिवारिक कारणों पर भी अभिभावकों की अभिवृत्ति बात की गई । इस सम्बन्ध में परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने, पारिवारिक समस्याओं एवं शिक्षा, नारा-विवाह की शिक्षा का महत्व बताना, परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने हेतु साधन ढुंढना, जो बुटाना, घर घर पहुँचने की ढुंढपार उपलब्ध करवाना, ढुंढ-पाओं के अभाव में शैक्षिक विचार में बाधा तथा शैक्षिक मार्ग दर्शन और शिक्षा का विकास पर अभिवृत्ति सम्बन्धी प्रश्न पूछे गये ।

65 प्रतिशत अभिभावकों की राय के अनुसार जनजाति वर्ग के परिवार की आर्थिक स्थिति को सरकार द्वारा शिक्षा विकास हेतु सुधारने के पक्ष में पाई गई । इसी प्रकार पारिवारिक समस्याओं के समाधान के पक्ष में 40 प्रतिशत, पारिवारिक स्थिति को उन्नत करने के पक्ष में 62 प्रतिशत तथा शिक्षा के महत्व को अवगत कराने के पक्ष में 40 प्रतिशत घर घर पहुँचने के साधन उपलब्ध कराने के पक्ष में 55 प्रतिशत तथा शैक्षिक मार्ग

इसमें उपलब्ध कराने के पक्ष में 30 प्रतिशत अभ्यासकों की राय प्राप्त हुई ।

इससे यह स्पष्ट होता है कि अभ्यासक अनजानि वर्ग की आर्थिक स्थिति सुद्ध करने, इस हेतु अधिक साधन सुविधायें उपलब्ध कराने, घर पर पढ़ने की साधन सुविधायें उपलब्ध कराने के पक्ष में पाये गए ।

66 सरकारी सुविधायें एवं वित्तीय विचार :-

अभ्यासकों की राय सरकारी सुविधाओं के ज्ञान पर, छात्रवृत्ति की मात्रा पर, छात्रावासों में उपलब्ध भोजन पर, छात्रावासों में उपलब्ध प्रकाश, पानी, क्रीडाक्षेत्र, परीके कमरों, की सुविधा पर, लेक्चर की व्यवस्था पर, विगतक समय पर, अवकाश समय निर्धारण पर, स्वरोन्नगर, शिक्षा पर, त्रिस्तरीय कार्यक्रमों पर तथा विभिन्न सुविधाओं पर ज्ञात की गई ।

70 प्रतिशत अभ्यासकों की अभिवृत्ति के ज्ञात होता है कि अनजानि वर्ग को सरकार द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं की जानकारी कम होती है वित्तिके शिक्षा के विचार पर विचरित प्रभाव पड़ता है । इसी प्रकार 75 प्रतिशत अभ्यासकों की

राय के अनुसार छायावालों का भोजन भीया किस का होता है 80 प्रतिशत आभावकों की राय यह गई कि छायावालों के पक्ष के लोगों, किसानों और श्रमिकों की सुविधा पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं है । 80 प्रतिशत आभावकों की राय की 10 वर्य केन्द्रों की उचित व्यवस्था नहीं है । 40 प्रतिशत आभावकों की राय की कि विचार्य का समय कम हो जाये तथा 70 प्रतिशत आभावकों की राय की कि फल बटवाई आदि कार्य के समय विचार्यों में अवकाश रहना चाहिए । इसी प्रकार 40% आभावकों की राय की कि स्वरोजगार योजना की व्यवस्था हो, 30 प्रतिशत की राय सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन के पक्ष में तथा 90 प्रतिशत की राय शिक्षा सुविधा उपलब्ध कराने के पक्ष में पाई गई ।

इससे यह स्पष्ट होता है कि आभावक वर्ग जनजाति वर्ग की सरकारी सुविधाओं की जानकारी दिलाने के पक्ष में थे । इसी प्रकार छायावालों में भोजन की किसम की सुधारने, छायावात के भयनों को दूर कर संतुष्टि प्रदान करने, केन्द्रों की उचित व्यवस्था करने, फल बटवाई के समय विचार्यों में अवकाश रहने,

तथा निर्दिष्टा, स्वीकार्य उपलब्ध कराने के पक्ष में पाठे गए ।

61 शिक्षा सामग्री एवं शिक्षा विचार -

अभिभावकों को विद्यार्थियों में उपलब्ध शिक्षा सामग्री, योग्य और अनुभवी अध्यापकों के उपलब्ध कराने पर अभिवृत्ति प्राप्त की गई ।

43 प्रतिवर्त अभिभावकों की राय के अनुसार विद्यार्थियों में पर्याप्त शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराई जानी चाहिए । इसी प्रकार 60 प्रतिवर्त अभिभावकों की राय की कि योग्य एवं अनुभवी अध्यापकों को शिक्षण हेतु उपलब्ध कराना चाहिए ।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि जनजाति विद्यार्थियों में पढ़ाने हेतु योग्य, अनुभवी अध्यापकों तथा पर्याप्त शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराने शिक्षा विचार में तटस्थ है ।

६३ पुष्पातीतक व्यवस्थाई एवं शिक्षा विचार -

अभिभावकों को अन्यायित विद्यार्थियों के अध्यापकों को पढ़ाने के लिए अतिरिक्त भत्ता देने, स्थानीय निरीक्षण व्यवस्था पर तथा अन्यायित वर्ग को पुष्पातन में स्थान दिखाने पर अभ्युक्ति द्वारा की गई ।

हम प्रतिष्ठा अभिभावकों की राय थी कि अन्यायित वर्ग के विद्यार्थियों में पढ़ाने वाले अध्यापकों को अतिरिक्त भत्ता देना चाहिए । इसी प्रकार विद्यार्थियों के सरकारी निरीक्षण को व्यवस्था के स्थान पर स्थानीय निरीक्षण के पक्ष में हम अभिभावक पाये गई । विद्यार्थियों के पुष्पातन में अन्यायित वर्ग के लोगों को प्रतिनिधित्व देने के पक्ष में हम प्रतिष्ठा अभिभावकों की अभ्युक्ति पाई गई ।

इससे यह स्पष्ट होता है कि अन्यायित वर्ग के विद्यार्थियों में पढ़ाने वाले अध्यापकों को अतिरिक्त शिक्षण भत्ता देने, स्थानीय निरीक्षण व्यवस्था एवं विद्यार्थ्य पुष्पातन में अन्यायित वर्ग को स्थान देने के पक्ष में अभिभावक वर्ग की अभ्युक्ति पाई गई ।

पंचम परिच्छेद

दत्तों का सांख्यिकी विश्लेषण :

अनुसंधान में दत्त विश्लेषण एक महत्वपूर्ण कार्य है। इन्हें कई विधियों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। सामान्य एक कई बार भुलावे में डाल देता है, अतः अनुसंधानकर्ता अपने अनुसंधान कार्य में सांख्यिकीय विधि का उपयोग करता है। प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में दत्तों के विश्लेषण को कई विधियों से प्रदर्शित किया है। परिच्छेद तृतीय में दत्तों का सामान्य विश्लेषण दर्शाया गया था। इसमें प्रतिशत एवं मध्यांक का उपयोग किया गया था। प्रस्तुत अध्याय में दत्तों को सह संबंध विधि, x^2 विधि तथा t टेस्ट परीक्षा दर्शाया गया है। सह संबंध, x^2 तथा t टेस्ट का प्रयोग क्यों और कैसे किया गया है। इसे परिच्छेद एक में विस्तार से बताया गया है। इस परिच्छेद एक में बताए गए सूत्रों के आधार पर ही दत्तों का विश्लेषण किया गया है।

§2§ दत्तों का सह संबंध विधि द्वारा विश्लेषण :

अध्यापकों की अभिवृत्ति मापनी द्वारा प्राप्त दत्तों पर उदयपुर जिले की व्यक्तिगत सात पंचायत समितियों यथा, गिरवा, झाड़ोल, सलुम्बर, खरवाड़ा, कोटड़ा, सराड़ा तथा धरियावद में आपसी सह संबंध ज्ञात किया गया है। इस हेतु दो दो पंचायत समितियों का जोड़ा बनाया गया है और इन्हें आपस में जांचा गया है।

अ] गिरवा और बाढोल पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृत्ति में सह संबंध का विश्लेषण -

अभिवृत्ति में प्राप्त दरतों का उपयोग इस हेतु किया गया है । गिरवा पंचायत समिति को x तथा बाढोल को y मानकर इनका विश्लेषण नीचे दर्शाया गया है :-

गिरवा की			बाढोल की			
x	dx	dx^2	y	dy	dy^2	$dx dy$
1	2	3	4	5	6	7
110	0	0	106	+6	36	0
116	+6	36	117	+17	290	-
76	-34	1156	70	-30	900	102
84	-16	256	62	-38	1444	1020
100	-10	10	72	-28	784	608
132	+22	484	121	+21	441	280
123	+14	196	123	+23	529	462
110	0	0	61	-39	1521	322
116	+6	36	92	-8	64	0
110	-6	0	99	-1	1	48
114	+4	16	98	-2	4	0
124	+14	196	98	-2	4	8
112	+2	4	117	+17	281	28
122	+12	144	128	+28	784	34
120	+10	100	118	+18	324	336

1	2	3	4	5	6	7
120	+10	100	107	+7	49	70
134	+24	576	112	+12	144	120
126	+16	256	122	+22	484	528
124	+14	196	108	+8	64	128
136	+16	256	111	+11	121	154
124	+14	196	111	+11	121	176
126	+16	256	96	4	16	112
118	+8	64	93	-7	49	88
112	+2	4	89	-11	121	2
122	+12	144	101	+1	1	12
118	+ 8	64	99	-1	1	8
108	- 2	4	95	-5	25	10
124	+14	196	87	-13	169	182
136	+26	676	123	+23	529	598
124	+14	196	127	+27	729	378
124	+14	196	95	-5	25	70
126	+16	256	102	+2	4	32
110	-0	0	77	-23	529	0
100	-10	100	76	-24	576	24
122	+12	144	103	+3	9	3
112	+2	4	92	-8	64	1
	----- +328 - 62 ----- + 266 -----	----- 6608 -----	----- * -----	----- +257 -249 ----- + 8 -----	----- 11244 -----	----- 62 -----

१११ गिरवा और क झाडोल पंचायत समितियों के अध्यापकों की
अभिवृत्ति में सह संबंध का विश्लेषण :-

$$dx = 266 \quad dx^2 = 6608 \quad dy = 8 \quad dy = 11244 \quad dxdy = 6264$$

$$6264 = \frac{266 \times 8}{36}$$

$$r = \frac{\left(\frac{6608 - (266)^2}{36} \right) \left(\frac{11244 - (8)^2}{36} \right)}{\left(\frac{6608 - 70756}{36} \right) \left(\frac{11244 - 64}{36} \right)}$$

$$6264 = \frac{2128}{36}$$

$$= \frac{\left(\frac{6608 - 70756}{36} \right) \left(\frac{11244 - 64}{36} \right)}{\left(\frac{6608 - 1965}{36} \right) \left(\frac{11244 - 1.77}{36} \right)}$$

$$= \frac{6264 = 59.11}{(6608 - 1965) (11244 - 1.77)}$$

$$= \frac{6204.89}{52197673}$$

$$= \frac{6204.89}{7224.79} = +.85$$

$$= +.85$$

सह संबंध का प्राप्त मूल्य + 0.85 प्राप्त हुआ। यह मूल्य उच्च स्तर का धनात्मक सह संबंध है। इससे स्पष्ट होता है कि गिरवा और पंचायत समिति के अध्यापकों शिक्षा के विस्तार हेतु सरकार दी जाने वाली विशेष सुविधाओं की अभिवृत्ति में बहुत अधिक समानता पाई गई।

§ ब § झाड़ोल व सलूमबर पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृत्ति में सह संबंध का विश्लेषण :-

झाड़ोल तथा सलूमबर पंचायत समितियों के अध्यापकों की शिक्षा विकास हेतु राज्य सरकार द्वारा दी जाने वाली विशेष सुविधाओं पर अभिवृत्ति ज्ञात की गई। अभिवृत्ति के प्राप्तांकों पर सह संबंध ज्ञात करने हेतु झाड़ोल के प्राप्तांकों को x तथा सलूमबर के प्राप्तांकों को y मानकर सह संबंध मूल्य ज्ञात किया गया जो इस प्रकार है :-

झाड़ोल व सलूमबर पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृत्ति में सह संबंध का विश्लेषण :-

x	x^2	y	y^2	xy		
1	2	3	4	5		
106	+6	36	109	+9	81	486
117	+17	289	126	+26	676	442
70	-30	900	95	- 5	25	150
62	-38	1444	54	-46	2116	1748
72	-28	784	101	+ 1	1	-28

1	2	3	4	5	6	7
121	+21	441	128	+28	784	588
123	+23	529	128	+28	784	644
61	-39	1521	83	-17	9289	663
92	-08	64	95	- 5	25	200
99	- 1	1	96	- 4	16	4
98	- 2	4	117	+17	290	-34
98	- 2	4	126	+26	676	-52
117	+17	290	173	+31	961	-527
128	+28	784	131	+ 3	961	-668
110	+18	324	121	+21	441	378
107	+ 7	49	121	+21	441	147
112	+12	144	133	+33	1089	396
122	+22	484	125	+25	625	550
108	+ 8	64	124	+24	576	192
111	+11	121	128	+28	784	308
111	+11	121	134	+34	1156	374
96	-4	16	112	+12	144	-48
93	-7	49	93	- 7	49	49
89	-11	121	117	+17	289	-187
101	+ 1	121	+21	121	441	21
99	- 1	1	120	+20	400	- 20
95	- 5	25	125	+25	625	-125

1	2	3	4	5	6	7
---	---	---	---	---	---	---

102	+2	4	96	-4	16	-8
-----	----	---	----	----	----	----

77	-23	529	89	-11	121	253
----	-----	-----	----	-----	-----	-----

76	-24	576	103	+3	9	-72
----	-----	-----	-----	----	---	-----

103	+3	9	102	+2	4	6
-----	----	---	-----	----	---	---

92	-8	84	102	+2	4	-16
----	----	----	-----	----	---	-----

+257	11244	+566	16661	8823
------	-------	------	-------	------

-249
+8

-99
+467

आढ़ोल व ससुम्बर पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृत्ति में सह संबंध का विश्लेषण -

$$dx = 8 \quad dx^2 = 11244 \quad dy = 467 \quad dy^2 = 16661 \quad dxdy = 8823$$

$$r = 8823 - \frac{8 \times 467}{36}$$

$$r = \frac{\left(11244 - \frac{(8)^2}{36} \right) \left(16661 - \frac{(467)^2}{36} \right)}{\left(11244 - \frac{(8)^2}{36} \right) \left(16661 - \frac{(467)^2}{36} \right)}$$

$$r = \frac{8823 - \frac{3736}{36}}{\left(11244 - \frac{64}{36} \right) \times \left(16661 - \frac{218009}{36} \right)}$$

$$\frac{8823 - 103.77}{\left(11244 - 1.77 \right) \left(16661 - 6058.02 \right)}$$

$$8719.23$$

$$11242.23 \times 10602.98$$

$$= \frac{8719.23}{10917.92} = +.79$$

$$= +.79$$

सह संबंध का प्राप्त मूल्य + 0.79 प्राप्त हुआ। यह मूल्य उच्च स्तर का धनात्मक सह संबंध है। इससे स्पष्ट होता है कि जाड़ोंन और सलूमबर पंचायत समितियों के अध्यापकों की रिावा के विस्तार हेतु सरकार द्वारा दी जाने वाली विशेष सुविधाओं की अभिवृत्ति में बहुत समानता पाई गई।

सलूमबर तथा खेरवाड़ा पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृत्ति पर सह संबंध -

सलूमबर व खेरवाड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों की रिावा के विस्तार हेतु राजस्थान सरकार द्वारा दी जाने वाली अतिरिक्त सुविधाओं पर अभिवृत्ति मापनी द्वारा प्राप्त ज्ञात किया गया। प्राप्तियों पर सह संबंध ज्ञात करने हेतु सलूमबर के अध्यापकों के प्राप्तियों को तथा खेरवाड़ा के अध्यापकों के प्राप्तियों को मानकर विश्लेषण किया गया है जो इस प्रकार है -

x	$\frac{dx}{(100)}$	$\frac{dx^2}{2}$	y	$\frac{dy}{(100)}$	$\frac{y^2}{2}$	$-xy$
109	+9	81	90	-5	25	-45
126	+26	676	107	+12	144	312
95	-5	25	70	-25	625	125
54	-46	2116	54	-41	1681	1886
101	= 1	1	85	-10	100	-10
128	+ 28	784	98	+ 3	9	84
128	+ 28	784	102	+ 7	49	196
83	- 17	289	54	-14	1681	697
95	- 5	25	69	-26	676	130

1	2	3	4	5	6	7
96	-4	16	85	-10	100	40
117	+17	290	98	+ 3	9	51
126	+26	676	91	- 4	16	-416
131	+31	961	106	+11	121	341
131	+31	961	112	+17	289	527
121	+21	441	83	-12	144	-252
121	+21	441	90	- 5	25	-525
133	+33	1089	101	+ 6	36	1188
125	+25	625	99	+ 4	16	400
124	+24	576	91	- 4	16	-384
128	+28	784	106	+11	121	308
134	+34	1156	101	+ 6	36	1224
112	+12	144	99	+ 4	16	48
93	- 7	49	106	+11	121	-77
117	+17	290	81	-14	196	-238
121	+21	441	96	+ 1	1	21
120	+20	400	89	- 6	36	-120
125	+25	625	95	0	0	0
125	+25	625	105	+10	100	250
124	+24	576	101	+ 6	36	144
111	+11	121	103	+ 8	64	88

1	2	3	4	5	6	7
121	+21	441	134	+39	1521	919
96	- 4	16	95	0	0	0
89	-11	121	73	-22	484	242
103	+ 3	9	51	-44	1936	-132
102	+ 2	4	76	-19	361	- 38
102	+ 2	4	79	-16	256	- 32
-----		-----		-----	-----	-----
+566		16661		+159	11047	+ 9121
- 99				-304		- 2269
-----		-----		-----	-----	-----
467				- 145		+ 9121
				-----		- 2260

						6852

3) सञ्चालन तथा लेखापत्री पञ्चायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृत्ति पर सब संकेत -

$$dx = 467 \quad dx^2 = 16661 \quad dy = -145 \quad dy^2 = 11047 \quad dx dy = 6852$$

$$6852 = \frac{467 \times 145}{36}$$

$$R = \frac{16661 - \frac{(467)^2}{36} \times 11047 - \frac{(-245)^2}{36}}{6852}$$

$$= \frac{67718}{36}$$

$$= \frac{21089}{36} \quad 21025$$

$$\begin{aligned}
 &= \frac{6852 + 1880 + 97}{16661 - 6058.02 \times 11047 - 584.02} \\
 &= \frac{8732.97}{10602.98 \times 10462.98} \\
 &= \frac{8732.97}{10532.71} + .82 \\
 &= + .82
 \end{aligned}$$

सलुम्बर तथा खेरवाड़ा पंचायत समितियों के अध्यापकों के प्राप्तांकों पर सह-संबंध मूल्य + .82 प्राप्त हुआ। यह मूल्य उच्च स्तर का धनात्मक सह संबंध प्रकट करता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि दोनों पंचायत समितियों के अध्यापकों की राय में बहुत समानता है।

॥ द॥ खेरवाड़ा और कोटड़ा पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृत्ति में सह संबंध ज्ञात करना -

राजस्थान सरकार द्वारा दी जाने वाली विशेष सुविधाओं पर खेरवाड़ा और कोटड़ा पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृत्ति ज्ञात की गई। अभिवृत्ति प्राप्तांकों पर सह संबंध ज्ञात करने हेतु खेरवाड़ा के प्राप्तांकों को x तथा कोटड़ा के प्राप्तांकों को y मानकर विश्लेषण किया गया है जो इस प्रकार है :-

खेरवाड़ा और कोटड़ा पंचायत समितियों के अध्यापकों की
अभिवृत्ति में सह संबंध का विश्लेषण

x	$dx = 95 \quad dx^2$		y	$dy = 90$	dy^2	$dx dy$
90	-5	25	77	-13	169	65
187	+12	144	77	-13	169	-156
70	-25	625	77	-13	169	-325
54	-41	1681	72	-18	324	-438
85	-10	100	94	+ 4	16	- 40
98	+ 3	9	94	+ 4	16	12
102	+ 7	49	92	+ 2	4	14
54	-41	1681	88	- 2	4	82
69	-26	676	92	+ 2	4	-52
85	-10	100	95	+ 5	25	-50
98	+ 3	9	92	+ 2	4	6
91	- 4	16	94	+ 4	16	-16
106	+11	121	95	+ 5	25	-55
112	+17	289	92	+ 2	4	34
83	-12	144	95	+ 5	25	-60
90	- 5	25	95	+ 5	25	-25
101	+ 6	36	95	+ 5	25	30
99	+ 4	16	94	+ 4	16	16
91	- 4	16	93	+ 3	9	-12
106	+11	121	95	+ 5	25	55

101	+6	36	95	+5	25	30
99	+4	16	91	+1	1	4
106	+11	121	84	-6	36	-66
81	-14	196	88	-2	4	28
96	+1	1	94	+4	16	4
89	-6	36	89	-1	1	6
95	0	0	95	+5	25	0
105	+10	100	94	+4	16	40
101	+6	36	95	+5	25	30
103	+8	64	95	+5	25	40
154	+39	1521	93	+3	9	117
95	0	0	92	+2	4	0
73	-22	484	84	+6	36	132
51	-44	1936	83	-7	49	308
76	-19	361	85	-5	25	95
79	-16	256	94	+4	16	-64
-----		-----	-----		-----	-----
+159		11047	+ 95		1387	+ 2266
-304			- 85			- 241
-----			-----			-----
-145			+ 9			+ 1725
-----			-----			-----

॥ 4॥

खेरवाड़ा व कोटड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों की अभिवृत्ति
में सह संकेत का विश्लेषण -

$$dx = 145 \quad dx^2 = 11045 \quad dy = 9 \quad dy^2 = 1387 \quad dx dy = 1723$$

$$1723 - \frac{-145 \times 9}{36}$$

$$r = \frac{11045 - \frac{(-145)^2}{36} \times 1387 - \frac{(9)^2}{36}}{36}$$

$$= \frac{1723 - \frac{-1305}{36}}{36}$$

$$11045 - \frac{21025}{36} \times 1387 - \frac{81}{36}$$

$$= \frac{1723 + 36.25}{36}$$

$$11045 - 584.02 \quad 1387 - 2.25$$

$$= \frac{1759.25}{36}$$

$$10460.98 \times 1384.75$$

$$= \frac{1759.25}{36}$$

$$14485842$$

$$= \frac{1759.25}{3806.02} + .46$$

$$= . + .46$$

खेरवाड़ा तथा पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृत्ति पर सह-संबंध मूल्य 0.46 प्राप्त हुआ। यह सह संबंध भी धनात्मक प्राप्त हुआ है। इससे यह स्पष्ट होता है कि दोनों अध्यापकों की राय में भी काफी समानता है।

४ घ॥ कोटड़ा तथा सराड़ा पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृत्ति पर सह संबंध -

कोटड़ा तथा सराड़ा पंचायत समितियों के अध्यापकों की राज्य सरकार द्वारा शिक्षा विकास हेतु दी जाने वाली विशेष सुविधाओं पर अभिवृत्ति ज्ञात की गई। अभिवृत्ति के प्राप्तियों पर सह संबंध ज्ञात करने हेतु कोटड़ा के प्राप्तियों को तथा सराड़ा के प्राप्तियों को मानकर विश्लेषण किया गया, जो इस प्रकार है :-

= 2			= 2			
			100			
77	-13	169	92	-8	64	104
77	-13	169	121	+21	441	-273
77	-13	169	62	-38	1444	494
72	-10	324	45	-55	3025	990
94	+ 4	16	105	+ 5	25	-20
94	+ 4	16	114	+14	196	56
92	+ 2	4	119	+19	361	36
88	-2	4	48	-52	2704	104
92	+2	4	71	-29	841	-58
95	+5	25	90	-10	100	-50

92	+2	4	108	+8	64	16
94	+4	16	118	+18	324	72
95	+5	25	103	+3	9	15
92	+2	4	130	+30	900	60
95	+5	25	107	+7	49	35
95	+5	25	102	+2	4	10
95	+5	25	132	+32	1024	160
94	+4	16	131	+31	961	124
93	+3	9	95	-5	25	-15
95	+5	25	111	+11	121	15
95	+5	25	113	+13	169	65
91	+1	1	97	-3	9	-3
84	-6	36	104	+4	16	-24
83	-2	4	89	-11	121	22
94	+4	16	106	+6	36	24
89	-1	1	106	+6	36	-6
95	+5	25	96	-4	16	-20
94	+4	16	103	+3	9	12
95	+5	25	111	+11	121	55
95	+5	25	108	+8	64	40
93	+3	9	83	-17	289	-51
92	+2	4	105	+5	25	10
84	-6	36	74	-26	676	130

$$= \frac{2313.75}{1375.75 \times 14927.75}$$

$$= \frac{2313.75}{20536852}$$

$$= \frac{2313.75}{4531.76} + .51$$

कोटड़ा पंचायत समिति तथा सराड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तांकों पर सह संबंध मूल्य + .51 प्राप्त हुआ यह उच्च धनात्मक सह संबंध है। इससे स्पष्ट होता है कि दोनों अध्यापकों की राय में बहुत समानता है।

१११ सराड़ा तथा धरियावद पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृत्ति में सह-संबंध ज्ञात करना -

सराड़ा तथा धरियावद पंचायत समिति के अध्यापकों की अभिवृत्ति पर सह संबंध ज्ञात करने हेतु सराड़ा के प्राप्तांकों को तथा धरियावद के प्राप्तांकों को मानकर विश्लेषण किया गया जो इस प्रकार है -

॥ र ॥ सराढ़ा तथा धरियावद पंचायत समितियों के अयापकों की अभिवृत्ति में सहसंबंध का विश्लेषण -

$r = 2$ 100			$r = 2$ 100		
92	-8	64	110	+10	100
121	+21	441	126	+26	676
62	-38	1444	60	-40	400
45	-55	3025	54	-45	2116
105	+ 5	25	98	- 2	4
114	+14	196	66	-34	1156
119	+19	361	127	+27	729
48	-52	2704	54	-96	2116
71	-29	841	78	-22	484
90	-10	100	85	-15	225
108	+8	64	115	+15	225
118	+118	324	111	+11	121
103	+ 3	9	110	+10	100
130	+ 30	900	141	+41	1681
107	+ 7	49	108	+8	64
102	+ 2	4	108	+8	64
132	+32	1024	138	+38	1444
131	+31	961	115	+15	225
95	-5	25	113	+13	169

111	+ 11	121	119	+19	361	209
113	+13	169	128	+28	784	364
97	- 3	9	110	+28	100	-30
104	+ 4	16	111	+11	121	44
89	-11	121	106	+6	36	-66
106	+ 6	36	116	+16	256	96
106	+ 6	36	102	+2	4	12
96	= 4	16	125	+25	625	-100
103	+ 3	9	128	+28	324	84
111	+111	121	136	+36	1296	396
108	+ 8	64	125	+25	625	200
83	-17	289	123	+23	529	-391
105	+5	25	116	+16	256	80
74	-26	676	85	-15	225	390
80	-20	400	77	-23	529	460
86	-14	196	114	+14	196	-196
84	-16	256	82	-18	324	288
<hr/> -308		<hr/> 15000	<hr/> +481		<hr/> 18690	<hr/> +14308
<hr/> +257		<hr/>	<hr/> -261			<hr/> -1349
<hr/> - 51		<hr/>	<hr/> 220			<hr/> +12959
<hr/>			<hr/>			<hr/>

॥ 6॥ सराड़ा तथा धरियावद पंचायत समितियों के अध्यापकों की
अभिवृत्ति में सहसंबंध ज्ञात करना -

$$dx = 51 \quad dx^2 = 15000 \quad dy = 220 \quad dy^2 = 18960 \quad dxdy = 12959$$

$$12959 - \frac{51 \times 220}{36}$$

$$= \frac{15000 - \left(\frac{51}{36}\right)^2 \times 18960 - \frac{220}{36})^2}{36}$$

$$12959 - \frac{11220}{36}$$

$$= \frac{15000 - \frac{2601}{36} \times 18960 - \frac{48400}{36}}{36}$$

$$= \frac{12959 - 311.66}{15000 - 72.25 \times 18960 - 1344.44}$$

$$12647.34$$

$$= \frac{14927.75 \times 17345.56}{16091.30}$$

$$= \frac{12647.36}{16091.30} + .78$$

भराड़ा तथा धरियावद पंचायत समिति के जयापकों के प्राप्तियों पर सह संबंध मूल्य + 78 प्राप्त हुआ। यह उच्च स्तर का धनात्मक सह संबंध है। इससे स्पष्ट होता है कि दोनों जयापकों की राय बहुत समानता है।

सह संबंध विश्लेषण के प्रमुख निष्कर्ष -

- 1] गिरवा तथा बाढ़ोल पंचायत समितियों के जयापकों की राय में धनात्मक सह संबंध पाया गया।
- 2] गिरवा तथा बाढ़ोल के जयापकों की राय में भी धनात्मक सह संबंध पाया गया।
- 3] बाढ़ोल तथा सलुम्बर के जयापकों की राय में भी धनात्मक सह संबंध पाया गया।
- 4] सलुम्बर तथा खेरवाड़ा के जयापकों की राय में धनात्मक सह संबंध पाया गया।
- 5] खेरवाड़ा तथा कोटड़ा के जयापकों की राय में भी धनात्मक सह संबंध पाया गया।
- 6] कोटड़ा व भराड़ा के जयापकों की राय में भी धनात्मक सह संबंध पाया गया।
- 7] भराड़ा तथा धरियावद के जयापकों की राय में भी धनात्मक सह संबंध पाया गया।

सांख्यिकीय विश्लेषण

काह स्वधायर द्वारा परिकल्पना का परीक्षा -

परिकल्पना को सार्थक बनाने के लिए का उपयोग किया गया है। के लिए निम्न उपयोग काम में लिया गया है।

सूत्र :-

ठिगरी की स्वतंत्रता के लिए
काम में लिया है

को

= आवृत्ति जो पाई गई ।

= आवृत्ति जो मानी गई ।

कालम

पक्षियां

इस सूत्र में दत्तों की आवृत्तियों को मानी गई आवृत्तियों से बाकी निकाला गया है । इसके बाद मानी गई आवृत्ति से उस संख्या में भाग देते हैं और प्राप्त संख्या को जोड़ देते हैं । यही प्राप्त संख्या

का मूल्य होता है । इस मूल्य को सारिणी मूल्य से तुलना की जाती है ।

स्वतंत्रता स्तर को ज्ञात करने हेतु

का सूत्र लगाया

गया । इसका अर्थ होता है कि जितने कालम हैं उसमें से एक को बाकी निकालना तथा जितनी पक्षियां हैं उसमें से एक को बाकी निकाल कर दोनों संख्याओं को आपस में गुणा करना गुणो से प्राप्त संख्या को स्वतंत्रता का स्तर माना गया है । अनुसंधान में प्राप्त दत्तों के मध्यांक की योग पर परीक्षा किया गया जो इस प्रकार है -

काह रकाम परीक्षा

=	144.45	123.03	139.87	115.96	110.2	134.2	127.86
=	16.511	- 4.9	11.94	11.97	-17.93	6.34	0.07
=	16913.532	48.02	142.563	143.28	321.48	40.195	0000.49
=	132.209	.375	1.114	1.119	2.512	31.4	.000000038
=	= 137.643 मूल्य						

रक्कम का रकम करने हेतु - =

=

=

= रक्कम का रकम 6 पर मूल्य 137.643

प्राप्त हुआ ।

उक्त सारणी के अनुसार सभी पंचायत समितियों के अध्यापकों के अभिवृत्ति प्राप्तांकों का मूल्य 137.643 प्राप्त हुआ यह मूल्य सारणी में 6 स्वतंत्रता स्तर पर दिए गए सारणी मूल्य से अधिक पाया गया। इसका अर्थ यह हुआ कि परिकल्पना सार्थक पाई गई अर्थात् सभी अध्यापकों की राय में जनजाति वर्ग को दी जाने वाली विशेष सुविधाओं का शिक्षा के विकास पर प्रभाव पड़ता है।

दत्तों पर सूत्र का परीक्षण -

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य को प्रमाणिकता के निकट लाने हेतु सूत्र का उपयोग किया गया।

|||

सूत्र का विश्लेषण

= is difference between two sample means.

- (1) Lonise H. " Research Methods in Social Science
Kidder Relation ", Holt, Rinehart and Winston
New York 1980, pp 338

- = sample is number of observation in the sample.
- = is the variances of sample one and sample two.
- = SP is the pooled variance of the two sample.

सूत्र द्वारा दस्तों के विश्लेषण की विधा -

Larger the value of t the less likely it is that the null hypothesis is true and consequently, the more probable the sample represent different population. This should make sense from looking at the formula. The larger the difference between the sample. The larger the numerator will be and thus the larger. (1)

लुइस एच. कीडर महोदय ने टेस्ट को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि इस परीक्षा द्वारा दो चरों के बीच पाए जाने वाले अंतर को ज्ञात किया जाता है। इन्होंने आगे स्पष्ट किया कि जितना का मान अधिक होगा उतने ही शून्य परिकल्पना सही होगी।

प्रस्तुत अध्ययन में उदयपुर जिले की सातों पंचायत समितियों प्राप्तांकों पर परीक्षा किया गया है।

सारणी :

टेस्ट परीक्षा के मूल्य एवं परिकल्पना की सार्थकता

क्र०सं०	नाम तहसील	टेस्ट प्राप्त मूल्य	सार्थकता/ निरर्थकता
1	गिरवा/साड़ोल	0.0179623	सार्थक
2	साड़ोल/सलुम्बर	0.356162	सार्थक
3	सलुम्बर/छेरवाड़ा	0.011887	सार्थक
4	छेरवाड़ा/कोटड़ा	0.017633	सार्थक
5	कोटड़ा/सराड़ा	0.0148043	सार्थक
6	सराड़ा/भरियावद	0.0307023	सार्थक

उपरोक्त सारणी से यह स्पष्ट होता है कि सभी पंचायत समितियों में आपसी तुलना करने पर मूल्य बहुत ही कम प्राप्त हुआ। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सभी पंचायत समितियों की राय में बहुत समानता है। इनमें अन्तर बहुत ही नगण्य प्राप्त हुआ।

$$= \frac{6204.89}{\text{-----}}$$

73686220

$$= \frac{6204.89}{\text{-----}}$$

8584.06

$$= +.722$$

$$\begin{array}{r}
 8823 - 103 \\
 \hline
 11244 - \frac{64}{1296} \times 16661 = \frac{218089}{1296}
 \end{array}$$

$$\begin{array}{r}
 8720 \\
 \hline
 \hline
 11244 - 049 \times 16661 = 168.27
 \end{array}$$

$$\begin{array}{r}
 8720 \\
 \hline
 \hline
 11243.51 \times 16492.73
 \end{array}$$

$$\begin{array}{r}
 8720 \\
 \hline
 13617.48 = .640
 \end{array}$$

$$x \text{ value} = .640$$

सह संबंध का प्राप्त मूल्य .640 प्राप्त हुआ। यह मूल्य धनात्मक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि झाड़ोल और सलुम्बर पंचायत समितियों के अध्यापकों की शिक्षा के विस्तार हेतु सरकार द्वारा दी जाने वाली विशेष सुविधाओं की अभिवृत्ति में बहुत अधिक समानता पाई गई।

॥स॥ सलुम्बर तथा खेरवाड़ा पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृत्ति पर सह संबंध -

सलुम्बर व खेरवाड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों की शिक्षा के विस्तार हेतु राजस्थान सरकार द्वारा दी जाने वाली

अतिरिक्त सुविधाओं पर अभिवृत्ति मापनी द्वारा प्राप्ति ज्ञात किया गया। प्राप्तों पर सह संबंध ज्ञात करने हेतु सलुम्बर के अध्यापकों के प्राप्ति को तथा खेरवाड़ा के अध्यापकों के प्राप्ति को मानकर विश्लेषण लिया गया जो इस प्रकार है।

सलुम्बर व खेरवाड़ा पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृत्ति में सहसंबंध का विश्लेषण -

$$dx = 467 \quad dx^2 = 16661 \quad dy = -145 \quad dy^2 = 11047 \quad dxdy = 6852$$

$$6852 - \frac{467 \times -145}{36}$$

$$r = \frac{\quad}{\quad}$$

$$16661 - \frac{467}{36} \times 11047 - \frac{-145}{36}$$

$$6852 - \frac{67715}{36}$$

$$r = \frac{\quad}{\quad}$$

$$16661 - \frac{210089}{1296} \times 11047 - \frac{21025}{1296}$$

$$r = \frac{6852 + 1880.97}{16661 - 168.27 \times 11047 - 16.22}$$

$$= \frac{8732.97}{16492.73 \times 11030.75}$$

$$= \frac{8732.97}{13488.03} = .647$$

$$r \text{ value} = .647$$

सलूमबर तथा खेरवाड़ा पंचायत समितियों के अध्यापकों के प्राप्तांकों पर सह संबंध मूल्य $\frac{1}{2}$ मूल्य $\frac{1}{2}$.647 प्राप्त हुआ। यह मूल्य धनात्मक संबंध प्रकट करता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि दोनों अध्यापकों की राय में बहुत समानता है।

॥द॥ खेरवाड़ा और कोटड़ा पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृत्ति में सह संबंध ज्ञात करना -

राजस्थान सरकार द्वारा दी जाने वाली विशेष सुविधाओं पर खेरवाड़ा और कोटड़ा पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृत्ति ज्ञात की गई। अभिवृत्ति प्राप्तांकों पर सह संबंध ज्ञात करने हेतु खेरवाड़ा के प्राप्तांकों को मानकर तथा कोटड़ा के प्राप्तांकों को मानकर विश्लेषण किया गया है जो इस प्रकार है -

खेरवाड़ा व कोटड़ा पंचायत समितियों के अध्यक्षों की अभिवृत्ति में
सह संबंध का विश्लेषण -

$$dx = -145 \quad dx^2 = 11045 \quad dy = 9 \quad dy^2 = 1387$$

$$dxdy = 1725$$

$$\begin{aligned} r &= \frac{\frac{-145 \times 9}{36}}{1725 - \frac{36}{36}} \\ &= \frac{11047 - \frac{-145}{36} \times 1387 - \frac{9}{36}}{1725 - \frac{1305}{36}} \\ &= \frac{11047 - \frac{21025}{1296} \times 1387 - \frac{81}{36}}{1725 - (-36.25)} \\ &= \frac{11047 - 16.22 \times 1387 - .062}{1725 + 36.25} \\ &= \frac{1761.25}{3910.60} = .450 \\ r &= .450 \end{aligned}$$

सेरवाड़ा तथा कोटड़ा पंचायत समितियों के अयापकों की अभिवृत्ति पर सहसंबंध मूल्य ०.450 प्राप्त हुआ। यह संबंध भी धनात्मक है। इससे स्पष्ट होता है कि दोनों अयापकों की राय में भी काफी समानता है।

**॥य॥ कोटड़ा तथा सराड़ा पंचायत समितियों के अयापकों की
अभिवृत्ति पर सह संबंध -**

कोटड़ा तथा सराड़ा पंचायत समितियों के अयापकों की राज्य सरकार द्वारा शिक्षा विकास हेतु दी जाने वाली विशेष सुविधाओं पर अभिवृत्ति ज्ञात की गई। अभिवृत्ति के प्राप्तांकों पर सह संबंध ज्ञात करने हेतु कोटड़ा के प्राप्तांकों को तथा सराड़ा के प्राप्तांकों को मानकर विश्लेषण किया गया है, जो इस प्रकार है -

लगातार

$$(5) \quad dx^2 = 1378, \quad dy = 51, \quad dy^2 = 15000 \quad dxdy = 2301$$

$$2301 - \frac{-51 \times 9}{36}$$

$$1378 - \frac{9}{36} \times 15000 - \frac{-51}{36}$$

$$2301 - \frac{-459}{36}$$

$$1378 - \frac{81}{1296} \times 15000 - \frac{2601}{1296}$$

$$2301 + 12.75$$

$$1378 - .062 \times 15000 - 2.006$$

$$2313.75$$

$$1386.36 \times 14,997.99$$

$$\frac{2313.75}{4559.89} = .507$$

$$r = .507$$

कोटड़ा तथा सराड़ा पंचायत समितियों के अध्यापकों के प्राप्तांकों पर सह संबंध मूल्य 503 प्राप्त हुआ। यह मूल्य धनात्मक है। इससे स्पष्ट होता है कि दोनों अध्यापकों की राय में बहुत समानता है।

॥ र॥ सराड़ा तथा धरियावद पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृद्धि में सहसंबंध ज्ञात करना -

सराड़ा तथा धरियावद पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृद्धि पर सह संबंध ज्ञात करने हेतु सराड़ा के प्राप्तांकों को तथा धरियावद के प्राप्तांकों को मानकर विश्लेषण किया गया जो इस प्रकार है -

सराड़ा व धरियावद पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृद्धि में सह संबंध का विश्लेषण -

$$dx = 51, dx^2 = 15000 \quad dy = 220 \quad dy^2 = 18690 \quad dydx = 12959$$

$$12959 - \frac{-51 \times 220}{36}$$

$$r = \frac{15,000 - \frac{-15}{36} \times 18690 - \frac{220}{36}}{12959 - \frac{-11220}{36}}$$

$$15,000 - \frac{-15}{36} \times 18690 - \frac{220}{36}$$

$$12959 - \frac{-11220}{36}$$

$$15000 - \frac{2601}{1296} \times 18690 - \frac{48400}{1296}$$

$$= \frac{12959 + 311.66}{\text{---}}$$

$$15000 - 2,006 \times 18960 = 37.34$$

$$\frac{13270.66}{\text{---}}$$

$$14997.99 \times 18922.66$$

$$= \frac{13270.66}{16846.39} = .78$$

$$r = .78$$

पंचम परिच्छेद

दत्तों का सांख्यिकी विश्लेषण :

अनुसंधान में दत्त विश्लेषण एक महत्वपूर्ण कार्य है। इन्हें कई विधियों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। सामान्य एक कई बार भुलावे में डाल देता है, अतः अनुसंधानकर्ता अपने अनुसंधान कार्य में सांख्यिकीय विधि का उपयोग करता है। प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में दत्तों के विश्लेषण को कई विधियों से प्रदर्शित किया है। परिच्छेद तृतीय में दत्तों का सामान्य विश्लेषण दर्शाया गया था। इसमें प्रतिशत एवं मध्यांक का उपयोग किया गया था। प्रस्तुत अध्याय में दत्तों को सह संबंध विधि, x^2 विधि तथा t टेस्ट परीक्षा दर्शाया गया है। सह संबंध, x^2 तथा t टेस्ट का प्रयोग क्यों और कैसे किया गया है। इसे परिच्छेद एक में विस्तार से बताया गया है। इस परिच्छेद एक में ब्यापक हुए सूत्रों के आधार पर ही दत्तों का विश्लेषण किया गया है।

§28 दत्तों का सह संबंध विधि द्वारा विश्लेषण :

अध्यापकों की अभिवृत्ति मापनी द्वारा प्राप्त दत्तों पर उदयपुर जिले की क्यन्ति सात पंचायत समितियों यथा, गिरवा, झाड़ोल, सलूमबर, खरवाड़ा, कोटड़ा, सराड़ा तथा धरियावद में आपसी सह संबंध ज्ञात किया गया है। इस हेतु दो दो पंचायत समितियों का जोड़ा बनाया गया है और इन्हें आपस में जांचा गया है।

अ॥ गिरवा और झाडोल पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृत्ति में सह संबंध का विश्लेषण -

अभिवृत्ति से प्राप्त दत्तों का उपयोग इस हेतु किया गया है । गिरवा पंचायत समिति को x तथा झाडोल को y मानकर इनका विश्लेषण नीचे दर्शाया गया है :-

प्राप्तांक x	dx ११००	dx^2	प्राप्तांक y	$dy(100)$	dy^2	$dx dy$
1	2	3	4	5	6	7
110	0	0	106	+6	36	0
116	+6	36	117	+17	290	-
76	-34	1156	70	-30	900	102
84	-16	256	62	-38	1444	1020
100	-10	10	72	-28	784	608
132	+22	484	121	+21	441	280
123	+14	196	123	+23	529	462
110	0	0	61	-39	1521	322
116	+6	36	92	-8	64	0
110	-0	0	99	-1	1	48
114	+4	16	98	-2	4	0
124	+14	196	98	-2	4	8
112	+2	4	117	+17	281	28
122	+12	144	128	+28	784	34
120	+10	100	118	+18	324	336

४१४ गिरवा और छ साडोल पंचायत समितियों के अध्यापकों की
अभिवृत्ति में सह संबंध का विश्लेषण :-

$$dx = 266 \quad dx^2 = 6608 \quad dy = 8 \quad dy^2 = 11244 \quad dx dy = 6264$$

$$6264 - \frac{266 \times 8}{36}$$

$$r = \frac{\left(\frac{6608 - (266)^2}{36} \right) \left(\frac{11244 - (8)^2}{36} \right)}{\left(\frac{6608 - 70756}{36} \right) \left(\frac{11244 - 64}{36} \right)}$$

$$6264 - \frac{2128}{36}$$

$$= \frac{\left(\frac{6608 - 70756}{36} \right) \left(\frac{11244 - 64}{36} \right)}{\left(\frac{6608 - 1965}{36} \right) \left(\frac{11244 - 1.77}{36} \right)}$$

$$= \frac{6264 - 59.11}{(6608 - 1965) (11244 - 1.77)}$$

$$= \frac{6204.89}{52197673}$$

$$= \frac{6204.89}{7224.79} = +.85$$

$$= +.85$$

सह संबंध का प्राप्त मूल्य + 0.85 प्राप्त हुआ। यह मूल्य उच्च स्तर का धनात्मक सह संबंध है। इससे स्पष्ट होता है कि गिरवा और पंचायत समिति के अध्यापकों शिक्षा के विस्तार हेतु सरकार दी जाने वाली विशेष सुविधाओं की अभिवृत्ति में बहुत अधिक समानता पाई गई।

॥ ब॥ झाड़ोल व सलूमबर पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृत्ति में सह संबंध का विश्लेषण :-

झाड़ोल तथा सलूमबर पंचायत समितियों के अध्यापकों की शिक्षा विकास हेतु राज्य सरकार द्वारा दी जाने वाली विशेष सुविधाओं पर अभिवृत्ति ज्ञात की गई। अभिवृत्ति के प्राप्तांकों पर सह संबंध ज्ञात करने हेतु झाड़ोल के प्राप्तांकों को x तथा सलूमबर के प्राप्तांकों को y मानकर सह संबंध मूल्य ज्ञात किया गया जो इस प्रकार है :-

झाड़ोल व सलूमबर पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृत्ति में सह संबंध का विश्लेषण :-

x	$\frac{x}{100}$	dx^2	y	$\frac{dy}{100}$	dy^2	$dx dy$
1	2	3	4	5	6	7
106	+6	36	109	+9	81	486
117	+17	289	126	+26	676	442
70	-30	900	95	-5	25	150
62	-38	1444	54	-46	2116	1748
72	-28	784	101	+1	1	-28

1	2	3	4	5	6	7
121	+21	441	128	+28	784	588
123	+23	529	128	+28	784	644
61	-39	1521	83	-17	9289	663
92	-08	64	95	- 5	25	200
99	- 1	1	96	- 4	16	4
98	- 2	4	117	+17	290	-34
98	- 2	4	126	+26	676	-52
117	+17	290	173	+31	961	-527
128	+28	784	131	+ 3	961	-668
110	+18	324	121	+21	441	378
107	+ 7	49	121	+21	441	147
112	+12	144	133	+33	1089	396
122	+22	484	125	+25	625	550
108	+ 8	64	124	+24	576	192
111	+11	121	128	+28	784	308
111	+11	121	134	+34	1156	374
96	-4	16	112	+12	144	-48
93	-7	49	93	- 7	49	49
89	-11	121	117	+17	289	-187
101	+ 1	121	+21	121	441	21
99	- 1	1	120	+20	400	- 20
95	- 5	25	125	+25	625	-125

1	2	3	4	5	6	7
102	+2	4	96	-4	16	-8
77	-23	529	89	-11	121	253
76	-24	576	103	+ 3	9	-72
103	+ 3	9	102	+ 2	4	6
92	- 8	84	102	+ 2	4	-16
	<u>+257</u>	<u>11244</u>		<u>+566</u>	<u>16661</u>	<u>8823</u>
	<u>-249</u>			<u>- 99</u>		
	<u>+ 8</u>			<u>+ 467</u>		

काङ्गोल व ब्लूम्बर पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृत्ति में सह संबंध का विश्लेषण -

$$dx = 8 \quad dx^2 = 11244 \quad dy = 467 \quad dy^2 = 16661 \quad dxdy = 8823$$

$$r = \frac{8823 - \frac{8 \times 467}{36}}{\left(11244 - \frac{(8)^2}{36} \right) \left(16661 - \frac{(467)^2}{36} \right)}$$

$$r = \frac{8823 - \frac{3736}{36}}{\left(11244 - \frac{64}{36} \right) \left(16661 - \frac{218089}{36} \right)}$$

$$r = \frac{8823 - 103.77}{\left(11244 - 1.77 \right) \left(16661 - 6058.02 \right)}$$

$$= \frac{8719.23}{11242.23 \times 10602.98}$$

$$= \frac{8719.23}{10917.92} = +.79$$

$$= +.79$$

सह संबंध का प्राप्त मूल्य + 0.79 प्राप्त हुआ। यह मूल्य उच्च स्तर का धनात्मक सह संबंध है। इससे स्पष्ट होता है कि झाड़ोल और सलूमबर पंचायत समितियों के अध्यापकों की शिक्षा के विस्तार हेतु सरकार द्वारा दी जाने वाली विशेष सुविधाओं की अभिवृत्ति में बहुत समानता पाई गई।

॥ सं॥ सलूमबर तथा खेरवाड़ा पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृत्ति पर सह संबंध -

सलूमबर व खेरवाड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों की शिक्षा के विस्तार हेतु राजस्थान सरकार द्वारा दी जाने वाली अतिरिक्त सुविधाओं पर अभिवृत्ति मापनी द्वारा प्राप्त ज्ञात किया गया। प्राप्तियों पर सह संबंध ज्ञात करने हेतु सलूमबर के अध्यापकों के प्राप्तियों को तथा खेरवाड़ा के अध्यापकों के प्राप्तियों को मानकर विश्लेषण किया गया है जो इस प्रकार है -

x	$\frac{dx}{(100)}$	dx	y	$\frac{dy}{(95)}$	dy^2	$dx dy$
1	2	3	4	5	6	7
109	+9	81	90	-5	25	-45
126	+26	676	107	+12	144	312
95	-5	25	70	-25	625	125
54	-46	2116	54	-41	1681	1886
101	= 1	1	85	-10	100	-10
128	+28	784	98	+3	9	84
128	+28	784	102	+7	49	196
83	-17	289	54	-14	1681	697
95	-5	25	69	-26	676	130

1	2	3	4	5	6	7
96	-4	16	85	-10	100	40
117	+17	290	98	+ 3	9	51
126	+26	676	91	- 4	16	-416
131	+31	961	106	+11	121	341
131	+31	961	112	+17	289	527
121	+21	441	83	-12	144	-252
121	+21	441	90	- 5	25	-525
133	+33	1089	101	+ 6	36	1188
125	+25	625	99	+ 4	16	400
124	+24	576	91	- 4	16	-384
128	+28	784	106	+11	121	308
134	+34	1156	101	+ 6	36	1224
112	+12	144	99	+ 4	16	48
93	- 7	49	106	+11	121	-77
117	+17	290	81	-14	196	-238
121	+21	441	96	+ 1	1	21
120	+20	400	89	- 6	36	-120
125	+25	625	95	0	0	0
125	+25	625	105	+10	100	250
124	+24	576	101	+ 6	38	144
111	+11	121	103	+ 8	64	88

1	2	3	4	5	6	7
121	+21	441	134	+39	1521	819
96	- 4	16	95	0	0	0
89	-11	121	73	-22	484	24
103	+ 3	9	51	-44	1936	-13
102	+ 2	4	76	-19	361	- 3
102	+ 2	4	79	-16	256	- 3
-----		-----		-----	-----	-----
+566		16661		+159	11047	+ 91
- 99				-304		- 22
-----		-----		-----	-----	-----
467				- 145		+ 91
				-----		- 22

						68

§ 38 सलूमबर तथा खेरवाड़ा पंचायत समितियों के अध्यक्षों की अभिवृत्ति पर सह संबंध -

$$dx = 467 \quad dx^2 = 16661 \quad dy = -145 \quad dy^2 = 11047 \quad dxdy = 6852$$

$$6852 - \frac{467 \times 145}{36} =$$

$$r =$$

$$16661 - \frac{(467)}{36} \times 11047 - \frac{(-245)}{36}$$

$$6852 - \frac{- 67715}{36}$$

$$\left(16661 - \frac{218089}{36} \right) \times 11047 - \frac{21025}{36}$$

$$\begin{aligned}
 &= \frac{6852 + 1880 \cdot 97}{16661 - 6058.02 \times 11047 - 584.02} \\
 &= \frac{8732.97}{10602.98 \times 10462.98} \\
 &= \frac{8732.97}{10532.71} + .82 \\
 &= + .82
 \end{aligned}$$

सलुम्बर तथा खेरवाड़ा पंचायत समितियों के अध्यापकों के प्राप्तांकों पर सह-संबंध मूल्य + .82 प्राप्त हुआ। यह मूल्य उच्च स्तर का धनात्मक सह संबंध प्रकट करता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि दोनों पंचायत समितियों के अध्यापकों की राय में बहुत समानता है।

॥ द॥ खेरवाड़ा और कोटड़ा पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृत्ति में सह संबंध ज्ञात करना -

राजस्थान सरकार द्वारा दी जाने वाली विशेष सुविधाओं पर खेरवाड़ा और कोटड़ा पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृत्ति ज्ञात की गई। अभिवृत्ति प्राप्तांकों पर सह संबंध ज्ञात करने हेतु खेरवाड़ा के प्राप्तांकों को x तथा कोटड़ा के प्राप्तांकों को y मानकर विश्लेषण किया गया है जो इस प्रकार है :-

छेरवाड़ा और कोटड़ा पंचायत समितियों के अध्यापकों की
अभिवृत्ति में सह संबंध का विश्लेषण

x	$dx = 95 \quad dx^2$		y	$dy=90$	dy^2	$dx dy$
90	-5	25	77	-13	169	65
187	+12	144	77	-13	169	-156
70	-25	625	77	-13	169	-325
54	-41	1681	72	-18	324	-438
85	-10	100	94	+ 4	16	- 40
98	+ 3	9	94	+ 4	16	12
102	+ 7	49	92	+ 2	4	14
54	-41	1681	88	- 2	4	82
69	-26	676	92	+ 2	4	-52
85	-10	100	95	+ 5	25	-50
98	+ 3	9	92	+ 2	4	6
91	- 4	16	94	+ 4	16	-16
106	+11	121	95	+ 5	25	-55
112	+17	289	92	+ 2	4	34
83	-12	144	95	+ 5	25	-60
90	- 5	25	95	+ 5	25	-25
101	+ 6	36	95	+ 5	25	30
99	+ 4	16	94	+ 4	16	16
91	- 4	16	93	+ 3	9	-12
106	+11	121	95	+ 5	25	55

101	+6	36	95	+5	25	30
99	+4	16	91	+1	1	4
106	+11	121	84	-6	36	-66
81	-14	196	88	-2	4	28
96	+1	1	94	+4	16	4
89	-6	36	89	-1	1	6
95	0	0	95	+5	25	0
105	+10	100	94	+4	16	40
101	+6	36	95	+5	25	30
103	+8	64	95	+5	25	40
104	+39	1521	93	+3	9	117
95	0	0	92	+2	4	0
73	-22	484	84	+6	36	132
51	-44	1936	83	-7	49	308
76	-19	361	85	-5	25	95
79	-16	256	94	+4	16	-64
-----		-----	-----		-----	-----
+159		11047	+ 95		1387	+ 2266
-304			- 86			- 241
-----			-----			-----
-145			+ 9			+ 1725
-----			-----			-----

४४४

छेरवाड़ा व कोटड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों की अभिवृत्ति
में सह संबंध का विश्लेषण -

$$dx = 145 \quad dx^2 = 11045 \quad dy = 9 \quad dy^2 = 1387 \quad dxdy = 1723$$

$$1723 = \frac{-145 \times 9}{36}$$

$$11045 - \frac{(-145)^2}{36} \times 1387 - \frac{(9)^2}{36}$$

$$1723 = \frac{-1305}{36}$$

$$11045 - \frac{21025}{36} \times 1387 - \frac{81}{36}$$

$$= \frac{1723 + 36.25}{36}$$

$$11045 - 584.02 \quad 1387 - 2.25$$

$$1759.25$$

$$10460.98 \times 1384.75$$

$$1759.25$$

$$14485842$$

$$= \frac{1759.25}{3806.02} + .46$$

$$= . + .46$$

खेरवाड़ा तथा पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृत्ति पर सह-संबंध मूल्य 0.46 प्राप्त हुआ। यह सह संबंध भी धनात्मक प्राप्त हुआ है। इससे यह स्पष्ट होता है कि दोनों अध्यापकों की राय में भी काफी समानता है।

४ घ४ कोटड़ा तथा सराड़ा पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृत्ति पर सह संबंध -

कोटड़ा तथा सराड़ा पंचायत समितियों के अध्यापकों की राज्य सरकार द्वारा शिक्षा विकास हेतु दी जाने वाली विशेष सुविधाओं पर अभिवृत्ति ज्ञात की गई। अभिवृत्ति के प्राप्तांकों पर सह संबंध ज्ञात करने हेतु कोटड़ा के प्राप्तांकों को ४ तथा सराड़ा के प्राप्तांकों को ५ मानकर विश्लेषण किया गया, जो इस प्रकार है :-

	= 2		= 2		100	
77	-13	169	92	-8	64	104
77	-13	169	121	+21	441	-273
77	-13	169	62	-38	1444	494
72	-10	324	45	-55	3025	990
94	+ 4	16	105	+ 5	25	-20
94	+ 4	16	114	+14	196	56
92	+ 2	4	119	+19	361	36
88	-2	4	48	-52	2704	104
92	+2	4	71	-29	841	-58
95	+5	25	90	-10	100	-50

92	+2	4	108	+8	64	16
94	+4	16	118	+18	324	72
95	+5	25	103	+ 3	9	15
92	+2	4	130	+30	900	60
95	+5	25	107	+ 7	49	35
95	+5	25	102	+ 2	4	10
95	+5	25	132	+32	1024	160
94	+4	16	131	+31	961	124
93	+3	9	95	- 5	25	-15
95	+5	25	111	+11	121	15
95	+5	25	113	+13	169	65
91	+1	1	97	-3	9	-3
84	-6	36	104	+4	16	-24
83	-2	4	89	-11	121	22
94	+4	16	106	+ 6	36	24
89	-1	1	106	+ 6	36	-6
95	+5	25	96	-4	16	-20
94	+4	16	103	+3	9	12
95	+5	25	111	+11	121	55
95	+5	25	108	+8	64	40
93	+3	9	83	-17	289	-51
92	+2	4	105	+5	25	10
84	-6	36	74	-26	676	156

83	-7	49	80	-20	400	140
85	-5	25	86	-14	196	70
94	+4	16	84	-16	256	-64
<hr/>						
	+ 95	1378		-308	15000	+ 2885
	- 86			+257		- 584
	<hr/>					
	+ 9			- 51		2301
	<hr/>					

॥ ५॥ कोटड़ा तथा सराड़ा पंचायत समितियों के अध्यापकों की
अभिवृत्ति पर सह संबंध विश्लेषण -

$$dx = 9 \quad dx^2 = 1378 \quad dy = -51 \quad dy^2 = 15000 \quad dxdy = 2301$$

$$r = \frac{2301 - \frac{9 \times -51}{36}}{1378 - \frac{(9)^2}{36} \times 15000 - \frac{(-51)^2}{36}}$$

$$2301 - \frac{-459}{36}$$

$$= \frac{1378 - \frac{81}{36} \times 15000 - \frac{2601}{36}}$$

$$2301 + 12.75$$

$$1378 - 2.25 \times 15000 - 72.25$$

$$= \frac{2313.75}{1375.75 \times 14927.75}$$

$$= \frac{2313.75}{20536852}$$

$$= \frac{2313.75}{4531.76} + .51$$

कोटड़ा पंचायत समिति तथा सराड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तियों पर सह संबंध मूल्य + .51 प्राप्त हुआ यह उच्च धनात्मक सह संबंध है। इससे स्पष्ट होता है कि दोनों अध्यापकों की राय में बहुत समानता है।

४४ सराड़ा तथा धरियावद पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृत्ति में सह-संबंध ज्ञात करना -

सराड़ा तथा धरियावद पंचायत समिति के अध्यापकों की अभिवृत्ति पर सह संबंध ज्ञात करने हेतु सराड़ा के प्राप्तियों को \bar{x} तथा धरियावद के प्राप्तियों को \bar{y} मानकर विश्लेषण किया गया जो इस प्रकार है -

॥ र ॥ सराड़ा तथा धरियावद पंचायत समितियों के अ्यापकों
की अभिवृत्ति में सहसंबंध का विश्लेषण -

$\frac{=}{100} \quad 2$			$\frac{=}{100} \quad 2$		
92	-8	64	110	+10	100 -80
121	+21	441	126	+26	676 546
62	-38	1444	60	-40	400 1520
45	-55	3025	54	-45	2116 2530
105	+ 5	25	98	- 2	4 -10
114	+14	196	66	-34	1156 -476
119	+19	361	127	+27	729 513
48	-52	2704	54	-96	2116 2392
71	-29	841	78	-22	484 638
90	-10	100	85	-15	225 150
108	+8	64	115	+15	225 120
118	+118	324	111	+11	121 198
103	+ 3	9	110	+10	100 30
130	+ 30	900	141	+41	1681 1230
107	+ 7	49	108	+8	64 56
102	+ 2	4	108	+8	64 16
132	+32	1024	138	+38	1444 1216
131	+31	961	115	+15	225 465
95	-5	25	113	+13	169 65

111	+ 11	121	119	+19	361	209
113	+13	169	128	+28	784	364
97	- 3	9	110	+28	100	-30
104	+ 4	16	111	+11	121	44
89	-11	121	106	+6	36	-66
106	+ 6	36	116	+16	256	96
106	+ 6	36	102	+2	4	12
96	= 4	16	125	+25	625	-100
103	+ 3	9	128	+28	324	84
111	+111	121	136	+36	1296	396
108	+ 8	64	125	+25	625	200
83	-17	289	123	+23	529	-391
105	+5	25	116	+16	256	80
74	-26	676	85	-15	225	390
80	-20	400	77	-23	529	460
86	-14	196	114	+14	196	-196
84	-16	256	82	-18	324	288
-----		-----	-----		-----	-----
-308		15000	+481		18690	+14308
+257		-----	-261			-1349
-----			-----			-----
- 51			220			+12959
-----			-----			-----

॥ 6॥ सराड़ा तथा धरियावद पंचायत समितियों के अध्यापकों की
अभिवृत्ति में सहसंबंध ग्राह करना -

$$dx = 51 \quad dx^2 = 15000 \quad dy = 220 \quad dy^2 = 18960 \quad dxdy = 12959$$

$$12959 - \frac{51 \times 220}{36}$$

$$= \frac{15000 - \left(\frac{51}{36}\right)^2 \times 18960 - \frac{220}{36})^2}{36}$$

$$12959 - \frac{11220}{36}$$

$$= \frac{15000 - \frac{2601}{36} \times 18960 - \frac{48400}{36}}{36}$$

$$= \frac{12959 - 311.66}{15000 - 72.25 \times 18960 - 1344.44}$$

$$12647.34$$

$$= \frac{14927.75 \times 17345.56}{12647.36} + .78$$

$$= \frac{12647.36}{16091.30}$$

सराड़ा तथा धरियावद पंचायत समिति के अध्यापकों के प्राप्तियों पर सह संबंध मूल्य + 0.78 प्राप्त हुआ। यह उच्च स्तर का धनात्मक सह संबंध है। इससे स्पष्ट होता है कि दोनों अध्यापकों की राय बहुत समानता है।

सह संबंध विश्लेषण के प्रमुख निष्कर्ष -

- 18 गिरवा तथा झाड़ोल पंचायत समितियों के अध्यापकों की राय में धनात्मक सह संबंध पाया गया।
- 28 गिरवा तथा झाड़ोल के अध्यापकों की राय में भी धनात्मक सह संबंध पाया गया।
- 38 झाड़ोल तथा सलूमबर के अध्यापकों की राय में भी धनात्मक सह संबंध पाया गया।
- 48 सलूमबर तथा खेरवाड़ा के अध्यापकों की राय में धनात्मक सह संबंध पाया गया।
- 58 खेरवाड़ा तथा कोटड़ा के अध्यापकों की राय में भी धनात्मक सह संबंध पाया गया।
- 68 कोटड़ा व सराड़ा के अध्यापकों की राय में भी धनात्मक सह संबंध पाया गया।
- 78 सराड़ा तथा धरियावद के अध्यापकों की राय में भी धनात्मक सह संबंध पाया गया।

सांख्यिकीय विश्लेषण

काइ स्कवायर द्वारा परिकल्पना का परीक्षण -

परिकल्पना को सार्थक बनाने के लिए χ^2 का उपयोग किया गया है। χ^2 के लिए निम्न उपयोग काम में लिया गया है।

सूत्र :-

डिग्री की स्वतंत्रता के लिए $(C-1) \times (r-1)$ को
कालम में लिया है

$f^0 =$ आवृत्ति जो पाई गई ।
 $f^c =$ आवृत्ति जो मानी गई ।
 कॉलम
 पंक्तियाँ

इस सूत्र में दत्तों की आवृत्तियों को मानी गई आवृत्तियों से बाकी निकाला गया है । इसके बाद मानी गई आवृत्ति से उस संख्या में भाग देते हैं और प्राप्त संख्या को जोड़ देते हैं । यही प्राप्त संख्या χ^2 का मूल्य होता है । इस मूल्य को सारिणी मूल्य से तुलना की जाती है ।

स्वतंत्रता स्तर को ज्ञात करने हेतु $(C-1) \times (r-1)$ का सूत्र लगाया गया । इसका अर्थ होता है कि जितने कालम हैं उसमें से एक को बाकी निकालना तथा जितनी पंक्तियाँ हैं उसमें से एक को बाकी निकाल कर दोनों संख्याओं को आपस में गुणा करना गुणो से प्राप्त संख्या को स्वतंत्रता का स्तर माना गया है । अनुसंधान में प्राप्त दत्तों के मध्यार्क की योग पर χ^2 परीक्षा किया गया जो इस प्रकार है -

.....

काह रकायर परीक्षी T

= 144.45	123.03	139.87	115.96	110.2	134.2	127.86
= 16.511	- 4.9	11.94	11.97	-17.93	6.34	0.07
= 16913.532	48.02	142.563	143.28	321.48	40.195	0000.49
= 132.209	.375	1.114	1.119	2.512	314	.000000036
=	= 137.643	मूल्य				

स्वक्रो T स्तर नात करने हेतु -

$$= (C-1) \times (r-1)$$

$$= (2-1) \times (7-1)$$

$$= \text{स्वक्रो T स्तर 6 पर 2 मूल्य } 137.643$$

प्राप्त हुआ ।

उक्त सारणी के अनुसार सभी पंचायत समितियों के अध्यापकों के अभिवृत्ति प्राप्तियों का χ^2 मूल्य 137.643 प्राप्त हुआ यह मूल्य सारणी में 6 स्वतंत्रता स्तर पर दिए गए सारणी मूल्य से अधिक पाया गया। इसका अर्थ यह हुआ कि परिकल्पना सार्थक पाई गई अर्थात् सभी अध्यापकों की राय में जनजाति वर्ग को दी जाने वाली विशेष सुविधाओं का शिक्षा के विकास पर प्रभाव पड़ता है।

दत्तों पर χ^2 सूत्र का परीक्षा -

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य को प्रमाणिकता के निकट लाने हेतु सूत्र का उपयोग किया गया।

$$\chi^2 = \sum \left[\frac{(T^e - f^e)^2}{f^e} \right] \quad |||$$

सूत्र का विश्लेषण

= is difference between two sample means.

- (1) Lonise H. " Research Methods in Social Science
Kidder Relation ", Holt, Rinehart and Winston
New York 1980, pp 338

- = sample is number of observation in the sample.
- = is the variances of sample one and sample two.
- = SP is the pooled variance of the two sample.

(~~सूत्र~~ ~~द्वारा~~ ~~दत्तों~~ के विश्लेषण की विधा -

Larger the value of t the less likely it is that the null hypothesis is true and consequently, the more probable the sample represent different population. This should make sense from looking at the formula. The larger the difference between the sample. The larger the numborator will be and thus the larger. (1)

लूइस एच. कीडर महोदय ने ~~त~~ टेस्ट को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि इस परीक्षा द्वारा दो चरों के बीच पाए जाने वाले अंतर को ज्ञात किया जाता है। इन्होंने आगे स्पष्ट किया कि जितना का मान अधिक होगा उतने ही शून्य परिकल्पना सही होगी।

प्रस्तुत अध्ययन में उदयपुर जिले की सातों पंचायत समितियों प्रास्ताविकों पर ~~परीक्षा~~ परीक्षा किया गया है।

सारणी :

(~~टेस्ट~~) टेस्ट परीक्षा के मूल्य एवं परिकल्पना की सार्थकता

क्र०सं०	नाम तहसील	टेस्ट प्राप्त मूल्य	सार्थकता/ निरर्थकता
1	गिरवा/झाड़ोल	0.0179623	सार्थक
2	झाड़ोल/सलुम्बर	0.356162	सार्थक
3	सलुम्बर/खेरवाड़ा	0.011887	सार्थक
4	खेरवाड़ा/कोटड़ा	0.017633	सार्थक
5	कोटड़ा/सराड़ा	0.0148043	सार्थक
6	सराड़ा/धरियावद	0.0307023	सार्थक

उपरोक्त सारणी से यह स्पष्ट होता है कि सभी पंचायत समितियों में आपसी तुलना करने पर मूल्य बहुत ही कम प्राप्त हुआ। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि सभी पंचायत समितियों की राय में बहुत समानता है। इनमें अन्तर बहुत ही नगण्य प्राप्त हुआ।

$$\begin{aligned}
 &= \frac{6204.89}{73686220} \\
 &= \frac{6204.89}{8584.06} \\
 &= +.722
 \end{aligned}$$

सह संबंध का प्राप्त मूल्य 722 प्राप्त हुआ। यह मूल्य धनात्मक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि गिरवा और पंचायत समिति के अध्यापकों की शिक्षा के विस्तार हेतु सरकार द्वारा दी जाने वाली विशेष सुविधाओं की अभिवृत्ति में बहुत अधिक समानता पाई गई।

४ ब॥ झाड़ोल व सलूमबर पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृत्ति में सह संबंध का विश्लेषण -

झाड़ोल तथा सलूमबर पंचायत समितियों के अध्यापकों की शिक्षा विकास हेतु राज्य सरकार द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं पर अभिवृत्ति ज्ञात की गई। अभिवृत्ति के प्राप्तियों पर सह संबंध ज्ञात करने हेतु झाड़ोल के प्राप्तियों को तथा सलूमबर के प्राप्तियों को मानकर सह संबंध मूल्य ज्ञात किया गया जो इस प्रकार है -

$$\begin{aligned}
 8823 &= \frac{8 \times 467}{36} \\
 r &= \frac{11244 - \frac{8}{36} \times 16661 - \frac{467}{36}}{2} \\
 8823 &= \frac{3736}{36} \\
 11244 &= \frac{8^2}{36} \times 16661 - \frac{467^2}{36}
 \end{aligned}$$

$$\begin{array}{r} 8823 - 103 \\ \hline 11244 - \frac{64}{1296} \times 16661 - \frac{218089}{1296} \end{array}$$

$$\begin{array}{r} 8720 \\ \hline \hline 11244 - 049 \times 16661 - 168.27 \end{array}$$

$$\begin{array}{r} 8720 \\ \hline \hline 11243.51 \times 16492.73 \end{array}$$

$$\begin{array}{r} 8720 \\ \hline 13617.48 \end{array} = .640$$

$$r \text{ value} = .640$$

सह संबंध का प्राप्त मूल्य .640 प्राप्त हुआ। यह मूल्य धनात्मक है। इससे यह स्पष्ट होता है कि झाड़ोल और सलूमबर पंचायत समितियों के अध्यापकों की शिक्षा के विस्तार हेतु सरकार द्वारा दी जाने वाली विशेष सुविधाओं की अभिवृत्ति में बहुत अधिक समानता पाई गई।

॥स॥ सलूमबर तथा खेरवाड़ा पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृत्ति पर सह संबंध -

सलूमबर व खेरवाड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों की शिक्षा के विस्तार हेतु राजस्थान सरकार द्वारा दी जाने वाली

अतिरिक्त सुविधाओं पर अभिवृत्ति मापनी द्वारा प्रास्तिक ज्ञात किया गया। प्रास्तों पर सह संबंध ज्ञात करने हेतु सलूमबर के अध्यापकों के प्रास्तिकों को तथा खेरवाड़ा के अध्यापकों के प्रास्तिकों को मानकर विश्लेषण लिया गया जो इस प्रकार है।

सलूमबर व खेरवाड़ा पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृत्ति में
सहसंबंध का विश्लेषण -

$$dx = 467 \quad dx^2 = 16661 \quad dy = -145 \quad dy^2 = 11047 \quad dxdy = 6852$$

$$6852 - \frac{467 \times -145}{36}$$

$$r = \frac{\dots\dots\dots}{\dots\dots\dots}$$

$$16661 - \frac{467}{36} \times 11047 - \frac{-145}{36}$$

$$6852 - \frac{67715}{36}$$

$$r = \frac{\dots\dots\dots}{16661 - \frac{218089}{1296} \times 11047 - \frac{21025}{1296}}$$

$$r = \frac{6852 + 1880.97}{166661 - 168.27 \times 11047 - 16.22}$$

$$= \frac{8732.97}{16492.73 \times 11030.75}$$

$$= \frac{8732.97}{13488.03} = .647$$

$$r \text{ value} = .647$$

सलूमबर तथा खेरवाड़ा पंचायत समितियों के अध्यापकों के प्राप्तांकों पर सह संबंध मूल्य $\frac{1}{2}$ मूल्य $\frac{1}{2}$.647 प्राप्त हुआ। यह मूल्य धनात्मक संबंध प्रकट करता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि दोनों अध्यापकों की राय में बहुत समानता है।

॥द॥ खेरवाड़ा और कोटड़ा पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृत्ति में सह संबंध ज्ञात करना -

राजस्थान सरकार द्वारा दी जाने वाली विशेष सुविधाओं पर खेरवाड़ा और कोटड़ा पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृत्ति ज्ञात की गई। अभिवृत्ति प्राप्तांकों पर सह संबंध ज्ञात करने हेतु खेरवाड़ा के प्राप्तांकों को मानकर तथा कोटड़ा के प्राप्तांकों को मानकर विश्लेषण किया गया है जो इस प्रकार है -

खेरवाड़ा व कोटड़ा पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृत्ति में
सह संबंध का विश्लेषण -

$$dx = -145 \quad dx^2 = 11045 \quad dy = 9 \quad dy^2 = 1387$$

$$dxdy = 1725$$

$$\begin{aligned} r &= \frac{\frac{-145 \times 9}{36}}{11047 - \frac{-145}{36} \times 1387 - \frac{9}{36}} \\ &= \frac{1725 - \frac{1305}{36}}{11047 - \frac{21025}{1296} \times 1387 - \frac{81}{36}} \\ &= \frac{1725 - (-36.25)}{11047 - 16.22 \times 1387 - .062} \\ &= \frac{1725 + 36.25}{11047 - 16.22 \times 1387 - .062} \\ &= \frac{1761.25}{3910.60} = .450 \end{aligned}$$

$$r = .450$$

खेरवाड़ा तथा कोटड़ा पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृत्ति पर सहसंबंध मूल्य 450 प्राप्त हुआ। यह संबंध भी धनात्मक है। इससे स्पष्ट होता है कि दोनों अध्यापकों की राय में भी काफी समानता है।

॥य॥ कोटड़ा तथा सराड़ा पंचायत समितियों के अध्यापकों की
अभिवृत्ति पर सह संबंध -

कोटड़ा तथा सराड़ा पंचायत समितियों के अध्यापकों की राज्य सरकार द्वारा शिक्षा विकास हेतु दी जाने वाली विशेष सुविधाओं पर अभिवृत्ति ज्ञात की गई। अभिवृत्ति के प्राप्तियों पर सह संबंध ज्ञात करने हेतु कोटड़ा के प्राप्तियों को तथा सराड़ा के प्राप्तियों को मानकर विश्लेषण किया गया है, जो इस प्रकार है -

लगातार

$$(5) \quad dx^2 = 1378, \quad dy = 51, \quad dy^2 = 15000 \quad dxdy = 2301$$

$$2301 - \frac{-51 \times 9}{36}$$

$$1378 - \frac{9}{36} \times 15000 = \frac{-51}{36}$$

$$2301 - \frac{-459}{36}$$

$$1378 - \frac{81}{1296} \times 15000 = \frac{2601}{1296}$$

$$2301 + 12.75$$

$$1378 - .062 \times 15000 = 2.006$$

$$2313.75$$

$$1386.36 \times 14997.99$$

$$= \frac{2313.75}{4559.89} = .507$$

$$r = .507$$

कोटड़ा तथा सराड़ा पंचायत समितियों के अध्यापकों के प्राप्तांकों पर सह संबंध मूल्य 503 प्राप्त हुआ। यह मूल्य धनात्मक है। इससे स्पष्ट होता है कि दोनों अध्यापकों की राय में बहुत समानता है।

॥ र॥ सराड़ा तथा धरियावद पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृद्धि में सहसंबंध ज्ञात करना -

सराड़ा तथा धरियावद पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृद्धि पर सह संबंध ज्ञात करने हेतु सराड़ा के प्राप्तांकों को तथा धरियावद के प्राप्तांकों को मानकर विश्लेषण किया गया जो इस प्रकार है -

सराड़ा व धरियावद पंचायत समितियों के अध्यापकों की अभिवृद्धि में सह संबंध का विश्लेषण -

$$dx = 51, dx^2 = 15000 \quad dy = 220 \quad dy^2 = 18960 \quad dydx = 12959$$

$$r = \frac{12959 - \frac{-51 \times 220}{36}}{15,000 - \frac{-15}{36} \times 18960 - \frac{220}{36}}$$

$$12959 - \frac{-11220}{36}$$

$$15000 - \frac{2601}{1296} \times 18960 - \frac{48400}{1296}$$

$$= \frac{12959 + 311.66}{15000 - 2.006 \times 18960 - 37.34}$$

$$15000 - 2.006 \times 18960 - 37.34$$

$$\frac{13270.66}{14997.99 \times 18922.66}$$

$$= \frac{13270.66}{16846.39} = .78$$

$$r = .78$$

अन्तम परिच्छेद

सारांश, निष्कर्ष, सुट्टा :
=====

प्रस्तावना :
=====

1. भारत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं वर्तमान स्थिति

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि :
=====

भारत हमें कई जातियों का प्रदेश है । विदेशी इसे जातियों का अजायबघर कहते हैं । ऐसे घेदों में तो वनों के आधार पर बार पुकार की जातियाँ; डामण, वैश्य, क्षत्री और छत्र हो मानी गई हैं किन्तु आत्मन्तर में इन जातियों में इतना परिवर्तन आया कि इनका मूल स्वरूप ही समाप्त हो गया । ऐतिहासिक ज्ञान में भारत हमें जिन जातियों द्वारा आक्रमण हुए उन्होंने अपना प्रभाव यहाँ की मूल जातियों पर छोड़ा । इतिहास बताता है कि अरब भी भारत के बाहर से आये हैं । यहाँ के मूल निवासी जायद द्राविड और आदिवासी ही थे जिन्हें आक्रमण द्वारा भारत के भीतरी भागों में

औरत जाका रहा है । ये जातिवर्ग अपना अस्तित्व बनाने के लिए प्रभुति के साथ समीक्षा करके रहने लगी । राजस्थान में भी ऐसी जातिवर्ग आज भी विद्यमान है । इन्हें भीन, भीजा, हामोर, तहरीया, मराहोवा, कन्वर, तसिरी, आदि जनजातिवर्गों के नाम से जाना जाता है ।

राजस्थान के इतिहास में इन जातिवर्गों को देश भोजन एवं आबादी पर बर मिलने वाली जाति के नाम से जाना जा सकता है । मेवाड़ का इतिहास बताता है कि राजा पुराण ने देश के लिए बलिदान और त्याग अग्रेसर नहीं किया । पुराण के साथ अन्ध के अन्ध मित्राकर "भीमराजा" जनजातिवर्गों का सरदार अपनी सम्पूर्ण जाति के साथ था । भीमराजा ने न केवल युद्ध में अपितु शांतिव्यवस्था में भी देश में शांति एवं व्यवस्था बनाने में राजा का साथ हमेशा दिया है । मेवाड़ का राजापुत्र जिसमें राजा के साथ-साथ भीमराजा का भी दिग्गह है भीमराजा एवं उसकी जाति को मेवाड़ में दिये गये सम्मान को आज भी पुनर्जीवित कर रहा है ।

वही नहीं-मेवाड़ भीर और- के नाम से यादगार होना
 ने हमें साक्षात् ज्ञात है कि जहाँ-तहाँ रहने में सहायक दिया है ।
 वही मेवाड़ भीर और इटली का नाम भी और रोजगार
 के बाद भी अपनी पुरानी यादों को तरों ताजा करती है ।

साधारण की यह आदिवासी जाति समाज है
 बहुत ही शोभी एवं महत्त्वपूर्ण है । मरीची, जम्बू एवं प्रकृत
 के होते रहने से इनमें और भी ताकत बढ़ा है । यह जाति एक
 और तो प्रकृत से जुड़ी है वही समाज ने भी कालान्तर में
 इनका शोषण शुरू कर दिया । मरीची के कारण इनके जीवन-
 स्तर का समा जाने लगा । इनका प्रमुख धन्यता लेनी करना
 एवं उनकी उत्पादन पर आधारित रहना है किन्तु यहाँ पर
 भी समाज के विधो-विधानों ने इनका शोषण किया है ।

इतना होते हुए भी ये जातिवासी भारत प्रकृत की है
 पाते हुए: हो या न, सभी को भूत-प्रेत उन्नीस एवं बहिरी
 की धून पर इनके पैर सेते फिरते हैं कि मानो इनको कोई
 यम नहीं है । रीति-रिवाज और संस्कृति के मानो वे धनी

है । आज भी "गवरो नृत्य" मेवाड़ के शहरों में उसी प्रकार लोकोप्य है जैसा पूर्व में था । वही नहीं पाण्ड्यमी नृसिंहोत्सव केन्द्र एवं भारतीय लोक कला मण्डल में विदेशी पर्यटकों को इस नृत्य को दिखाया जाता है तो वे सँक भुग्ध हो जाते हैं । भारत उत्तर में भी इस नृत्य ने काफी दूर मचाई थी ।

इसका तब होने पर भी ऐसा लगता है कि इसकी संस्कृति हस्त होती जा रही है । इनके साथ शोषण के कारण इसका विकास नहीं हो रहा है । इस बात को स्वतंत्र भारत के संविधान में भी स्वीकार किया गया है वही कारण है कि इन जातियों को संविधान द्वारा कुछ विशेष सुविधाएँ प्रदान की गईं ताकि वे सूत धारा के साथ मिल कर अपना विकास कर सकें ।

21 जनजाति की वर्तमान स्थिति :

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के राजनीतिक दृष्टि में परिवर्तन हुआ । संघार के क्षणों में प्रजातन्त्र हुई । इन जातियों के परिणाम स्वरूप देश की मुख्य धारा से वे जातियाँ अधिक दूरने

जमी । संविधान में इनके अधिक, राजनैतिक जीवन के विषय

विशेष कानून बनाकर व्यवस्था की गई । संविधान की धारा

96 में लिखा है कि - "The state shall promote with special care the educational and economic interests of the weaker sections of the people and in particular of the Scheduled Castes and Scheduled Tribes and shall protect them special inhuman and all forms of exploitation."

इसे स्पष्ट होता है कि भारत सरकार इनके विकास के लिए बहुत ही विनम्र है । संविधान की धारा 275 में यह स्पष्ट लिखा है कि इन जातियों के लिए केन्द्र सरकार विशेष अनुदान के रूप में राज्य सरकारों को अनुदान राशिनुदान जेगी ।

विशेष सुविधाओं को राजस्थान सरकारी की दृष्टि से देखें तो राजस्थान में भी कई प्रकार की सुविधाएँ इन्हे राज्य सरकार ने प्रदान कर रखी हैं । भ्रमण करने के लिए आज्ञा,

निःशुल्क छात्रावास, निःशुल्क पाठ्य पुस्तकें एवं पाठ्य सामग्री
 आदि, आराम निवास, निःशुल्क निवास व्यवस्था, निजी
 जीर्णोद्धार, प्रवेश हेतु लीटों का आरम्भ जारी ।

अ) हस्ताक्षरों की प्रतीति :

अ) प्रत्यक्ष सुविधा :

प्रत्यक्ष की राशि समय समय पर क्या तरह के अनुसूच
 परिवर्तित होती रही है । मसलन 1984 जुलाई के पूर्व यह क्या
 6 से 6 तक प्रति मास 12-00 तथा प्रति मास 15-00 प्रतिमाह
 थी । इसी प्रकार क्या 9 से 11 तक यह राशि मास/मास दोनों
 की प्रतिमाह 25-00 मिलती थी । इसके बाद राज्य सरकार के
 आदेश प्रमाणिक २५-१/४/८१/प्र.सी.एच./२८.आर.पू.सी./८५-८६
 68071, जयपुर दिनांक 30-1-85 के अनुसार जुलाई 1984 से
 क्या 6 से 6 तक प्रति मास 15-00 एवं प्रति मास 20-00
 प्रतिमाह हो गई । यह अप्रैलरी 20 प्रतिमाह रही । इसी प्रकार
 क्या 9 से 11 तक के मासों की प्रतिमाह 30-00 तथा छात्राओं
 की प्रतिमाह 40-00 कर दिया गया । यह अप्रैलरी 602

रही । इसके यह स्पष्ट होता है कि बागों की तुलना में छायाओं की सम्बन्धित राशि में तीन गुना अधिक प्रति है । इसके यह स्पष्ट होता है कि हरबार छायाओं की विशेष सुविधाएँ प्रदान करके उनकी शिक्षा को अधिक बढ़ाना चाहती हैं ।

राजस्थान सरकार द्वारा उदयपुर जिले में नगरपालिका क्षेत्र में 7 स्थानों पर अनुसूचित जाति, जनजाति, पौरवर्गीय जाति, हीरान कल्याण के लिए छायावासी सुविधाएँ उपलब्ध हैं । इसी प्रकार उदयपुर में अनुसूचित जातिवालों में, महिला सम्बन्धित उदयपुर, महिला आश्रम उदयपुर, वनवासी छायावास, आदिवासी छायावास समुदाय, वनोद्धार छायावास, महिला पौष्टिक छायावास प्रमुख छायावास हैं । इनमें कुल स्थान 355 छात्रों के लिए स्वीकृत हैं ।

उदयपुर जिले के संभावित समिति को हस्तान्तरित छायावासी में रेलमगस, कोटड़ा (जातिवासी), कोटड़ा बाल, जाति, गजाना, फातिवा, छेरावाड़ा (जातिवासी) छाया, पौरवावद तथा वावण्ड जनजाति के छात्रों हेतु छायावासी की सुविधा उपलब्ध है ।

उदयपुर जिले में समस्तान सरदार और उदय-
पुर छात्रावालों में आदिवासी छा-त्रा, दासक, आदि-
वासी छात्रा, कुम्हार, और वन भोज और
[समवेत], ए.डी. आदिवासी छात्रा, वनवासी छात्रा
छात्रा केन्द्र, ए.डी. और छात्रा ए.डी. 19-8. और
संघर्ष, छात्र छात्रा, केन्द्र 19-8. और संघ-
र्ष, छात्राओं की सुविधा उपलब्ध है। इन सभी छात्रा-
वालों में कुल 235 सीटें उपलब्ध हैं। इन प्रकार उदयपुर जिले
में समूची छात्रावालों के लिए कुल ध्यान 4162 छात्रों तथा
475 छात्राओं के लिए है जो 4635 महाविद्यालयों के हैं।

इन सभी छात्रावालों में भोजन, नारता, पानी,
बिजली, नौकर तथा घर, छात्र, तेल, रोजगारी की सुविधा,
आदि छात्रों की सुविधा, रतौड़िया, अंग छात्रों अध्यापक,
व्यवस्थापक तथा विचारक की व्यवस्था भी है।

उपरोक्त छात्रावालों के अलावा उदयपुर जिले में
भा.सू. के आधार पर भी छात्रावालों की सुविधा राज्य
सरकार द्वारा की गई है। ये छात्रावास्त भीष्म तथा लीना

देश में है जिनमें कुल 30 गांवों के प्रत्येक हेक्टा रकबा उपलब्ध है ।

राजस्थान सरकार ने उपर्युक्त क्षेत्रों में ग्रामीण क्षेत्रों के आवासीयों की सुविधाएँ भी उपलब्ध कराई है । इनके 1962 से नियमित किया गया है । इनमें देश आवासीय, मोराना, नावला, जोड़ा, डेह, आठौली, बरदा, भाँगा, बावलाडा, कल्याणपुर, टीकर, बाड़ोली, बारावाली, भावली, पारलोला, काली भीर, कुसादा और परवादा प्रमुख है । इन सभी में प्रत्येक में 25 गांवों के लिए स्थान है । इस प्रकार इनमें कुल 375 गांवों के लिए स्थान उपलब्ध है ।

आत्म विकास :

राज्य सरकार ने उपरोक्त सुविधाओं के अभाव ग्रामीण क्षेत्रों के दूर-दराज इलाकों के शैक्षणिक विकास हेतु इन क्षेत्रों में आत्म विकासियों की एक योजना संघर्षित की है । इस योजना के अन्तर्गत अनन्तारित बाहुल्य क्षेत्र के दूर-दराज इलाकों में ऐसे आवासीय विकास्यों को ही जहाँ जिनमें निः-सुतक बढ़ाई के साथ-साथ रहने, जाने, पुरतकों एवं स्टेशनरी

प्रौद्योगिकता, मनोरंजन, खेल आदि को सभी सुविधाएँ उपलब्ध कर-
वाई है। उदाहरण के लिए इन विद्यालयों की कुल संख्या 17 है।
इनमें होस्टल वाईन, लाईफ लाईन आदि उपलब्ध होता है।

उपरोक्त सभी सुविधाओं को वर्तमान स्थिति का विवर-
ण अद्यापि दो में दिया गया है।

समस्या के उद्देश्य :

- 1) उदाहरण के लिए के अन्यायित वर्ग के शैक्षिक उन्नयन हेतु राज्य
तरीका द्वारा दी जाने वाली विशेष सुविधाओं को वर्त-
मान स्थिति को ज्ञात करना।
- 2) अन्यायित वर्ग के शैक्षिक उन्नयन हेतु अद्यापि और अभि-
भावों की अभिवृत्ति ज्ञात करना।
- 3) अन्यायित वर्ग के शैक्षिक उन्नयन हेतु महत्वपूर्ण क्राय प्रस्तुत
करना।

समस्या के क्षेत्र :

प्रस्तुत अध्ययन के निम्न क्षेत्र निर्धारित किये गए हैं -

क) राजनीतिक हेतु :- प्रस्तुत समस्या का अध्ययन के अन्तर्गत किया जा रहा है ।

ख) प्रस्तुत समस्या के अध्ययन किन्तु निम्न निर्धारित बिन्दु हैं :-

1- जनजाति वर्ग के शैक्षणिक उन्नयन हेतु राज्य सरकार द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं को वर्तमान स्थिति प्राप्त करना ।

2- उदयपुर जिले के जनजाति वर्ग की शैक्षणिक स्थिति को प्राप्त करना ।

3- जनजाति वर्ग के शैक्षणिक उन्नयन के क्रम में अल्प-वर्षों एवं समाज की अभिवृद्धि प्राप्त करना ।

ग) उदयपुर जिले के उच्च प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों एवं सम्बन्धित अभिभावकों का ध्यान करना ।

समस्या का औचित्य :

प्रस्तुत अनुसंधान कई दृष्टि से महत्वपूर्ण है । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के सामाजिक दृष्टि में परिवर्तन हेतु भारतीय

संस्थान में कई व्यवस्थाएँ की गईं । इन व्यवस्थाओं के द्वारा-
 मूल जनजाति वर्ग का शैक्षिक उन्नयन जो होना चाहिये था वह
 अभी तक नहीं हो पाया है । अतः यह बात करना बहुत जरूरी
 हो जाता है कि कमजोरी किस स्तर पर है ? क्या इन
 संस्थानों का उपयोग प्रुप्त है नहीं हो रहा है ? या जब
 प्रुत्पयोग हो रहा है या ये उस वर्ग तक पहुँचती हो नहीं है ?
 कहीं न कहीं कुछ गड़बड़ी अवश्य है अन्यथा इनका शैक्षिक उन्नयन
 पूरा होना चाहिये था । इस जोष के माध्यम से उपरोक्त
 तथ्यों को हाथ करने के लक्ष्य निर्धारित किये गईं ताकि कॉमनों
 को दूर रीक्या जा सके ।

इन कॉमनों, अव्यवस्थाओं अथवा व्यवस्थाओं की
 वस्तु विधायक बात हो जायेगी तो निःसन्देह आयोजना करने
 में सरकार को और शिक्षाविदों को बहुत आसानी रहेगी ।
 आयोजना द्वारा इन कॉमनों को पूरा करने का प्रयत्न रीक्या
 जायेगा ।

जनजाति वर्ग एक ऐसे तमाम में रह रहा है जिसने
 कई वर्षों तक इस वर्ग का जोषन रीक्या है किन्तु अब वह

बहुत विचार बाटता है । सरकार ने भी इस चीज के वैधानिक उद्घाटन हेतु विशेष प्रोत्साहन प्रदान किये हैं । इन प्रोत्साहनों का सही उपयोग कहीं तक हो रहा है और क्या इसके द्वारा जनजाति वर्ग का वैधानिक उन्नयन पूरा हो सकेगा ? या इनकी कानूनी आवश्यकता है ? या इनमें कटोरी लीनो वाली है ? ये सवाल पूछे जा सकते हैं जिनकी इस नीति द्वारा जात किया जा रहा है ? इनके जात होने से न केवल समाज के दृष्टिकोण में परिवर्तन होना अपितु सरकार को भी आवश्यकता निर्माण में बहुत सहायता मिलेगी । अतः कई दृष्टि से महत्वपूर्ण है ।

पारिभाषिक शब्द :

=====

अ। अनुसूचित जाति/जनजाति :

=====

भारतीय संविधान में दसोंई गई विभिन्न जातियाँ जो आर्थिक, सामाजिक एवं अन्य दृष्टिकोण से पिछड़ी हैं । उदाहरण के लिए में प्रसिद्धा गोह, मीना, मराठीया, कामोर, सहारया, काथीरिया, केर, तिली आदि हैं ।

क) विविध सुविधाएँ :

राजस्थान सरकार द्वारा जनजाति वर्ग के शैक्षिक अन्वयन हेतु की जाने वाली ज़रूरतों को ध्यान में रखते हुए, छात्र-सुविधि, छात्रावास, आराम विद्यालय, कौशल विकास आदि ।

ख) विद्यालय :

वे सभी विद्यालय जिनको राजस्थान सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त है तथा जो कक्षा 6 से 10 तक अध्यापक करवाते हैं ।

ग) आराम विद्यालय :

राजस्थान सरकार ने जनजाति छात्रों में शिक्षा के प्रति उत्साह को बढ़ाने हेतु ग्रामीण अंचलों में ऐसे विद्यालय खोले हैं जिनमें रहने की सुविधा, खाने की, पुस्तक एवं खेलकूद की निःशुल्क व्यवस्था होती है । इन विद्यालयों का सम्पूर्ण खर्च सरकार वहन करती है ।

घ) छात्रावास :

अनुसूचित जनजाति वर्ग के छात्र/छात्राओं के निःशुल्क रहने की व्यवस्था ।

१६ **अभिप्रेत :**

अभिप्रेत एक तत्परता की अवस्था है जो किसी वस्तु, विचार या व्यक्ति के प्रति एक निश्चित तरीके से काम करने की प्रेरित करती है। वस्तु अथवा विचार विषय के पक्ष या विपक्ष में अग्रिम पूर्ण प्रतिक्रिया व्यक्त करना ही अभिप्रेत कहलाती है। कर्तव्य के अनुसार अभिप्रेत किसी संगठनारम्भ वस्तु के द्वारा में विचार, भावनात्मक, प्रवर्धनजनक और सकारण करने की एक पूर्ण स्वीकृति है। अल्पोर्ट ने इसे अपने

शब्दों में स्पष्ट करते हुए कहा है कि "Attitude is a mental state of readiness organised through experience, exerting a directive or dynamic influence upon the individual's response of all objecting and situations with which it is related."

1. G.W. Allport: "Attitude International Co. (Ed.) hand book of Social Psychology Warren for (Clark and press, p.2.120)

विधि :

प्रस्तुत अनुसंधान में सर्वेक्षण विधि का उपयोग किया गया है। ऐतिहासिक समस्याओं के प्रति सर्वेक्षण विधि व्यापक रूप से प्रयुक्त की जाने वाली विधियों में से एक है। यह सर्वेक्षण विधि वर्तमान स्थिति का वर्णन करती है। इसके साथ ही यह उसी व्यक्ति विशेष से सम्बन्धित न होकर समूह से सम्बन्धित होती है। इसमें अधिक से अधिक लोगों को सम्मिलित किया जा सकता है जैसा कि गूड एवं स्टेट ने कहा है कि "The survey is an important type of research it must not be confused with the more clerical routine of gathering and tabulating figures. It involves clearly defined problems and definite objectives."¹

प्रस्तुत अनुसंधान में शैक्षिक उन्नयन हेतु जनजाति वर्ग को दो जाने वाली दृष्टियों पर अध्यापकों एवं अभिभावकों

1- Good and Steat: Methodology of Educational Research (New York, 1954) p. 2.587.

की अभिवृत्ति बात समीची थी । अतः वह विषय ही अनुसूचित माना जाता है ।

इस प्रकार न्यायवादी का ध्यान संवैधानिक सीमाओं की आधार मानते हुए दिया गया । संवैधानिक सीमाओं के ध्यान में भी इस बात का ध्यान रखा गया कि वे संवैधानिक सीमांतवर्षों को ध्यान की गई जिनकी अनंतता अनन्तता आदि है ।

यन्त्र एवं उपकरण :
=====

प्रस्तुत अध्ययन में अभिवृत्ति मापनी का एवं साक्षर-
कार अनुसूचियों का निर्माण एक एवं शोधकर्ता ने दिया है ।
इसके अलावा विचार्य अवलोकन एवं शोधकर्ताओं द्वारा स्वयं
मात्र वस्तुस्थिति का निरीक्षण अवलोकन सुधी के अनुसार दिया
गया । यंत्रों का निर्माण शोध की निम्न प्रक्रिया द्वारा
दिया गया :-

यन्त्र निर्माण के पद :

1. प्रथम पद - प्राथमिक साक्षरकार द्वारा अनुसूचित का निर्माण -

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन को ध्यान में रखते हुए एक कच्ची विषय सूची का निर्माण किया गया। इसके बाद प्राध्यापकों, स्टाफ में कार्य करने वाले विद्वानों, प्राध्यापकों के छात्राचार किया गया। छात्राचार द्वारा जो अध्ययन विन्दु उभरकर सामने आये, उन्हें विषय पर कच्ची सूची में सम्मिलित किया गया। इस प्रकार एक विषय सूची का निर्माण किया गया।

2। द्वितीय पद - अध्ययन क्षेत्रों का निर्धारण -

विषय सूची के आधार पर अध्ययन क्षेत्रों का निर्धारण किया गया। अनिवार्य मापनी में हूत जो अध्ययन विन्दुओं का निर्माण किया गया। ये सभी परिवार हैं, समाज के समस्याओं पर, प्रशासनिक व्यवस्था पर, शिक्षा सामग्री आदि पर बनाई गई।

न्यायकी :

प्रतिद्वी मिलने लड़ें होमें अनुमान के परिणाम उलने हो विद्वत्समीय एवं परिष्कृत होमें। प्रतिद्वी को सभी उपयुक्त

माना जाता है जब वह सम्पूर्ण समीक्षा का प्रतिनिधित्व करता हो । प्रस्तुत अनुसंधान में वर्गीकृत पाठ्यपुस्तक तथा का उपयोग किया है । इस विधि का उपयोग ज्ञा किया जाता है कि न्यादरी में विभिन्न वर्ग हो । प्रस्तुत अनुसंधान में न्यादरी दो भागों में विभक्त है । एक अध्यापक तथा दूसरा अभ्यासकर्ता । दोनों वर्ग में पुनः कई उपवर्ग पाये जाते हैं जथा; वेतन श्रेणी के आधार पर प्रथम वेतन श्रेणी है, द्वितीय वेतन श्रेणी है, प्रथम वेतन श्रेणी के अध्यापक । इसी प्रकार सामान्य शिक्षक, छात्रावास कर्मचारी आदि । समान में भी कई प्रकार के वर्ग है जथा जनशक्ति वर्ग, लघु, पिछड़ा वर्ग आदि । इस प्रकार दोनों न्यादरी के समूहों में कई उपवर्ग है । उतः इस विधि द्वारा इन उपवर्गों को समान प्रतिनिधित्व देने हुई न्यादरी का चयन किया गया है । न्यादरी के चयन का आधार संवत्सरी समीक्षा के आधार पर अध्यापक/अध्यापिका तथा समान में जनशक्ति वर्ग, सामान्य वर्ग एवं पिछड़ा वर्ग को बराबर-बराबर स्थान देना । कुल 210 अध्यापकों एवं 210 अभ्यासकर्ता का चयन नीचे तालिका में दर्शाया गया है :-

नतीजा

अवधायी का यजन :

क्र.सं.	व्यक्ति	अवधायी	अवधायी	अवधायी
1-	मिथवा	30	30	30
2-	मिथवा	30	30	30
3-	मिथवा	30	30	30
4-	मिथवा	30	30	30
5-	मिथवा	30	30	30
6-	मिथवा	30	30	30
7-	मिथवा	30	30	30
योग :-		210	210	210

3। वृत्तीय पद :

अध्ययन दिवसों में सुधार -

अभिज्ञात मापनों के 70 अध्ययन दिवसों को 15 विषय विषयों, 10 शिक्षा विषयों को दिया गया । विषयों के यजन का आधार 10 वर्ष तक केस में कार्य करना रखा गया । इस प्रकार

विशेषों से कहा गया कि जो कम रही हो उन्हें रही है ✓ है
 का निश्चय लगाये तथा जो बहुत हो उन्हें बहुत है का निश्चय
 लगाये । इसके अलावा जिन कमों की भाषा में सुधार की आवश्यकता
 हो उन्हें रही कर दें । विशेषों से प्राप्त सुझावों के
 आधार पर कमों में आवश्यक परिवर्तन किया गया ।

4. चतुर्थ पद :
 =====

प्रमाणों के अंक निर्धारण करना :

अभिज्ञत मापनों की यदि किन्तु प्रमाणों के अनुसार
 बनाया गया है तथा, पूर्ण सहमत, सहमत, अनसहमत, असहमत
 तथा पूर्ण सहमत नहीं । इनके क्रमांक: 5, 4, 3, 2, 1 अंक निर्धारित
 किये गये । इनके अंक निर्धारण में विशेषों की राय भी गई ।

5. पंचम पद :
 =====

अभिज्ञत मापनों का पूर्व परीक्षण -

इस हेतु 50 छात्रों पर अभिज्ञत मापनों का पूर्व परीक्षण
 किया गया । प्राप्त दरतों पर अर्थोपदेन विधि द्वारा विवरण-
 नियता हात की गई । विवरणनियता के आधार पर जिन

अध्ययन किन्दुओं का मूल्य .3 से उपर या .5 पाया गया उन्हें ही औभूत मापनो में रखा गया । इस प्रकार 50 अध्ययन किन्दुओं से अन्त तक 36 अध्ययन किन्दुओं को ही रखा गया । का प्रकार औभूत मापनो को अन्तम स्थय दिया गया ।

68 औभूत मापनो पर € टेस्ट परीक्षण -

औभूत मापनो को € टेस्ट संख्याको लगाकर निम्न रूप द्वारा परीक्षण दिया गया -

उक्त रूप के ही के मूल्य को तारणी मूल्य से प्राप्त किया गया । इस प्रकार औभूत मापनो को विश्वसनीयता को प्रमाणित किया गया € मूल्य "6280 प्राप्त हुआ ।

7. अभिज्ञात मापनों की पैदाश हात करना :

अभिज्ञात मापनों की विषय वस्तु की पैदाश एवं मापन पैदाश को भी हात किया जो इस प्रकार है -

अ. विषय वस्तु की पैदाश हात करना -

मापनों जब तक नहीं नहीं मानने का तरीका है जब तक उसकी विषय वस्तु नहीं नहीं हो । इस हेतु अनुसंधानकर्ता ने अभिज्ञात मापनों के विषय वस्तु की प्रामाणिकता को भी हात किया है । इस सन्दर्भ में अनुसंधानकर्ता ने विषय से सम्बन्धित विशेषज्ञों की राय का सहारा लिया । प्रमापनों में विषय वस्तु विशेषज्ञों की राय, शिक्षाविदों की राय है जो यथन करना प्रमापनों की विषय वस्तु सम्बन्धी प्रामाणिकता है ।

क. अभिज्ञात मापनों की मापन सम्बन्धी पैदाश -

अभिज्ञात मापनों की मापन सम्बन्धी पैदाश हात करने हेतु भी विशेषज्ञों की राय ही गई थी । विशेषज्ञों के आधार पर ही अंकों का निर्धारण किया गया । इसके अलावा अभिज्ञात का पूर्ण परीक्षण किया गया है ।

४६

दरत संकलन एवं विवरण :

दरत संकलन हेतु अनुसंधाता ने अनुसंधान छात्रों का सहयोग लिया है । इस कार्य हेतु जिहा शिक्षा अधिकारी (जा. संस्थाएँ) उदयपुर का पूरा सहयोग प्राप्त हुआ । उदयपुर जिले में उपलब्ध शोधकर्ताओं को जिहा शिक्षा अधिकारी ने एक आदेश जारी कर दरत संकलन हेतु लगाया । आदेश को प्रीत पारीकट-उ में संलग्न है । इस प्रकार सम्पूर्ण जिले में दरत संकलन का कार्य बहुत ही जल्दी एवं प्रामाणिक रूप से पूर्ण हुआ ।

दरत संकलन हेतु अनुसंधानकर्ता ने एक अनुसंधाताओं का दल गठन किया । इस दल को जिहा शिक्षा अधिकारी ने आदेश दिया कि वह कार्य समय पर हो सका ।

दोनों ही कार्यों में संलग्न अनुसंधाता जिहा शिक्षा अनुसंधाता काशीराम उदयपुर (डो.ई.आर.एफ.) के सक्रीय सदस्य थे । इनके राजकीय नियमानुसार दीनक भरता एवं राजा च्यव प्रोजेक्ट की स्वीकृति राजा में से दिया गया ।

दरत विवरण के समय छात्रावासों एवं विद्यालयों की वस्तु-विस्तार को ध्यान देने हेतु एक विविध विवरण का भी निर्माण किया

गया है। इस विधिपूर्वक फिल्म में उल्थापकों, छात्रों एवं अभि-
भावकों के ताक्षारकारों, उनकी राय तथा प्रजासत्ता के ताक्षार-
कार को लिया गया है। रिपोर्ट बनाने समय इस सभी सामग्री
का उपयोग भी किया गया है।

दरत विरहेषण में निम्न ताक्षारको का उपयोग किया
गया -

अ] प्रतिशत :- सामान्य विरहेषण हेतु प्रतिशत का उपयोग
किया गया। कुछ इस प्रकार है -

$$\frac{\text{प्राप्तार्क}}{\text{पूर्णांक}} \times \frac{100}{1} = \text{प्रतिशत}$$

ब] मध्यार्क :- इसका उपयोग नोर्थव नियंत्रण में किया गया।

ग] तह सम्बन्ध :- निम्न द्वारा तह सम्बन्ध ज्ञात किया
गया। कुछ इस प्रकार है -

$$R = \frac{Edxdy - Edx \times dy}{\sqrt{Edx^2 - \left(\frac{Edx}{N}\right)^2 \times Edy^2 - \left(\frac{Edy}{N}\right)^2}}$$

व। χ^2 परीक्षण :- कुल

$$\chi^2 = \sum \left[\frac{(f^o - f^e)^2}{f^e} \right]$$

घ। χ^2 का परीक्षण χ^2 -परीक्षण की सहायता से
का उपयोग किया गया ।

कुल इत प्रकार है -

$$\chi^2 = \frac{(M_1^2 - M_2^2)^2}{\frac{N_1^2}{N_2^2}}$$

र। रेखाचित्रों का निर्माण :- अनुसंधान को रोचक एवं सरल बनाने हेतु रेखाचित्रों का भी उपयोग किया गया है । इनके बनाने की विधि यथा स्थान पर वर्णित है ।

घ। सारणीयन :- अनुसंधान में तारीखों के निर्माण हेतु विवे-
कों, विचारों की राय का उपयोग किया गया ।
तारीखों को सुलभतापूर्वक बनाया गया है इन्हें सामान्यो-
त्तरण करके पदार्जित किया गया है । प्रत्येक अध्ययन बिन्दु
की उत्तम-उत्तम सारणी बनाई गई है ।

दूरत विप्लेखन :

दूरत विप्लेखन को पुराने अध्ययन बिन्दुओं पर बनाई गई तारीफों के आधार पर विप्लेखन किया गया है। तद्विप्लेखन को बाद में अन्य से दर्शाया गया है किन्तु रोजीफियों को तारीफों विप्लेखन के साथ ही दर्शाया गया है।

तारकारी हिविधार् तम्बन्धी पुस्तक निम्नलिखित :

राजस्थान सरकार ने राज्य में शिक्षा तम्बन्धी विकास हेतु निम्न हिविधार् उपलब्ध करा रखी है :-

1. अग्रणीत हिविधार् ।
2. अग्रणीत हिविधार् ।
3. अग्रणीत हिविधार् ।

1. शिक्षा विकास तम्बन्धी पुस्तक निम्नलिखित :

उदयपुर जिले में जनवरी 89 में अध्ययनरत 619366 छात्र/छात्राओं में से जनकारीत वर्ष के 492014 छात्र तथा 113656 छात्राएं अध्ययनरत थीं। इसी प्रकार अनुसूचित जाति के 718158 छात्र

तथा 174460 आगर्ष अध्ययनरत थी । इन अनुसूचित जाति एवं जनजाति के 113636 तथा 874 तथा 605670 आगर्ष विभिन्न जातों में अध्ययनरत पाई गई । इनमें यह स्पष्ट होता है कि अनुसूचित जाति की तुलना में जनजाति के आगर्ष/आगर्षों की अध्ययनरत संख्या कम पाई गई ।

2) राजस्थान में इन 39964 विद्यार्थी हैं । इन में के 36925 आगर्ष के तथा 3039 आगर्षों के पाये गए । इन विद्यार्थियों में पूर्व प्राथमिक स्तर पर 8380, प्राथमिक स्तर पर 2929247, उच्च प्राथमिक स्तर पर 2048855, माध्यमिक स्तर पर 575822 तथा हायर सेकण्डरी स्तर पर 634362 आगर्ष/आगर्ष अध्ययनरत पाई गई ।

3) राजस्थान में अध्यापकों की स्थिति देखने से इतना होता है कि 320 पूर्व प्राथमिक स्तर के, 64963 प्राथमिक स्तर के, 70093 उच्च प्राथमिक स्तर के, 28394 माध्यमिक स्तर के तथा 26944 उच्च माध्यमिक स्तर के अध्यापक/अध्यापिकाओं की संख्या है । इनमें 146084 पुरुष तथा 44530 महिला अध्यापिकाएँ पाई गई ।

अध्यापकों की आश्रुति सम्बन्धी प्रमुख निम्नलिखित :

1. सभी पंचायत समितियों के अध्यापक वर्ग विद्यालयों को नविय से दूरी को शिक्षा विभाग में बाधा मानते हैं ।
विद्यालय नविय से अधिक दूर नहीं होना चाहिये ।

2. अध्यापकों की राय में छात्रों को प्रवेश सम्बन्धी नियमों की जानकारी पूर्व में ही उपलब्ध होनी चाहिये ।

3. अध्यापक वर्ग आवासीय विद्यालयों में शिक्षण सामग्री पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराने के पक्ष में पड़े गए ।

4. अध्यापक पूर्ण आवासीय विद्यालयों में छात्रों की समस्याओं पर एवं सुरक्षा व्यवस्था को बढ़ाने के पक्ष में पड़े गए ।
इनकी राय में छात्रों की समस्याओं पर राजावालों में ध्यान नहीं दिया जाता है ।

5. अध्यापकों की राय की कि जनजाति वर्ग के परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारने हेतु सरकार को उचित प्रयास करने चाहिये । इसी प्रकार छात्रों की पारिवारिक समस्याओं के सम्मान, माता-पिता को शिक्षा के महत्व से अवगत कराना, घर घर पहुँचने की शक्ति सुविधायें उपलब्ध कराने तथा छात्रों को

कैलिक मार्ग दर्शन प्रदान करने के पक्ष में पार्श्व मई ।

6) अध्यापकों की राय पार्श्व मई कि जनजाति वर्ग के छात्रों को सरकारी सुविधाओं का पर्याप्त ज्ञान नहीं होता है । इसके शिक्षण के विकास में रुकावट पैदा होती है ।

7) अध्यापकों की राय थी कि सरकारी क्षेत्र द्वारा दो जाने वाली छात्रवृत्ति की मात्रा बहुत कम है जिससे छात्र के पढ़ाई का पूरा खर्च इतने नहीं हो पाता है ।

8) अध्यापकों की राय थी कि छात्रावासों में भोजन भौतया विरम का मिश्रण है जिसे छात्र पसन्द नहीं करते हैं ।

9) अध्यापकों की राय थी कि अधिकांश समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित छात्रावासों के भवन जोशीरणी अवस्था में हैं । इनमें पानी, बिजली की उचित व्यवस्था का अभाव है ।

10) अधिकांश अध्यापकों की राय थी कि छात्रावासों में बेमकम व्यवस्था उत्तमव्यवस्था है जिससे छात्र उल जाते हैं ।

11) सभी अध्यापक वर्ग इस बात से सहमत पार्श्व मई कि जनजाति क्षेत्र के विद्यालयों में फलन कटार्ड के समय सुविधाएँ नहीं होने से छात्र पर मान जाते हैं ।

12] अध्यापक वर्ग की राय थी कि छात्रों में आरंभ के समय अगर इन विषयों में अवकाश रहे तो वे छात्र विद्यालय छोड़कर नहीं जायेंगे ।

13] अधिकांश अध्यापकों की राय थी कि इन बालकों को स्वरोपकार की शिक्षा दी जानी चाहिए ताकि वे विद्यालय छोड़कर नहीं जायें ।

14] अध्यापकों की राय थी कि इन विद्यार्थियों में सांस्कृतिक कार्यक्रमों में पारम्परिक नृत्य, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्य करने की छूट दी जावे तो वे छात्र विद्यालय के वातावरण में रह जायेंगे ।

15] अधिकांश अध्यापकों की राय थी कि ये छात्र बीमार हो जाते हैं तो विद्यालय में सुविधाएँ नहीं होने से विद्यालय छोड़कर चले जाते हैं ।

16] अधिकांश अध्यापकों की राय थी कि ये छात्र बीमार हो जाते हैं तो विद्यालय में सुविधाएँ नहीं होने से विद्यालय छोड़कर चले जाते हैं ।

16] अधिकांश अध्यापकों की राय थी कि इन विद्यालयों में पर्याप्त शिक्षण सामग्री के अभाव से अध्यापक का शिक्षण प्रभावी नहीं हो पाता है और छात्र परदाई में निरतता अनुभव करते हैं ।

17] सभी अध्यापकों की राय थी कि इन विद्यालयों में शीघ्र एवं अनुभवी अध्यापकों के अभाव में छात्र परदाई में रूचि नहीं ले पाते हैं ।

18] अधिकांश अध्यापकों की राय थी इसके विपक्ष में थी कि अध्यापकों की अतिरिक्त भर्त्ता नहीं मिलने से ये विद्यालय ले जायक रहते हैं ।

19] अधिकांश अध्यापक सरकारी निरीक्षण के स्थान पर स्थानीय निरीक्षण व्यवस्था के पक्ष में पाये गई ।

20] अधिकांश अध्यापकों की राय पाई गई कि अध्यापन तथा प्रशासन में जनजाति के लोगों को पर्याप्त स्थान मिलता रहे तो ये विद्यालय अच्छी प्रकार चल सकेंगे ।

अभिभावकों की अभ्युक्ति सम्बन्धी प्रमुख निष्कर्ष :

- 1- विवाहों की दूरी शिक्षा के विवाह पर विपरीत प्रभाव डालती है ।
- 2- अभिभावकों को एवं छात्रों को विवाह नियमों एवं प्रवेश नियमों को जानकारी उपलब्ध होना चाहिए ।
- 3- आवासीय विवाहों में शैक्षिक साधनों को बढ़ावा जाना चाहिए ।
- 4- आवासीय विवाहों में छात्रों की समस्याओं पर एवं छात्रों की सुरक्षा व्यवस्था पर उचित ध्यान दिया जाना चाहिए ।
- 5- अभिभावकों की राय थी कि जनजाति वर्ग को उचित अवसर एवं सुविधाएँ मिलें तो इनके बन्धुजात स्तर में उच्च परिवर्तन आयेगा और लाभ शिक्षा मुहूर्त करेंगे ।
- 6- अभिभावकों की राय थी कि जनजाति वर्ग के परिवार को आर्थिक स्थिति सुधारने हेतु सरकार को उचित प्रयास करने चाहिए । इसी प्रकार परिवार में पढ़ने की सुविधाएँ भी उपलब्ध करानी चाहिए ।

- 7- अभिभावकों की राय थी कि अधिकांश जनजाति वर्ग को सरकार द्वारा दी जाने वाली विशेष सुविधाओं की जानकारी नहीं होती है ।
- 8- अभिभावक वर्ग छात्रावासों में उपलब्ध भोजन व्यवस्था को सुधारने, भोजन की मात्रा बढ़ाने तथा भोजन की किरम सुधारने के पक्ष में पाया गया ।
- 9- आवासीय विद्यालयों एवं आराम विद्यालयों में वास्तु तकनीकी प्रवृत्तियों एवं मनोरंजन की सुविधाएँ तथा क्षेत्र सामग्री उपलब्ध करवाने के पक्ष में अभिभावक वर्ग पाया गया ।
- 10- अभिभावक वर्ग विद्यालयों में शौच एवं अनुभवो अत्या-
पकों के उपलब्ध कराने तथा इन्हे अतिरिक्त शिक्षण
भरवा देने के पक्ष में पाया गया ।
- 11- विद्यालयों के प्रशासन में जनजाति वर्ग को उचित स्थान,
दिशाने विद्यालयों में स्थानीय निरीक्षण की व्यवस्था के
पक्ष में पाया गया ।

राज्य की के प्रमुख निष्कर्ष :

1-- मिरवा एवं जाहोल संघात समितियों के अध्यापकों की अभिरूति के सम्बन्ध मुख्य - 49 प्राप्त हुआ है । इसका अर्थ यह हुआ कि दोनों संघात समिति के अध्यापकों की राय में जो जनजाति वर्ग को दी जाने वाली विशेष सुविधाओं का शैक्षणिक विकास पर है, में काफी समानता है । दोनों की राय के अनुसार विशेष सुविधाई शैक्षणिक विकास को प्रभावित करती है ।

2-- जाहोल एवं लक्ष्मर संघात समिति के अध्यापकों की अभिरूति के सम्बन्ध में \angle मुख्य - 200 प्राप्त हुआ । इसका अर्थ यह हुआ कि दोनों की राय में समानता बहुत कम पाई गई । किन्तु दोनों का सम्बन्ध धनात्मक पाया गया ।

3-- लक्ष्मर और केरवाड़ा संघात समितियों के अध्यापकों की अभिरूति के सम्बन्ध में \angle मुख्य - 51 प्राप्त हुआ । इसका अर्थ यह हुआ कि दोनों संघात समितियों के अध्यापकों की राय में बहुत समानता है । दोनों की राय के अनुसार विशेष सुविधाई जनजाति वर्ग के शैक्षणिक विकास को प्रभावित करती है ।

44. केरवाड़ा और जोरवाड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों की अभ्युक्ति के सम्बन्ध में सहस्रसम्बन्ध मूल्य - 441 प्राप्त हुआ । इससे अर्थ यह हुआ कि दोनों की राय में बहुत समानता है । दोनों की राय के अनुसार विद्येय सुविधाएँ जनजाति वर्ग के शिक्षा विभाग को प्रभावित करती हैं ।

54. जोरवाड़ा एवं हराड़ा पंचायत समिति के अध्यापकों की अभ्युक्ति के सम्बन्ध में सहस्रसम्बन्ध मूल्य - 504 प्राप्त हुआ इससे अर्थ यह हुआ कि दोनों की राय में बहुत समानता है । दोनों की राय के अनुसार विद्येय सुविधाएँ जनजाति वर्ग के शिक्षा विभाग को प्रभावित करती हैं ।

64. हराड़ा एवं धौलपुर पंचायत समिति के अध्यापकों की अभ्युक्ति के सम्बन्ध में सहस्रसम्बन्ध मूल्य - 769 प्राप्त हुआ इससे अर्थ यह हुआ कि दोनों की विचारधारा में बहुत समानता है दोनों की राय के अनुसार विद्येय सुविधाओं को जनजाति वर्ग के शिक्षा विभाग में सहायक होती है ।

काईस्लवायर परीक्षण का निष्कर्ष :

अनजात वर्ग के प्रौढ़ विकास को विशेष सुविधाएँ वहीं तक प्रभावित करती हैं । इस परीक्षणना को परीक्षण किया गया । परीक्षण हेतु X^2 का उपयोग किया गया । परीक्षण मूल्य 137.69 प्राप्त हुआ जो सारणी मूल्य से बहुत अधिक है इसका अर्थ हुआ कि शुन्य परीक्षणना सार्विक निकलती है । चरणों को देखने के निष्कर्ष निम्नलिखित है कि अनजात वर्ग के प्रौढ़ विकास हेतु सरकार द्वारा दी जाने वाली विशेष सुविधाएँ प्रभावित करती है ।

X^2 परीक्षण के प्रमुख निष्कर्ष :

परीक्षण से संभावित सीमांतियों के अध्यापकों की अभिरूति प्राप्तियों की कार्यक्षता अन्तर बात किया गया । परीक्षण से बात हुआ कि संभावित सीमांत के अध्यापकों में बहुत ही कम अन्तर पाया गया । अर्थात् प्रत्येक की राय में बहुत समानता है ।

हुआव :

=====

प्रसृत अनुष्ठान में कई वर्गों ने अपने अपने हुताव दिये हैं । प्रत्येक वर्ग के हुतावों के प्रमुख निम्नलिखित हैं -
 द्वार उत्तम-उत्तम विधायक दिया गया है -

प्रजासक वर्ग के हुआव :

=====

अ) **आवृत्ति के सम्बन्ध में :**

=====

प्रजासक वर्ग की राय पाई गई कि आवृत्ति का निर्धारण भाई भाई में हो जाना चाहिए तथा सुनाई में हो आवृत्ति का अवलोकन हो जाना चाहिए । आवृत्ति की राश में मंदगति के अनुसार वृद्धि होनी चाहिए । इस हेतु मूल्य वृद्धिको आधार माना जावे ।

क) आवादात के सम्बन्ध में :

प्रजासत्तक वर्ग की राय पार्श्व नहीं कि समाज कल्याण विभाग द्वारा उनी जिन आवादातों को पताया जा रहा है, उन्हें शिक्षा विभाग को सौंप देना चाहिए । इसी प्रकार आवादातों के लिए नियोजित राज्यों में भी मुख्य सुवर्कों को आधार मान कर सुविधा दी जानी चाहिए । ॥ आवादातों के दार्शनिक, के लिए अतिरिक्त पद होना चाहिए । भ्रमन राज्यों, विचारिता राज्यों, मनोरंजन राज्यों, ज्ञान राज्यों, जीवन राज्यों की विशेष सुविधा प्रदान की जायें ।

ख) आत्म विद्यालय के सम्बन्ध में :

प्रजासत्तक वर्ग की राय पार्श्व नहीं कि इन विद्यालयों के प्रजासत्तक को पुनः शिक्षा विभाग को सौंप देना चाहिए । इनमें विचारिता व्यवस्था, पाठ्य कठनामी प्रवृत्तियाँ, संस्कृतिक प्रवृत्तियाँ, खेलकूद, जीवन व्यवस्था तदर्थ के व्ययों पर विशेष व्यय, सुरक्षा व्यवस्था आदि के लिए विशेष मदों का प्रावधान हो ।

अभिभावकों के द्वारा :

अ. छात्रवृत्ति के सम्बन्ध में :

अभिभावकों को राय थी कि इस राशि को बढ़ाया जावे तथा इसके साथ-साथ अभिभावकों के लिए पीछे राशि भी दी जावे । इस राशि के मिलने से अभिभावक अपने बच्चों से मज-दूरी आदि कार्य नहीं करवायेगें तथा पढ़ने भेजेंगे । राशि तमय पर और पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराई जाये ।

ब. छात्रावासों के सम्बन्ध में :

अभिभावक वर्ग छात्रावासों की व्यवस्था, प्रशासन वरी के व्यवहार, भोजन व्यवस्था, पढ़ाई व्यवस्था, शिष्टाचार व्यवस्था, मनोरंजन व्यवस्था से संतुष्ट नहीं पाये गए । इनकी राय के अनुसार प्रशासकों का व्यवहार छात्रों के साथ अच्छा नहीं पाया गया । भोजन पीछा किरम का सर्व पर्याप्त नहीं दिया जाता है । छात्रावासों के कमरों से वे असंतुष्ट पाये गए ।

छात्रावासों में छात्रों को तहों के लिए पर्याप्त कपड़े, कंबल, बिस्तर दी जानी चाहिए । इसी प्रकार विद्यालय

गणयोग की भाभा बढ़ा देनी चाहिए ।

अध्यापकों का चुनाव या नि आभाववालों में निष्ठाता
होना बढ़ाने हेतु सरकार को प्रयत्न लिये जाने चाहिए ।

उ० आम विद्यालय के सम्बन्ध में :

अध्यापकों का चुनाव या नि आम विद्यालयों की संख्या
बढ़ाने चाहिए । प्रत्येक संभावित स्तर पर इस प्रकार के आम वि-
द्यालय सरकार लोले । इन विद्यालयों में पर्याप्त भाभा में जाना
दिया जाये । निष्ठाता होना समय पर मिले ।

अध्यापकों के चुनाव :
=====

उ० आमपूर्ण के सम्बन्ध में :

आमपूर्ण का सही उपयोग करने हेतु इसका आर्थिक समय
पर हो । इसकी भाभा में पूर्ण हो । इसका दुरुपयोग रोक जाये ।

क० आभाववालों के सम्बन्ध में :

अध्यापकों को पार्शन नहीं रखा जाये तथा इसके स्थान
पर अलग नियुक्त हो । इसमें कोर्पिंग व्यवस्था की राशि में

होती है । उम्मावालों में सभी सामन था; रीतियों, टी-पी. की तुलना होती । विचारता व्यवस्था होती ।

३। आत्म विद्यालय के सम्बन्ध में :

अध्यापकों को आत्म विद्यालय व्यवस्था बहुत अच्छी लगती । किन्तु इनमें विचारता, मनोरंजन एवं श्रेष्ठ की सुविधाएँ बढ़ाने हेतु सुझाव प्राप्त हुई अध्यापकों का सुझाव था कि जो अध्यापक यहाँ पढ़ाते हैं वे अपने घरों से बहुत दूर होते हैं अतः प्रतिभाएँ इनमें उत्तीर्यत भराया देना चाहिए ।

४। छात्रों के सुझाव :

अ। छात्रवृत्ति के सम्बन्ध में :

छात्र चाहते थे कि छात्रवृत्ति की राशि बढ़ाई जाये । इसे समय पर दिया जाये । इस राशि को उनके अभिभावक कई बार पर छर्च में छर्च कर देते हैं अतः वे चाहते थे कि इस राशि द्वारा उनकी आवश्यकता सम्बन्धी वस्तुएँ दी जाये ताकि अभिभावक इस राशि का दुरुपयोग न करें ।

७। राजापार के सम्बन्ध में :

राज्य की ओर से राजापार के भवन बहुत उत्तम हैं । ये अपने तापक नहीं हैं अतः इनकी मरम्मत होनी चाहिए । भवनों में शौचालय, पानी की व्यवस्था, बिजली की व्यवस्था, ऊँच की व्यवस्था, मनोरंजन हेतु रीढ़ियाँ तथा टी. वी की व्यवस्था हो । इनका यह भी सुचारु था कि पक्षत कक्षा के समय यहाँ पर उपवास करना चाहिए तथा उस समय पर जाने हेतु सरकार द्वारा किराये की राशि दी जानी चाहिए ।

८। आय विभाग के सम्बन्ध में :

आय आय विभागों से बहुत सम्बन्ध पाये गए हैं । उन्हें भोजन की मात्रा एवं किरम से विशेष नाराजगी थी । इनका सु-चारु था कि भोजन राशि उत्तम है लोगों को चाहिए । विशेषता, मनोरंजन की विशेष सुविधा हो ।

भारत में लोक सभा की शक्ति :

ग्राम अनुसूचित वर्ग का ग्राम लोक नगर की
 भात में इन अनुसूचित वर्गों का अर्थ और शक्ति का अर्थ है
 लोक नगर लोक नगर का लोक नगर लोक नगर
 के लोक नगर नगर है । लोक नगर लोक नगर
 है लोक नगर लोक नगर का लोक नगर लोक नगर ।

कैवरपदा उच्च माध्यमिक विद्यालय, जगदीश चौक, उदयपुर {राज.}

शोध विभाग

द्वारा:- {सीरक - एन.सी.ई.आर.टी.}, नई दिल्ली के विविध
सौजन्य से

शोध विषय:- "To study the special facilities (incentives)
and Educational Development of Tribal Stud-
ents and Attitude of Society towards them."

महोदय जी/महोदया जी,

स्वतंत्रता प्राप्ति के 40 वर्षों बाद भी जनजाति क्षेत्र का शैक्षिक विकास नगण्य प्रायः लगता है। सरकार ने विकास की दर में वृद्धि हेतु कई उद्दीपन { incentives } छात्रों को विभिन्न स्तरों के स्तर में प्रदान किये हैं यथा; छात्रवृत्ति प्रदान करना, निःशुल्क छात्रावास सुविधा, निःशुल्क पाठ्य पुस्तकों एवं विद्यालय गणवेश का वितरण, निःशुल्क भोजन आश्रम विद्यालय आदि की व्यवस्था, इन सब उद्दीपनों का उनके शैक्षिक विकास पर क्या प्रभाव पड़ रहा है? क्या ये प्रभावी है या प्रभावहीन? इसी बात को मद्देनजर रखते हुए समाज के व्यक्तियों का जनजाति के शैक्षिक विकास के प्रति क्या दृष्टिकोण है? इसे ज्ञात करना इस शोध कार्य का प्रमुख उद्देश्य है।

आप जनजाति क्षेत्र के शैक्षिक विकास के साथ पिछले कई वर्षों से जुड़े हुए हैं। इस सम्बन्ध में आपकी राय इस शोध कार्य के उद्देश्यों की प्राप्ति में काफी सहायक सिद्ध होगी। ऐसी मेरी मान्यता है। अतः आपसे निवेदन है कि आप इस प्रश्न में पूछे गए प्रश्नों पर अपना दृष्टिकोण बतायें। आप द्वारा दी गई राय को पूर्णतः गोपनीय रखा जावेगा तथा केवल शोध कार्य में ही इसका उपयोग किया जावेगा।

इस शोध अध्ययन में मैंने सरकार द्वारा दी जाने वाली सुविधाओं को अलग-अलग भागों में बाँटकर आपसे प्रश्न पूछे हैं यथा; पारिवारिक, एवं व्यक्तिगत, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक एवं राजनैतिक, विद्यालय से सम्बंधित, आर्थिक सुविधाएँ, आश्रम विद्यालय।

प्रत्येक प्रश्न के सामने पाँच विकल्प दिये हुए हैं यथा; 1-सदैव, 2- अधिकतर, 3- सामान्यतया, 4- बहुत कम, 5- कभी नहीं। आप जिस विकल्प को अपने सबसे अधिक निकट पाते हों, उस पर सही {✓} का निशान लगावें। कृपया ध्यान रखें कोई प्रश्न छूटने न पावे। अगर आप इन पर सुझाव देना चाहते हों, यथास्थान पर दें तथा आवश्यकता



अभिवृत्ति मापनी

प्रश्न	1	2	3	4	5
1- गाँव से विधालयों की दूरी ने जनजाति के छात्रों में पढ़ने की प्रीति अस्वीच पैदा करदी है।					
2- अगर विधालय गाँवों से अधिकतम निकट हो तो सम्भव है जनजाति के छात्र पढ़ने आवें ।					
3- माध्यमिक कक्षाओं में प्रवेश सम्बन्धि न्यूनतम शैक्षिक योग्यता का प्रतिफल इतना अधिक होता है कि इन्हें विधालयों में प्रवेश नहीं मिल पाता है ।					
4- विधालयों में प्रवेश सम्बन्धी नियम इतने कठोर है कि ये छात्र प्रवेश से वंचित हो जाते है ।					
5- कई बार इनको यह जानकारी भी नहीं होती है कि किस विधालय में प्रवेश लिया जा सकता है । इससे ये प्रवेश से वंचित रह जाते है ।					
6- क्या यह अच्छा हो कि इन्हें समय-समय पर विधालय में प्रवेश सम्बन्धी जानकारी मिलती रहे, ताकि ये प्रवेश का लाभ उठा सके ।					
7- आवासीय विधालयों का लाभ जनजाति के छात्रों को तभी मिल सकेगा, जब इनमें आवश्यक सामान पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होगा ।					
8- अध्यापकों तथा प्रधानाध्यापकों का व्यवहार उपेक्षित होने से छात्र विधालयों में नहीं आते है।					
9- विधालयों में बालकों की समस्याओं की ओर ध्यान नहीं दिया जाता जिससे बालकों में असंतोष रहता है ।					
10- विधालयों व छात्रावासों में छात्र/छात्राओं की सुरक्षा के अभाव के कारण छात्र में अध्ययन के प्रीति स्वीच नहीं रही ।					
11- छात्रों को दिया जाने वाला भोजन व अन्य खाद्य पदार्थ घोटया किस्म का होने व पर्याप्त मात्रा में नहीं दिये जाने के कारण छात्रों में असंतोष रहता है ।					
12- जनजाति के छात्रों में परम्परागत विचारों के कारण पढ़ने में रुचि कम होती है ।					
13- उचित अवसर एवं सुविधाएँ मिलने तो जनजाति के छात्र अन्य छात्रों से आगे निकल सकते है ।					

- 14- छात्रावासों में कुटीर उद्योगों, परम्परागत उद्योगों तथा अन्य प्रकार का प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए ।

पारिवारिक =====

- 15- जनजाति के छात्रों के परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारने की सरकार जब तक व्यवस्था नहीं करती तब तक ये छात्र विधालय में नहीं आयेगें ।
- 16- जनजाति के छात्रों की पारिवारिक समस्याओं का निदान करे तथा ये विधालय में पढ़ाई कर सकेंगे ।
- 17- जनजाति छात्रों के माता-पिताओं को शिक्षा के महत्व से जब तक अवगत नहीं कराया जावेगा तब तक वे बच्चों को पढ़ने नहीं भेजेंगे ।
- 18- इनकी पारिवारिक स्थिति को उन्नत करने के लिए अधिक से अधिक साधन जुटाया जाना चाहिए ।
- 19- जनजाति के बालकों को घर पर पढ़ने की सुविधाएँ उपलब्ध कराई जानी चाहिए ।
- 20- घर पर पढ़ने की सुविधाएँ न होने से इनका शैक्षिक विकास नहीं हो पा रहा है ।
- 21- जनजाति छात्रों को शैक्षिक मार्गदर्शन न मिलने से उनका शैक्षिक विकास नहीं हो पा रहा है ।
- 22- सरकारी सुविधाएँ
सुविधाओं की जानकारी=====
- 22- जनजाति के छात्रों के शैक्षिक विकास नहीं होने का एक मात्र कारण सरकारी सुविधाओं का ज्ञान न होना है । अन्यथा वे इनका उपयोग कर शैक्षिक उन्नति कर लेते ।
- 23- सरकार द्वारा दी जाने वाली छात्रवृत्ति इतनी कम है कि पढ़ाई का खर्च पूरा नहीं होता है ।
- 24- छात्रावासों में भोजन इतना घटिया है कि ये इनमें रहना पसन्द नहीं करते ।
- 25- छात्रावासों में जब तक, पकावा, पानी तथा पक्के कमरों की व्यवस्था नहीं होगी, इनका शैक्षिक विकास सम्भव नहीं है ।
- 26- एकद की व्यवस्था इतनी आवश्यक है कि ये छात्रावासों से उठ जाते हैं ।

- फल कटाई के समय ये छात्र विद्यालयों से भाग जाते हैं क्योंकि इनमें छुट्टियाँ नहीं होती हैं।
- खेलों में काम करते समय अगर इन विद्यालयों में अवकाश रहे तो ये छात्र विद्यालय छोड़ कर नहीं जावेंगे।
- इन बालकों को स्वरोजगार की शिक्षा दी जावे तो ये विद्यालय छोड़कर नहीं जावेंगे।
- विद्यालय के सांस्कृतिक कार्यक्रमों में इनका पारम्परिक नृत्य, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक कार्य करने की छूट दी जावे तो ये विद्यालय के वातावरण में रम जावेंगे।
- ये छात्र छात्रावासों में अक्सर बीमार हो जाते हैं और पढ़ाई छोड़कर माता-पिता के पास चले जाते हैं।

शिक्षा सामग्री

- इन विद्यालयों में पर्याप्त शिक्षण सामग्री के अभाव में शिक्षक का शिक्षण भी प्रभावी नहीं होता है तथा छात्र निरस हो जाते हैं।
- योग्य और अनुभवी अध्यापकों के अभाव में ये छात्र पढ़ाई में रुचि नहीं ले पाते हैं।

प्रशासनिक व्यवस्थाएँ

- अध्यापकों को अतिरिक्त भत्ता नहीं मिलने से वे विद्यालयों से अक्सर गायब रहते हैं।
- सरकारी निरीक्षण के स्थान पर स्थानीय निरीक्षण की व्यवस्था हो तो ये विद्यालय समय पर खुलेंगे और अध्यापकों की उपस्थिति भी बराबर रहेगी।

अध्यापन तथा प्रशासन में जनजाति के लोगों को पर्याप्त स्थान मिलता रहे तो ये विद्यालय अच्छी प्रकार चल सकेंगे।

शोध विभाग

शोध विषय:- "To study the special facilities (incentives) and Educational Development of Tribal Students and Attitude of Society towards them."

"जनजाति के छात्रों को दी जाने वाली सुविधाओं का शिक्षा के विकास पर प्रभाव तथा समाज का इनके प्रति दृष्टिकोण"

महोदय जी/महोदया जी, -----

मैं उक्त विषय पर शोध कार्य कर रहा हूँ। इस शोध कार्य को {सं. सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली} राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा वित्तीय सहायता प्राप्त है। मैं इस शोध कार्य द्वारा जनजाति के छात्रों का शैक्षिक विकास तथा उनको दी जाने वाली सुविधाओं के बारे में जानकारी चाहता हूँ साथ में यह भी जानना चाहता हूँ कि आपकी इस जाति के शैक्षिक विकास के सम्बन्ध में सरकार से तथा समाज से क्या अपेक्षाएँ हैं।

इस हेतु मैंने आपकी सम्भावित अपेक्षाओं को इस प्रश्नावली में अलग-अलग कथनों के रूप में लिया है आपसे निवेदन है कि जिस कथन से आप सहमत हो उस कथन के सामने हाँ पर सही {✓} का निशान लगावें तथा जिस कथन से आप सहमत नहीं हो उसके सामने नहीं पर सही {✓} का निशान लगावें। आप कृपया निःसंकोच उत्तर देवें आपके उत्तरों को गोपनीय रखा जावेगा तथा इनका उपयोग केवल शोध कार्यों में ही किया जावेगा।

सधन्यवाद !

भविनष्ठ
3.12.2019
{डॉ. अश्विनी कुमार गौड़}
प्रोजेक्ट इन्चार्ज

कथन	हाँ	नहीं
जनजाति क्षेत्र के विद्यालय अधिकतम एक कि.मी की दूरी पर होने चाहिए।		
विद्यालय तक पहुँचने तथा घर जाने हेतु छोटे-छोटे बच्चों के लिए वाहन की व्यवस्था हो।		
विद्यालय आकर्षक एवं सुन्दर हो।		
विद्यालय का भवन पक्का हो।		
विद्यालय में खेल, मनोरंजन आदि की पूरी सुविधा हो।		
विद्यालय के कक्षाकक्ष शिक्षण सामग्री से युक्त हो।		

- 8- विद्यालय की प्रत्येक गतिविधियों में छात्रों को स्वतंत्र रूप से भाग लेने की छुट हो ।
- 9- विद्यालय समय स्थानीय आवश्यकता तथा माँग के अनुसार तय किया जावे
- 10- विद्यालय में अवकाश भी जनजाति परम्पराओं एवं त्यौहारों को ध्यान में रखकर किये जावें ।
- 11- विद्यालयों में जनजाति परम्पराओं, कला, संस्कृति आदि का एक कक्ष बनाया जावे ताकि छात्रों को लगे कि यह विद्यालय उनका है ।
- 12- विद्यालय में आवासीय व्यवस्था तो हो, किन्तु इसमें रहने की छुट हो ।
- 13- आवासीय व्यवस्था इस प्रकार हो कि भोजन, वस्त्र, स्टेशनरी आदि के क्रय तथा वितरण में स्थानीय तथा जनजाति के लोगों का प्रतिनिधित्व होना चाहिए ।
- 14- सम्पूर्ण सामान को क्रय हेतु स्थानीय समूदाय की कोटी द्वारा होना चाहिए इस कमेटी में छात्रों का पूर्ण प्रतिनिधित्व होना चाहिए ।
- 15- विशिष्ट अध्यापकों को इन विद्यालयों में लगाया जाना चाहिए तथा इन अध्यापकों को अतिरिक्त भत्ता मिलना चाहिए ।
- 16- स्थानीय कमेटी तथा अन्य अधिकारियों द्वारा समय-समय पर निरीक्षण होते रहना चाहिए ।
- 17- अध्यापक तथा प्र.अ. द्वारा बेइमानी करने पर कठोर दण्ड मिलना चाहिए ।
- 18- अध्यापक को वहीं रहने हेतु सभी सुविधाएँ उपलब्ध कराई जानी चाहिए ।
- 19- सरकार द्वारा दी जाने वाली सभी प्रकार की सुविधाएँ बहुत कम हैं, इनमें वर्तमान आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए वृद्धि करना चाहिए ।
- 20- माता-पिता को रोजगार उपलब्ध कराया जाना चाहिए ताकि छात्र घर की तरफ से निश्चिन्त रहे ।
- 21- स्वास्थ्य एवं मनोरंजन की सुविधा का लाभ इन छात्रों को आवश्यकतानुसार मिलना चाहिए ।
- 22- प्रधानाध्यापक, अध्यापक, छात्रावास अधिकारी, का व्यवहार इन छात्रों के प्रति स्नेहमय होना चाहिए ।
- 23- सरकार को अपने बजट में वृद्धि करके विद्यालयों की संख्या में, अध्यापकों की संख्या में, छात्रावास सुविधाओं में वृद्धि देना बहुत आवश्यक है ।

- 24- इन विधालयों में समय-समय पर फिल्म, विदियों फिल्म, नाटक, रामलीला नाटक, रामलीला आदि कार्यक्रमों का आयोजन करते रहना चाहिए ।
- 25- छात्रों को शैक्षिक मार्ग दर्शन की अतिरिक्त व्यवस्था होनी चाहिए ।
- 26- शिक्षा के साथ-साथ रोजगार सम्बन्धी प्रशिक्षण भी देना चाहिए ।

नाम : _____

गाँव/शहर : _____

तहसील : _____

हस्ताक्षर

हस्ताक्षर

अभिभावक, अध्यापक एवं प्रशासनिक अधिकारी अनुसूची

राजकीय नैतिकता तथा सामाजिक विचार
उदयपुर (रतन.)

सूच - विचार

"जनजाति के लोगों को दो जाने वाली सुविधाओं का विकास
के विकास पर प्रभाव तथा समाज का इनके प्रति दृष्टिकोण"

अभिभावक अनुसूची

- 1- आपको कौशल व सामाजिक विकास हेतु सरकार द्वारा
क्या-क्या सुविधा दी जा रही है ।
- 2- क्या इन सुविधाओं से आप को लाभ हो रहा है ?
- 3- सरकार के अभाव समसिद्धी संस्था अभिभावक आपाके
सहायता प्रदान करते हैं ।
- 4- सरकार द्वारा दो जाने वाली सम्पत्ति क्या वर्गीकृत है ?
- 5- अगर वर्गीकृत नहीं है तो आपको क्या राय है ?
- 6- क्या आप के विकास में सामाजिक सुविधा है ?

- 7- आपको आवागत का आवागमन ज्ञात करा ।
- 8- आवागत में रहने की सभी सुविधा उपलब्ध है ।
- 9- कोई नहीं तो क्या-क्या होकर है ।
- 10- क्या आपके आवागत में मेह को व्यवस्था है ।
- 11- आवागत है तो उसके आवागत की क्या व्यवस्था है ।
- 12- मेह आवागत कर आवागत क्या सुविधा की जाति है
 जो- भोजन/नारंगी/आम/पानी/दरमदर नमो/आवा
 गो/आवागत/आवागत अन्य ।
- 13- क्या आपको आवागत में स्टीमरो की सुविधा की
 जाति है ।
- 14- आवागत की जाति है
- 15- क्या आपके आवागत में स्टीमरो, विमानरक व आवा-
 गो/आवागत आवागत की व्यवस्था है ।

परीक्षा - 4

=====

आम जनता के अनुभव

=====

राज्यीय स्तर पर आम जनता के अनुभव, अक्सर आम।

प्रश्न - विचार

=====

"जनता के आमों को दो जाने वाली अनुभवों का विचार
के विचार पर प्रभाव तथा समाज का उनके प्रति दृष्टिकोण"

आम जनता के अनुभव

=====

- 1- आपको आमों व सामाजिक विकास के लिए सरकार द्वारा क्या-क्या अनुभवों की जानकारी रही है।
- 2- क्या इन अनुभवों से आप को लाभ हो रहा है ?
- 3- सरकार के अभाव स्वयंसेवा संस्था/अभिभावक आपको क्या-क्या प्रभाव करते हैं।
- 4- सरकार द्वारा दी जाने वाली आवश्यकता क्या पर्याप्त है ?
- 5- अगर पर्याप्त नहीं हैं तो आपको क्या राय है ?
- 6- क्या आप के विकास में सामाजिक अनुभव है।

- 7- आपको छात्रावास का वातावरण कैसा लगा ।
- 8- छात्रावास में रहने की सभी सुविधा उपलब्ध है ।
- 9- यदि नहीं तो क्या-क्या कमियाँ हैं ।
- 10- क्या आपके छात्रावास में भेद की व्यवस्था है ।
- 11- अगर है तो उसके संवादन की क्या व्यवस्था है ।
- 12- भेद तीव्रता द्वारा आपको क्या सुविधा दी जाती है जैसे भोजन/नारतार/विद्युत/पानी/घर/नज्द/आत कटिंग/साहज/तेल/ अन्य ।
- 13- क्या आपको छात्रावास में स्वेतरी की सुविधा दी जाती है ।
- 14- कितनी दी जाती है ।
- 15- क्या आपके छात्रावास में सौंदर्य, विविधता व अंतरातीम अध्यापन की व्यवस्था है ।

=====

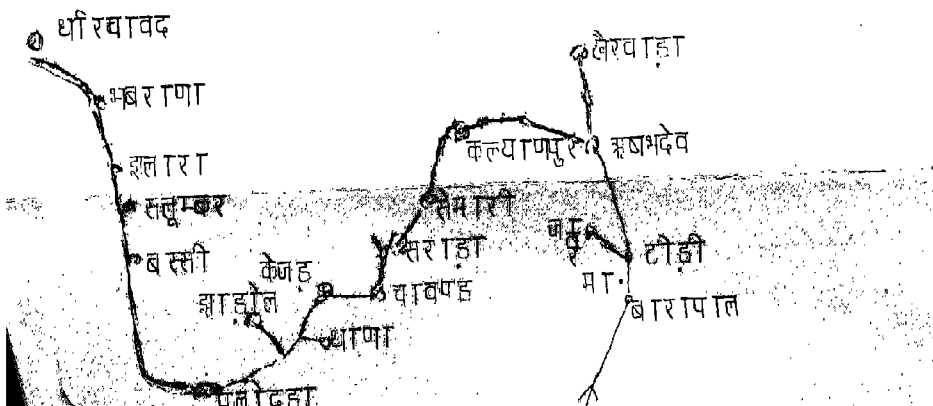
[illegible][illegible]

19-	124182	106172	124182-6	91160-6	93182	95163-3	113178-3
20-	136190-6	111174	126185-3	106170-6	93183-3	111174	119179-3
21-	124182	111174	134190	101177-3	95163-3	113179-3	128185-3
22-	125184	96154	112174-6	99166	91163-6	97164-6	110173-3
23-	118178-6	93152	92162	105170-6	84156	104169-3	111174
24-	112174-6	89159-3	117178	81154	82155-6	89159-3	108170-6
25-	122181-3	101157-3	121180-6	96154	94162-6	106170-6	116177-3
26-	118170-6	99166	120180	89159-3	89159-3	106170-6	102168
27-	108172	95163-3	125183-3	95163-3	93163-3	95164	125183-3
28-	124182	87158	125183-3	105170	94152-6	103168-6	126185-3
29-	136190-6	123182	124182-6	101177-3	95163-3	111174	136190-6
30-	124182	127154-6	111174	103160-6	95163-3	102172	125183-3
31-	124182	95163-3	121180-6	124189-3	93162	83155	123182
32-	125184	122168	98164	95163-3	92161-3	105170	116177-3
33-	110173-3	71147-3	89159-3	73148-6	84156	74149	85156-6
34-	100166-6	73130-6	102168-6	51134	82150-3	80153-3	77151-3
35-	122181-3	100166-6	102168-6	76150-6	85156-6	86157-3	114175
36-	112174-6	92161-3	102168	79152-6	94162-6	84156	82154-6

[illegible]

तहसील	सी. हायर सैकण्ड्री	सैकण्ड्री
1- सलूमबर सराडा छैरवाडा झाडोल	1- सलूमबर 2- भबराना 3- गीगला 4- कल्याणपुर 5- कृष्णभदेव 6- छैरवाडा 7- बावलवाडा 8- सराडा 9- चावणह 10- झाडोल 11- फ्लासिया	1-बस्ती 2-शलारा 3-ईटालीखेडा 4-रठौडा 5-टोकर 6-सेमारी 7-केजह 8-धाणा 9-झाडोल 10-परसाद 11-जवास 12-बंजारवाडा 13-पाटिया 14-कोजीवाडा 15-सोरीया 16-ओगणा 17-टोमडी 18-कोल्यारी 19-ओडा
2- धीरवावद	1- सी. हाँ. सै. धीरवावद	1-मूगाणा 2-कैसीरयाबाद 3-लक्ष्मीहया 4-पारसोला
3- गिरवा	1- टोडी 2- जावर माइन्स 3- कुराबह 4- बारापाल	1-बारापाल 2-नाई 3-सीसारमा
4- कोटडा	1- कोटडा	1- वास

Route Chart:



कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी छात्र संस्था, उदयपुर राज. ४

दिनांक: 6-12-1988

श्रीमान/श्रीमती _____

विषय:- एन.सी.ई.आर.टी नई दिल्ली के प्रोजेक्ट के दत्त संकलन हेतु ।

प्रसंग :- एन.सी.ई.आर.टी के पत्र क्रमांक एप-2-5/88/ई.आर.आई.सी/3216 दिनांक 4 अगस्त, 1988 के क्रम में ।

उपरोक्त विषयान्तर्गत लेख हैं कि एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा राजकीय कैम्पसदा उच्च माध्यमिक विद्यालय, उदयपुर को शोध प्रयोजना " To study the special facilities (incentives) and Educational Development of Tribal Students and Attitude of Society towards them." स्वीकृत हुई है। ऐसी प्रयोजना अपने जिले में किसी विद्यालय को पहली बार स्वीकृत हुई है। अतः इसे समय पर पूर्ण करना आवश्यक है।

इस कार्य के दत्त संकलन हेतु आपको आपके नाम के आगे अंकित पंचायत समिति में देय दिनांकों के मध्य निदेशक एवं उपनिदेशक के निर्देशानुसार कार्य करना है। इस कार्य हेतु आप आपके सह संयोजक से व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित कर कार्य को अच्छी तरह समझते ताकि दत्त संकलन में आपको देय कार्य करने में कीठनाई न हो। प्रत्येक दल संयोजक अपना मार्ग दर्श प्रयोजना प्रभारी, निदेशक तथा उप निदेशक से सम्पर्क कर प्राप्त करें।

सभी शोधकर्ता दत्त संकलन हेतु निर्धारित दिनांक को विद्यालयों में समय पर पहुँच जावे।

इस कार्य हेतु एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा निर्धारित बजट में से यात्रा व्यय एवं दैनिक भत्ता रा. कैम्पसदा उ.मा.वि. द्वारा चुकाया जावेगा। कार्य-क्रम तथा दल इस प्रकार है :-

कार्यक्रम एवं कार्यकारी दल

कन्ट्रोलर	: नसोल्लो न सिहोको जिला शिक्षा अधिकारी, उदयपुर
निदेशक	: श्री हरिश्चन्द्र जोशी पु.अ. रा. कैम्पसदा सीनियर उ.मा.वि., उदयपुर
उपनिदेशक	: श्री सज्जनसिंह मेहता स.पु.अ. रा. कैम्पसदा सीनियर उ.मा.वि., उदयपुर
प्रयोजना प्रभारी	: श्री अश्विनी कुमार गौड़ पो.आई. रा. कैम्पसदा सीनियर उ.मा.वि., उदयपुर

क्षेत्रवार दल पंचायत समिति

1- गिरवा सर्व झाड़ोल

प्रभारी

दि. 12 से 14 दिसम्बर, 88

- 1- श्रीमती शारदा पाण्डोर उप जिला शिक्षा अधिकारी {छात्राई} उदयपुर
- 2- श्रीमती जेनब बानु अध्यापक रा.कैवरपदा सीनियर उ.मा.वि., उदयपुर
- 3- श्री नारायणलाल पालीवाल का.स. रा.कैवरपदा सीनियर उ.मा.वि., उदयपुर
- 4- श्री रविन्द्र सिंह बक्षी व.अ. रा. कैवरपदा सीनियर उ.मा.वि., उदयपुर
- 5- श्रीमती संतोष रानी माधुर व्याख्याता रा.कैवरपदा सीनियर उ.मा.वि., उदयपुर

2- सलूमबर सर्व धीरयावद प्रभारी

15 से 17 दिसम्बर, 88

- 1- श्री रमेशचन्द्र सुखवाल व्याख्याता रा.कैवरपदा सीनियर उ.मा.वि. उदयपुर
- 2- श्री शंकरलाल नरीसिंहपुरा प्र.अ. रा. मा.वि. मुगाना
- 3- चैनीसिंह छिमेरा व.अ. रा. कैवरपदा सीनियर उ.मा.वि., उदयपुर
- 4- श्री शान्तिनाथ चित्तौड़ा व.अ. रा. कैवरपदा सीनियर उ.मा.वि., उदयपुर

3- खेसवाड़ा सर्व सराड़ा प्रभारी

12 से 14 दिसम्बर, 88

- 1- श्री जगदीशचन्द्र व्यास प्र.अ. रा.मा. वि. सव्रीनाखेड़ा
- 2- श्री पन्नालाल नागदा मा.वि. झाड़ोल {सराड़ा}
- 3- श्री महावीर प्रसाद रा.गु.गो.सीनियर उ.मा.वि., उदयपुर
- 4- श्री राजेन्द्र कुमार गौड़, मा.वि. खेमली

4- कोटड़ा

प्रभारी

15 से 17 दिसम्बर, 88

- 1- श्री भंवरलाल नागदा, पतह सीनियर उ.मा.वि., उदयपुर
- 2- श्री भोलेश्वरनाथ सनाद व्याख्याता रा. कैवरपदा सीनियर उ.मा.वि. उदयपुर

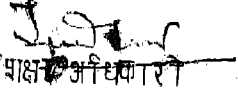
दत्त संगणक

- 1- श्री भावतीलाल चौबोसा
- 2- श्री राजेन्द्र सिंह चौहान जि.शि.अ. कार्यालय, उदयपुर

विभिन्न पंचायत समितियों में विधायक कार्य का विवरण रिक्त स्थान कार्यक्रम 12 से 17 दिसम्बर, 1988 तक :-

प्रभारी 1- श्री अश्वनी कुमार सिंह, रा.कैवरपदा सी. उ.मा.वि. उदयपुर


- 3- श्री तेजीसंह मेहता, रा.कैवरपदा सी. उ.मा.वि., उदयपुर
4- श्री शिखराज तिवारी, एस.आई.ई.आर.टी.


जिला शिक्षा अधिकारी
छात्र संस्थाएं
शिक्षा विभाग, उदयपुर राज.

क्रमांक: जि.श.अ/छात्र संस्था/एन.सी.आर.टी./जनजाति प्रोजेक्ट/88-89/
दिनांक 6-12-1988

प्रतिनिधिप:-

- 1- डा. एम.के. रैना, मेम्बर सैक्रेटरी, एरोक एन.सी.आर.टी. श्री अरविन्दो मार्ग नई दिल्ली को सूचनार्थ पेषित है।
- 2- निदेशक एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर को भेजकर निवेदन है कि सम्बन्धित शोधकर्ता को समय पर कार्यमुक्त करने का श्रम करावें।
- 3- श्रीमती जिला शिक्षा अधिकारी छात्रा संस्था, उदयपुर को भेजकर निवेदन है कि सम्बन्धित शोधकर्ता को दत्त संकलन हेतु कार्यमुक्त करावें।
- 4- श्री विकास अधिकारी/प.अ./उ.जि.श.अ. को भेजकर लेख है कि अनुसंधान दल को पूर्ण सहयोग प्रदान करावें। तथा इनके ठहरने की व्यवस्था करावें।
- 5- श्री सम्बन्धित प.अ./प.अध्यापिका को भेजकर लेख है कि शोधकर्ता को दत्त संकलन हेतु कार्यमुक्त करें।
- 6- सम्बन्धित श्री ----- शोधकर्ता को भेजकर लेख है कि एक दिन पूर्व प्रायोजना प्रभारी से मिलते तथा समय पर कार्य-मुक्त होकर पहुँचें।
- 7- कार्यालय पत्रावली।


जिला शिक्षा अधिकारी
छात्र संस्थाएं
शिक्षा विभाग, उदयपुर राज.



कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी छात्र संस्थान, उदयपुर राज.

दिनांक: 6-12-1988

श्रीमान/श्रीमती _____

विषय:- सन.सी.ई.आर.टी नई दिल्ली के प्रोजेक्ट के दत्त संकलन हेतु ।

प्रसंग :- सन.सी.ई.आर.टी के पत्र क्रमांक एप-2-5/88/ई.आर.आई.सी/3216 दिनांक 4 अगस्त, 1988 के क्रम में ।

उपरोक्त विषयान्तर्गत लेख हैं कि सन.सी.ई.आर.टी. द्वारा राजकीय कैम्पदा उच्च माध्यमिक विद्यालय, उदयपुर को शोध प्रायोजना " To study the special facilities (incentives) and Educational Development of Tribal Students and Attitude of Society towards them." स्वीकृत हुई है। ऐसी प्रायोजना अपने जिले में किसी विद्यालय को पहली बार स्वीकृत हुई है। अतः इसे समय पर पूर्ण करना आवश्यक है।

इस कार्य के दत्त संकलन हेतु आपको आपके नाम के आगे अंकित पंचायत समिति में देय दिनांकों के मध्य निदेशक एवं उपनिदेशक के निर्देशानुसार कार्य करना है। इस कार्य हेतु आप आपके सह संयोजक से व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित कर कार्य को अच्छी तरह समझते तार्किक दत्त संकलन में आपको देय कार्य करने में कठिनाई न हो। प्रत्येक दल संयोजक अपना मार्ग दर्शक प्रायोजना प्रभारी, निदेशक तथा उप निदेशक से सम्पर्क कर प्राप्त करें।

सभी शोधकर्ता दत्त संकलन हेतु निर्धारित दिनांक को विद्यालयों में समय पर पहुँच जावे।

इस कार्य हेतु सन.सी.ई.आर.टी. द्वारा निर्धारित बजट में से यात्रा व्यय एवं दैनिक भत्ता रा. कैम्पदा उ.मा.वि. द्वारा चुकाया जावेगा। कार्य-क्रम तथा दल इस प्रकार हैं :-

कार्यक्रम एवं कार्यकारी दल

कन्ट्रोलर	: नसीरुद्दीन सिद्दीकी जिला शिक्षा अधिकारी, उदयपुर
निदेशक	: श्री हरिश्चन्द्र जोशी प्र.अ. रा. कैम्पदा सीनियर उ.मा.वि., उदयपुर
उपनिदेशक	: श्री सज्जनसिंह मेहता स.प्र.अ. रा. कैम्पदा सीनियर उ.मा.वि., उदयपुर
प्रायोजना प्रभारी	: श्री अश्विनी कुमार मोह. प्रो.आई. रा. कैम्पदा सीनियर उ.मा.वि., उदयपुर

क्षेत्रवार दल पंचायत समिति

1- गिरवा एवं झाड़ोल

प्रभारी

- 1- श्रीमती शारदा पाण्डेय उप जिला शिक्षा अधिकारी [छात्राई] उदयपुर
- 2- श्रीमती जेनब बानु अध्यापक रा.कैवरपदा सीनियर उ.मा.वि., उदयपुर
- 3- श्री नारायणलाल पालीवाल का.स. रा.कैवरपदा सीनियर उ.मा.वि., उदयपुर
- 4- श्री रविन्द्र सिंह बक्षी व.अ. रा. कैवरपदा सीनियर उ.मा.वि., उदयपुर
- 5- श्रीमती संतोष रानी माधुर व्याख्याता रा.कैवरपदा सीनियर उ.मा.वि., उदयपुर

दि. 12 से 14 दिसम्बर, 88

2- सुलुम्बर एवं धरियावद

प्रभारी

- 1- श्री रमेशचन्द्र सुखवाल व्याख्याता रा.कैवरपदा सीनियर उ.मा.वि. उदयपुर
- 2- श्री शंकरलाल नरसिंहपुरा प्र.अ. रा. मा.वि. मुंगाना
- 3- चैतनसिंह खिमसरा व.अ. रा. कैवरपदा सीनियर उ.मा.वि., उदयपुर
- 4- श्री शान्तिनाथ चित्तौड़ा व.अ. रा. कैवरपदा सीनियर उ.मा.वि., उदयपुर

15 से 17 दिसम्बर, 88

3- खेरवाड़ा एवं सराहा

प्रभारी

- 1- श्री जगदीशचन्द्र व्यास प्र.अ. रा.मा. वि. सवोनाखेड़ा
- 2- श्री पन्नालाल नागदा मा.वि. झाड़ोल [सराहा]
- 3- श्री महावीर प्रसाद रा.गु.गो.सीनियर उ.मा.वि., उदयपुर
- 4- श्री राजेन्द्र कुमार गौड़, मा.वि. खेमली

12 से 14 दिसम्बर, 88

4- कोटड़ा

प्रभारी

- 1- श्री भेंवरलाल नागदा, पत्तह सीनियर उ.मा.वि., उदयपुर
- 2- श्री भोलेश्वरनाथ सनाद व्याख्याता रा. कैवरपदा सीनियर उ.मा.वि. उदयपुर

15 से 17 दिसम्बर, 88

दल संपर्क


- 1- श्री भावतीलाल चौबोसा
- 2- श्री राजेन्द्र सिंह चौहान जि.श.अ. कार्यालय, उदयपुर

विभिन्न पंचायत समितियों में विधालय कार्य का विीह्यो रिकार्डिंग कार्यक्रम 12 से 17 दिसम्बर, 1988 तक :-

प्रभारी 1- श्री अश्विनो कुमार गौड़ रा.कैवरपदा सी.उ.मा.वि. उदयपुर

3- श्री तेजीसंह मेहता, रा.कैवरपदा सी. उ.मा.वि., उदयपुर

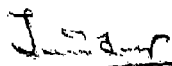
4- श्री कृषिराज तिवारी, एस.आई.ई.आर.टी.


जिला शिक्षा अधिकारी
छात्र संस्थाएं
शिक्षा विभाग, उदयपुर [राज.]

क्रमांक: जिशिअ/छात्र संस्था/एससीआरटी/जनजाति प्रोजेक्ट/88-89/
दिनांक 6-12-1988

प्रतिलिपि:-

- 1- डॉ. एम.के. रैना, मेम्बर सैक्रेटरी, एरोक एस.सी.आर.टी. श्री अरविन्दो मार्ग नई दिल्ली को सूचनार्थ प्रेषित है।
- 2- निदेशक एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर को भेजकर निवेदन है कि सम्बंधित शोधकर्ता को समय पर कार्यमुक्त करने का श्रम करावें।
- 3- श्रीमती जिला शिक्षा अधिकारी छात्रा संस्था, उदयपुर को भेजकर निवेदन है कि सम्बंधित शोधकर्ता को दत्त संकलन हेतु कार्यमुक्त करावें।
- 4- श्री विकास अधिकारी/प्र.अ./उ.जि.शि.अ. को भेजकर लेख है कि अनुसंधान दल को पूर्ण सहयोग प्रदान करावें। तथा इनके ठहरने की व्यवस्था करावें।
- 5- श्री सम्बंधित प्र.अ./प्र.अध्यक्षिका को भेजकर लेख है कि शोधकर्ता को दत्त संकलन हेतु कार्यमुक्त करें।
- 6- सम्बंधित श्री ----- शोधकर्ता को भेजकर लेख है कि एक दिन पूर्व प्रायोजना प्रभारी से मिलते तथा समय पर कार्य-मुक्त होकर पहुँचें।
- 7- कार्यालय पत्रावली।


जिला शिक्षा अधिकारी
छात्र संस्थाएं
शिक्षा विभाग, उदयपुर [राज.]

कार्यालय जिला शिक्षा अधिकारी छात्र संस्थान, उदयपुर राज. १

दिनांक: 6-12-1988

श्रीमान/श्रीमती _____

विषय:- एन.सी.ई.आर.टी नई दिल्ली के प्रोजेक्ट के दत्त संकलन हेतु ।

प्रति :- एन.सी.ई.आर.टी के पत्र क्रमांक एप-2-5/88/ई.आर.आई.सी/3216 दिनांक 4 अगस्त, 1988 के क्रम में ।

उपरोक्त विषयान्तर्गत लेख हैं कि एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा राजकीय कैम्पसदा उच्च माध्यमिक विद्यालय, उदयपुर को शोध प्रयोजना " To study the special facilities (incentives) and Educational Development of Tribal Students and Attitude of Society towards them." स्वीकृत हुई हैं। ऐसी प्रयोजना अपने जिले में किसी विद्यालय को पहली बार स्वीकृत हुई हैं। अतः इसे समय पर पूर्ण करना आवश्यक है ।

इस कार्य के दत्त संकलन हेतु आपको आपके नाम के आगे अंकित प्रचालित समिति में देय दिनांकों के मध्य निदेशक एवं उपनिदेशक के निर्देशानुसार कार्य करना है । इस कार्य हेतु आप आपके सह संयोजक से व्यक्तिगत सम्पर्क स्थापित कर कार्य को अच्छी तरह समझले ताकि दत्त संकलन में आपको देय कार्य करने में कीठनाई न हो । प्रत्येक दल संयोजक अपना मार्ग दर्शन प्रयोजना प्रभारी, निदेशक तथा उप निदेशक से सम्पर्क कर प्राप्त करें ।

सभी शोधकर्ता दत्त संकलन हेतु निर्धारित दिनांक को विद्यालयों में समय पर पहुँच जावे ।

इस कार्य हेतु एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा निर्धारित बजट में से यात्रा व्यय एवं दैनिक भत्ता रा. कैम्पसदा उ.मा.वि. द्वारा चुकाया जावेगा । कार्य-क्रम तथा दल इस प्रकार है :-

कार्यक्रम एवं कार्यकारी दल

कन्ट्रोलर	:	नसीरुद्दीन सिद्दीकी जिला शिक्षा अधिकारी, उदयपुर
निदेशक	:	श्री हरिशचन्द्र जोशी पु.अ. रा. कैम्पसदा सीनियर उ.मा.वि., उदयपुर
उपनिदेशक	:	श्री सज्जनसिंह मेहता स.पु.अ. रा. कैम्पसदा सीनियर उ.मा.वि., उदयपुर
प्रयोजना प्रभारी	:	श्री अश्विनी कुमार गौड़ पी.आई. रा. कैम्पसदा सीनियर उ.मा.वि., उदयपुर

क्षेत्रवार दल पंचायत समिति

1- गिरवा सर्व झाड़ोल

प्रभारी

- 1- श्रीमती शारदा पाण्डे उम जिला शिक्षा अधिकारी, उदयपुर
- 2- श्रीमती जेनब बानु अध्यापक रा.कैवरपदा सोनियर उ.मा.वि., उदयपुर
- 3- श्री नारायणलाल पालीवाल का.स. रा.कैवरपदा सोनियर उ.मा.वि., उदयपुर
- 4- श्री रविन्द्र सिंह बक्षी व.अ. रा.कैवरपदा सोनियर उ.मा.वि., उदयपुर
- 5- श्रीमती संतोष रानी माधुर व्याख्याता रा.कैवरपदा सोनियर उ.मा.वि., उदयपुर

दि. 12 से 14 दिसम्बर, 88

2- सलूमबर सर्व धरियावद

प्रभारी

- 1- श्री रमेशचन्द्र सुखवाल व्याख्याता रा.कैवरपदा सोनियर उ.मा.वि. उदयपुर
- 2- श्री शंकरलाल नरसिंहपुरा प्र.अ. रा.मा.वि. मुगना
- 3- चैनसिंह खिमसरा व.अ. रा.कैवरपदा सोनियर उ.मा.वि., उदयपुर
- 4- श्री शान्तिनाथ चित्तौड़ा व.अ. रा.कैवरपदा सोनियर उ.मा.वि., उदयपुर

15 से 17 दिसम्बर, 88

3- खरवाहा सर्व सराहा

प्रभारी

- 1- श्री जगदीशचन्द्र व्यास प्र.अ. रा.मा.वि. सवोनाखेडा
- 2- श्री पन्नालाल नागदा मा.वि. झाड़ोल [सराहा]
- 3- श्री महावीर प्रसाद रा.गु.गो.सोनियर उ.मा.वि., उदयपुर
- 4- श्री राजेन्द्र कुमार मोह, मा.वि. खेमली

12 से 14 दिसम्बर, 88

4- कोटहा

प्रभारी

- 1- श्री भंवरलाल नागदा, पतह सोनियर उ.मा.वि., उदयपुर
- 2- श्री भोलेश्वरनाथ सनाद व्याख्याता रा.कैवरपदा सोनियर उ.मा.वि. उदयपुर

15 से 17 दिसम्बर, 88

दल समिति

- 1- श्री भगवतीलाल चौबोसा
- 2- श्री राजेन्द्र सिंह चौहान जि.शिक्षा.अ. कार्यालय, उदयपुर

विभिन्न पंचायत समितियों में विधालय कार्य का विवरणों रिकार्डिंग कार्यक्रम 12 से 17 दिसम्बर, 1988 तक :-

प्रभारी 1- श्री श्रीमती कुमार मोह, रा.कैवरपदा सो. उ.मा.वि. उदयपुर

3- श्री तेजसिंह मेहता, रा.कैवरपदा सी. उ.मा.वि., उदयपुर.

4- श्री अण्णिराज तिवारी, एस.आई.ई.आर.टी.

जिला शिक्षा अधिकारी

छात्र संस्थाएं

शिक्षा विभाग, उदयपुर राज.

क्रमांक: जि.शिक्षा/छात्र संस्था/एससीआरटी/जनजाति प्रोजेक्ट/88-89/

दिनांक 6-12-1988

प्रतिनिधि:-

- 1- डा. एम.के. रैना, मेम्बर सैक्टर, एरोक एस.सी.आर.टी. श्री अरविन्दो मार्ग नई दिल्ली को सूचनार्थ प्रेषित है।
- 2- निदेशक एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर को भेजकर निवेदन है कि सम्बंधित शोधकर्ता को समय पर कार्यमुक्त करने का श्रम करावें।
- 3- श्रीमती जिला शिक्षा अधिकारी छात्रा संस्था, उदयपुर को भेजकर निवेदन है कि सम्बंधित शोधकर्ता को दत्त संकलन हेतु कार्यमुक्त करावें।
- 4- श्री विकास अधिकारी/पु.अ./उ.जि.शि.अ. को भेजकर लेख है कि अनुसंधान दत्त को पूर्ण सहयोग प्रदान करावें। तथा इनके ठहरने की व्यवस्था करावें।
- 5- श्री सम्बंधित पु.अ./पु.अध्यक्षिका को भेजकर लेख है कि शोधकर्ता को दत्त संकलन हेतु कार्यमुक्त करें।
- 6- सम्बंधित श्री ----- शोधकर्ता को भेजकर लेख है कि एक दिन पूर्व प्रायोजना प्रभारी से मिलते तथा समय पर कार्य-मुक्त होकर पहुँचें।
- 7- कार्यालय पत्रावली।